Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी लोक कथाएं

(हिन्दी अनुवाद)

सम्पादक
श्यामलाल शर्मा

ललितकला, संस्कृति तथा साहित्य अकादमी
जम्मू कश्मीर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी लोक कथाएं

(हिन्दी अनुवाद)

सम्पादक

श्यामलाल शर्मा

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 437
Dated 3-9-09

ललितकला, संस्कृति तथा साहित्य अकादमी जम्मू कश्मीर, जम्मू ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक
सचिव
ललितकला, संस्कृति तथा साहित्य
अकादमी जम्मू कश्मीर, जम्मू

१९७२
प्रथम संस्करण ५०० : मूल्य ३.७५ रुपये
© अकादमी

मुद्रक
स्पेस-एज प्रिण्टर्ज़,
म्युनिसिपल मार्किट, महेशी गेट, जम्मू

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

संख्या	कहानी	पृष्ठ
१.	हीमाल नागराय	१
२.	सन-कीसर	१४
३.	कन कीटर	२३
४.	दो भाई	२८
५.	व्यापारी का बेटा	३५
६.	मछुआ और तोता	४३
७.	चिड़िया और चिड़िया के बच्चे	५०
८.	ख्वाजा साहिब का कुत्ता	५९
९.	बादशाह का तोता	६२
१०.	बादशाह और बाज़	६६
११.	जैसा करोगे वैसा भरोगे	६९
१२.	जंगली राज	७५
१३.	जैसी करनी वैसी भरनी	८२
१४.	तीन शर्तों वाली राजकुमारी	८७
१५.	ख्वाजा नूर	९८

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आमुख

कुछ कश्मीरी लोक कथाओं का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है।

लोक साहित्य की सांझी 'वरासत' ऐसी अद्भुत थाती है कि संयुक्त परिवार की प्रथा की भान्ति व्यक्ति को 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से बांध कर केवल संसार के मनुष्यों से ही नहीं पशु और पक्षियों से भी मानव का सम्बन्ध स्थापित करा देती है। मनुष्य के सुख दुःख में, हर्ष शोक में बाधा सुविधा में मानव कल्पना ने प्रत्येक का सहयोग लेने का प्रयत्न किया है। कहीं पर धर्म का अधार लेकर, कहीं नैतिकता और सामाजिकता की भित्ति पर और कहीं केवल स्वस्थ मनोरञ्जन के लिये ही लोक कथाओं का निर्माण हुआ है। पारिवारिक जीवन की समस्याओं को लेकर जिनमें माता पिता के प्रति भक्ति, भाई भाई और बहन बहन तथा बहन भाई का प्रेम, पति पत्नी के पारस्परिक राग अनुराग, विमाता और प्रथम सन्तान का वैषम्य तथा परिवार में काम करने वाले नौकर तथा आस पड़ोस के सदस्यों का

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सहयोग आदि, लोक कथाओं में ऐसे सजीव और सुन्दर वर्णन मिलते हैं कि व्यक्ति उन अज्ञात कथाकारों के आगे नतमस्तक हो जाता है। इन कथाकारों ने अपने मन्तव्य और भाव की पुष्टि के लिये दिव्य तथा मानवेतर क्षेत्रों से भी सहायता ली है। कहीं देवी देवता, यक्ष दैत्य भूत-प्रेत भी मनुष्य की समस्याओं को सुलझाने में उसकी सहायता करते हैं। परन्तु इस बात का विशेष ध्यान रहता है कि इस मानवेतर सहायता से किसी नैतिकता और सत्य को पुष्टि और बल मिलता हो।

पारिवारिक और सामाजिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों का भी सजीव चित्रण प्राप्त होता है और उन बाधाओं तथा विपत्तियों का निराकरण भी कथा की समाप्ति तक हो जाता है और कथा सुनने के पश्चात व्यक्ति हल्का और प्रसन्न चित्त महसूस करता है।

कश्मीरी लोक कथाओं के इस छोटे से संग्रह में आपको उन तथ्यों पर आधारित कथाएं मिलेंगी। इन कथाओं की कई बातें आपको अपने स्थानों में प्रचलित मिलेंगी। और आप को अपनी स्थानीय ही लगेगी। लोक कथाओं की यही सुन्दरता है कि ये सब की सांझी विरासत हैं।

डोगरी लोक कथाओं के हिन्दी अनुवाद के उपरान्त कश्मीरी लोक कथाओं का राष्ट्र भाषा में यह अनुवाद साहित्य स्मृद्धि की वल्लरी में सुन्दर पुष्प की अभिवृद्धि होगी।

—श्याम लाल शर्मा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी लोक कथाएं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

भगवान हमारा यह दारिद्रय काट।' सदाराम ने उत्तर दिया—"खाली हाथ कहां जाऊंगा ? क्या करूंगा ?" पत्नी बोली—"जिस चीज़ की आप को आवश्यकता हो, वह मैं देती हूँ। आप चले ही जायें।" तो पत्नी ने उसे मुट्ठी भर सत्तू सेर भर चावल तथा पाव भर मूंग दिया। सदाराम यात्रा पर निकल पड़ा। चलते-चलते वह 'तारबल' पहुँचा, यह भी शुपयां का एक गांव है। ज्यों ही वह इस गांव में पहुँचा, वर्षा होने लगी। ज़ोर की वर्षा देख कर सदाराम रोते हुये कहता है—

> "तारबल से गुज़रते हुये ज़ोर का पानी बरसने लगा, मेरे प्रभु ! चलते चलते बहुत थक गया हूं। शरीर टूटने लगा है। कांगड़ी में आग अब नहीं रही। प्रभु मेरे, कांगड़ी में अब कोई आंच नहीं रही—मैं क्या करूं ? किधर जाऊं ?"

सदाराम का एक मित्र इसी गांव में रहता था। जी में ठाना कि अब उसी के हां जायेगा। मित्र का नाम था गोविंद राम। सदाराम ने समय समय पर उस मित्र की सहायता की थी। तो चला वह अपने मित्र के घर की ओर। मित्र उसे रास्ते में ही मिला। वह उस समय हल जोत रहा था। गोविंद राम की जो सदाराम पर दृष्टि पड़ी, देखा वह फटे चीथड़े पहने था। जी ही जी में सोचा—"हाय, बैल उसे देख मारे डर के कहीं भाग न जायें।" तो क्या किया ? गोविंद राम ने बैल दूसरी ओर फेर लिये। इतने में गृहिणी उस केलिये खाना ले के आगई। गोविंद राम पीठ फेर के बैठ गया और भात की थाली चुपके से चट कर गया। उसकी पत्नी अभ्यागत को घूर घूर देखने लगी। आखिर पहचान ही लिया। पति से पूछा—"क्या यह व्यक्ति सदाराम तो नहीं ?" पति बोला—"इससे कोई बात न कर, यह बैल मारे डर के भाग जायेंगे।" पत्नी कहती है—"क्या भूल गये वे दिन, जब यही हमारी सहायता किया करता था।" इधर सदाराम एक एक कदम उन की ओर आता रहा। उन की सारी बातें साफ-साफ सुनता रहा। उनसे कहने लगा—"मित्र गोविंद राम, तुम भूल क्यों गये वह बीती बातें ? वह बीता समय क्यों तुम्हें याद नहीं ?"

आखिर गोविन्दराम की पत्नी सदाराम की बांह पकड़ कर उसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

घर ले चली। इस समय घर में खाने को कुछ नहीं था। तो सदाराम के लिये खीर पकाने लगी। सदाराम खम्भे के सहारे टेक लगाये बैठ गया। गोविंद राम की गृहिणी के पास मोतियों का हार था। जो उसने सदाराम के हाथ दिया, और बोली—"ज़रा ये मोती धागे में पिरोयें।" खम्भे पर तस्वीर लगी थी। इसी आन तस्वीर में जान आई, और वह मोतियों का हार निगल गई। सदाराम माथा पीटने लगा। गोविंदराम की पत्नी खीर थाली में डाल कर ठंडा करने लगी। इतने में कहीं से कोई पक्षी उड़ता आया और खीर को झूठा कर गया। गृह-स्वामिनी ने जूठी खीर बाहर फैंक दी और फिर से बनाने लगी। पतीला चूल्हे पर चढ़ा आई जो सदाराम के समीप, देखा वह चिन्ताकुल माथा पीट रहा था। कारण पूछा। उत्तर मिला—"क्या कहूं, भाभी, यह तस्वीर आपका दिया मोतियों का हार खा गई। "गृह-स्वामिनी ने मन ही मन सोचा "बेचारे पर विपदा टूटी है। वैसे तो हम इस के ऋणी ही हैं। चलो इसी बहाने कुछ नहीं तो हार ले गया।"

बोली, "बला मारिये जी! इस हार को।" दिन पर दिन बीतते चले। एक दिन उससे बोली, देवर जी, ज़रा जायें और बल ले आयें। और लौटते साग-सब्ज़ी और लकड़ी भी लेते आयें।" सदाराम ने हां कही। वह यही सोचकर सदाराम से बाज़ार जाने को बोली थी कि वहां उसे साग-सब्ज़ी और लकड़ियां मिलने की नहीं। मारे डर के वहीं से भाग जायेगा। तो चला वह, अर्थात् सदाराम, हल जोतने। वहां क्या हुआ? कि वे दोनों बैल आपस में सींग लड़ाने लगे। हल के टुकड़े-टुकड़े हो गये। सदाराम ने क्या किया? उसने हल के टुकड़े लकड़ियां मान इकट्ठा किये और लौट आया। उसे लौट आया देख गोविंदराम की पत्नी उसे वहां से चला जाने को कहती है। कपड़े बदलाती है, बाल कटवाती है और साथ ले पोटली में बन्धा सत्तू दे कर करती है सदाराम को विदा। तो चल पड़ा सदाराम वहां से। राह चलते सत्तू खाता जाता और रास्ता नापता जाता। घर की ओर नहीं। अपितु किसी दूसरी दिशा की तरफ। चलते चलते जो किसी स्थान पर पहुंचा। वहां एक स्रोत देखता है। स्रोत के साथ ही चिनार का वृक्ष था। यह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नागराय का स्रोत था। सदाराम इस स्रोत के किनारे चिनार के नीचे सुस्ताने बैठ गया। थैली एक ओर धर दी। आन ही आन में उसे नींद ने आ घेरा। और जब आंख खुली, देखता है कोई सांप पास धरी थैली में घुसा जा रहा था तुरंत विचार आया कि पत्नी समय-समय पर परेशान करती रहती है। अबके तो इसी सांप से डसवाता हूँ। थैली के अन्दर सांप और थैली का मुंह बन्द। लकुटिया में लटका कर घर की ओर लौट चला। और जब घर के द्वार पर पहुंचा तो आवाज़ दी—"अरी ओ भागवान्। ज़रा जल्दी से ठाकुर-द्वारे को लीप-पोत ले। लक्ष्मी आई है, लक्ष्मी।" सदाराम की पत्नी के कान में जब पति की आवाज गई। उसने खिड़की से झांका। देखा, सदा राम के कांधे पर भरी पूरी थैली। आखिर दौड़ी चली आई। और पति से थैली ली, चली गई कमरे में थली लिये। वह अन्दर और सदा राम ने बाहर से कमरे में सांकल लगा ली। यही सोचा—चलो, जब यह थैली का मुंह खोलेगी। सांप निकलेगा, उसे डङ्क मारेगा और वह जन्म भर की परेशानी से मुक्त हो जायेगा। कमरे के अन्दर जो सदाराम की पत्नी ने थेली का मुंह खोला। थैली में से राजकुमार निकलता है। सारा कमरा प्रकाशमय हो उठा। बुलाने लगी सदाराम को।

"पति देव, लौट आइये! लक्ष्मी घर आई है। वारी जाऊं इसके। मैं इसे पालने झुलाऊंगी।"

सदाराम उत्तर देता है :—

"नहीं लौट आता मैं। नाग डसता है तो डसे तुम्हें। मैं एक नज़र देखने नहीं लौटता।"

कमरे में से बच्चे के रोने की आवाज़ आने लगी।

सदाराम आश्चर्य में पड़ गया। आखिर यह शिशु-रुदन कैसा? लौट आया तो क्या देखता है? टेढ़े उलटे पड़े भांडे-बर्तन ढंग से सजे-सजाये मिले। पत्नी को स्वर्गिक कपड़ों में पाया। तो वह इस बालक को गोद में उठा लेता है। विश्वास ही नहीं होता है उसे। प्रभु ने उसे 'नाग' अर्थात् स्रोत के किनारे उस पर दया की थी। इस लिये बालक का नाम रखा—नागराय।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

समय बीतता गया। नागराय बड़ा होता चला। एक दिन नागराय सदाराम से कहता है--"मुंह बोले पिता, दूध दे मुझे।" सदाराम ने उत्तर दिया--"मुंह बोला पिता तेरे बारी बेटे। वह भी समय था जब मेरे घर में बारह सौ गायें थीं। पर आज एक भी नहीं है। दूध लाऊं तो कहां से लाऊं ?" नागराय बोला--"उठाइये, इन बर्तनों के ढक्कन।" सदाराम ने भांडे-बर्तनों के ढक्कन उठाये कि क्या देखता है, सभी पात्र दूध से भरे पड़े थे। अगले ही दिन उसे महाराज का बुलावा आया। सदाराम राजदरबार में गया। जब वहां से लौटा तो नागराय उससे कहने लगा--"पिता जी, कोई ऐसा स्रोत दिखायें जहां मैं पूजा किया करूंगा।" सदाराम बोला--"बेटे, यहां केवल एक ही स्रोत है। वह स्रोत 'हीमाल' का है। हीमाल बलावीर राजा की ज्येष्ठ पुत्री है। उसके उस स्रोत तक जाने का कोई रास्ता नहीं।" नागराय ने दिखाने को कहा। तो सदाराम नागराय को साथ लेकर चला। वहां पहुंचे तो नागराय को स्रोत पर जाने का कोई रस्ता नहीं दीखा। तो लगा इधर-उधर देखने कि कहीं से अन्दर जाने का रास्ता मिले। आखिर एक छोटी सी तंग नाली पर नज़र पड़ी। सोते का पानी वहीं से बहता था 'रास्ता तो मिल गया'। ऐसा सोच नागराय ने सदाराम को विदा किया। बोला, "मेरे मुंह बोले बाबा, अब आप घर चले जायें। मैं आप घर चला आऊंगा।" सदाराम घर लौट आया।

उधर नागराय ने सांप का रूप धारण किया और उसी तंग नाली के रास्ते से स्रोत में उतरा, स्नान करने के लिये। सारी पुष्प-वाटिका खिल उठी। स्रोत उफनाया। नहा-धो के नागराय फिर उसी तंग नाली से बाहर निकला। अगले दिन प्रातः जब हीमाल वाटिका में विहार करने हेतु निकली, देखा, स्रोत और सुन्दर और आकर्षक लग रहा था, वाटिका खिल उठी थी। भगवान का लाख-लाख आभार प्रकट करने लगी। मुंह बोली मां से पूछती है, मुँह बोली मां, वह कहां गया ?" तो दोनों अर्थात् हीमाल और उसकी मुंह बोली मां ताक में बैठ गई कि नागराय कब आता है ? दूसरे दिन प्रातः नागराय फिर चला आया और उतरा स्रोत में। नहा-धो कर, पूजा-जाप कर निकला और चला गया। हीमाल की मुँह बोली

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मां तुरन्त उसके पीछे हो लेती है। और इधर हीमाल वास्ता देती है। गाती है।

हीमाल की मुंह बोली मां जब नागराय के पीछे पीछे जाती है। देखती है कि नागराय सदाराम के घर में घुस गया। वह घर का द्वार मुहर-बन्द कर देती है और उलटे पांव लौट आई। हीमाल के पास जब पहुँची, बोली, "वह सदाराम के घर गया, बेटी।" हीमाल राजा को कहलवाती कि वह विवाह करना चाहती है। राजा पूछता है कि उसे किस घर में जाने की इच्छा है? हीमाल कहती है, "सदाराम के घर में।" राजा बहुत प्रसन्न हुआ, यह समझ, चलो इसी बहाने अन्य छः बेटियों का भी विवाह रचा जायेगा। तो वह सदाराम को बुलावा भेजता है। सदाराम राजा से मिलने गया। राजा उससे यह इच्छा कह देता है कि हम चाहते हैं कि हम एक दूसरे के सम्बन्धी हो जायें।

सदराम बोला, "महाराज, न मेरा कोई बेटा ही है, न बेटी ही कोई।" जब राजा से इतनी बात कह कर, सदाराम घर लौट आया। घर में पत्नी से सारी वार्ता कहने लगा। नागराय उनकी बातें सुन रहा था। बोला, "मेरे मुंह बोले पिता, मैं जो आप का पुत्र हूं। आप क्यों ऐसा कहते हैं कि आप निःसंतान हैं।" सदाराम संकेत भांप जाता है। तो विवाह होना निश्चित होता है। नागराय उससे पूछता है, "क्या आप किसी को इस शादी पर बुलाना चाहते हैं?" सदाराम विचार करता है कि "जिस किसी को न्योता दूंगा? वही सोचेगा: यह दारिद्रीय तो था ही, लो हमें भी वैसा ही कर देना चाहता है।" इस कारण वह किसी से यह बात ही नहीं छेड़ता है। शादी के दिन आगये। शेष छः राजकुमारियों को नाना प्रकार की वस्तुएं भेंट में आती हैं। वे हीमाल को उल्हाने देने लगती हैं। "क्या किया हीमाल? यह किस से विवाह करने की ठानी? उस निर्धन से तुम्हें क्या मिलने का?"

खैर, मेंहदीरात आगई। शेष छः बहिनों को उनके ससुराल मे मेंहदी आगई। हीमाल के लिये कोई मेंहदी लेकर नहीं आया। बस क्या हुआ? पल भर नहीं बीता था कि उसके लिये स्वर्ग से मेंहदी आई। उसकी बहनें जब हीमाल की शोख मेंहदीं देखने लगती

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हैं। वे आश्चर्य में पड़ जाती हैं। अपने अपने ससुराल से आई मेंहदी वे वहीं छोड़ हीमाल की मेंहदी रचने बैठती हैं। अगले दिन बारातें आती हैं। छः बारातें और सातवीं ? हीमाल का दूल्हा 'नागराय' कहीं नज़र नहीं आता। बहनें अब के फिर उस पर फबतियां कसने लगती हैं। उधर नागराय अपने दो मुंह बोले भाइयों को चुपके से हीमाल के घर भेजता है। यह जानने के लिये कि लोग क्या क्या बातें करते हैं ? वे रूप बदल कर आगए और सुनने लगे हीमाल पर उस की छः बहनें क्या फबतियां कस रही थीं। "वह सदाराम ? जो फूस की झोंपड़ी में रहता है ? उसी के घर तुम्हें दुल्हन बन के जाना है ?"

मुंह-बोले भाई लौट आए और उन्होंने सारी बातें नागराय को बता दीं। नागराय उन्हें कहता है, "तुम लोग जाओ, और स्वर्ग से सभी सामान, बड़े प्रासाद, बर्तन सभी कुछ ले आओ।" मुंह-बोले भाई उसे कहते हैं, "पहले तो हमें कुछ खाने को दें। हमें भूख लगी है।" नागराय उन्हें उत्तर देता है, "तुम जाओ और देखो राजा के घर क्या कुछ पकाया गया है ? जो होगा, खा के आजाओ।"

राजा ने सात बेटियों की सात बरातों के लिये स्वादिष्ट पकवान बनवाये थे। दोनों मुंह-बोले भाइयों ने उन सभी पकवानों को चट कर लिया। राजा को जब यह बात मालूम हुई, वह बहुत ही परेशान हो गया, सोचने लगा, "अब क्या किया जाये ?" इधर नागराय के दोनों मुंह-बोले भाई स्वर्ग से सभी सामान आदि लाते हैं और फिर सदाराम के घर से नागराय की बारात चलती है। स्वर्ग के भांड और गवैइये आगे-आगे, और बारात राज-महल पहुँचती है। सभी यह अपूर्व और अलौकिक बारात देख कर अचरज में पड़ते हैं। नागराय की सज-धज देखकर शेष छः दुल्हे उसी का आधिपत्य स्वीकार करते हैं। नागराय राजा को बुला लाता है और कहता है, "अब से लड़की वाला मैं रहा। मैं स्वयं इन छः की शादी का खासा प्रबन्ध करूंगा।" तो नागराय ने सभी स्वर्गिक प्रबन्ध कर कराके बरातियों को एक कुसुमित वाटिका में खाने पर बिठाया। चिलमची को आज्ञा दी, वह एक एक करके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सभी के सामने उपस्थित होती है। उन्हें हाथ साफ करवाती है। देगची को आज्ञा देता है, वह प्रत्येक को मुंह मांगा पकवान खिलाती है। खैर, सभी बराती खा-पी चुकने पर विदा किये जाते हैं। छहों बहनों का विवाह हो जाता है। दुल्हे और दुल्हनों को विदा कहने के उपरान्त नागराय, हीमाल के स्रोत के वहीं पास में एक स्वर्गिक प्रासाद खड़ा करवा के, उसी में रहने लगा।

कहने वाला कहता है। तल-पाताल में नागराय की सात पत्नियां थीं। वह उसे ढूंढ रही थीं। कोई अता-पता ही नहीं लगता था उसका। तो एक दिन नागराय की पटरानी परी धरती-तल पर आगई। घूमते-घूमते जब वह उस स्थान पर पहुंच गई, और वह भव्य-प्रसाद देखा। उसने पहचान लिया, 'हो न हो यह उसी का प्रसाद है।' लौट के फिर तल-पाताल चली गई। वहां से एक गुलदस्ता लेकर चली आई। टेर लगाती हैं, "स्वर्ग के फूल लेलो।" हीमाल ने जो यह फूल देखे, बहुत प्रसन्न हो गई। सोचने लगी, 'नागराय यह फूल देख कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे' तो लेलिये मोल वे फूल। उधर जब नागराय दरबार से लौटा, उसने ये फूल पहचान लिये। झट से उठाया और इन फूलों को छिन्न भिन्न कर डाला। बोला, "फिर ऐसे फूल न लेना।" हीमाल बहुत खिन्न हो गई। अगले दिन नागराय की पटरानी परी प्याले लेकर आती है। टेर लगाती है, "स्वर्ग के प्याले ले लो।" हीमाल का मन, प्याले देख कर ललचाया। उससे रहा न गया, तो मोल ही लिये। नागराय जब लौट आया, तो प्याले देख सारी बात भांप गया। उसने सभी प्याले पटक-पटक कर तोड़ डाले। बोला, "मैंने तुम्हें कहा था ना, ये चीजें न लेना?" हीमाल सुन के फिर खिन्न होगई। अब से वह परी हर दिन आया करती और हिमाल उसके साथ मीठी-मीठी बातों में लग जाया करती। बातों-बातों में हिमाल बहुत सारी बाते कह देती। तीसरे दिन जो परी आई, उसने जूतियां साथ लाई थीं। किन्तु जोड़े के बदले एक ही जूती थी। टेर लगाई, "जूती ले लो। स्वर्ग में बनी जूती लेलो।" हीमाल जो बाहर आती है तो वहां जोड़े के बदले जूती का एक ही पांव पाती है। इस परी ने फटा हुआ 'फिरन' पहन रखा था। हीमाल ने पूछा, "इस जूती का जोड़ा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कहां है ?" परी बोली, "मेरे अब्बा ने जो मेरा ब्याह किया। मेरे पति को घर-दामाद बना के रखा।" उसी मेरे पति ने यह जूती बनाई है। एक पांव बना के, दूसरा बना रहा था कि घर से ही भाग गया। उसका नाम है 'नागराय'। वास्तव में उसका नाम है, 'नानू मोची'। वहां, मेरे गांव में सभी उसे खोज रहे हैं।

हीमाल बोला, "तू यह क्या कह रही है ? वह तो राजकुमार है, राजा है। वह मेरा पति है। परी ने उत्तर दिया, "हाय राम, यह तूने क्या किया है ? किस के साथ अपना पल्लू बांध लिया है ? वह नाग-जात का है, नागजात का।" हीमाल परेशान होगई, बोली, "हाय, अब मैं क्या करूं ?" परी कहती है, "तू धीरज रख मेरी बहन, वह जब लौट आयेगा ना तो कहना, वह अपनी जात दिखाये। पहले तो उस नहलाना-धुलाना। फिर दूध भरे कुंड में उसे उतार देना।" उधर नागराय जब घर आया। हीमाल ने किवाड़ बन्द किये। नागराय ने कारण पूछा। वह बोली, "मुझे अपनी जात दिखाइये।" नागराय बात को समझ गया। बोला, "कुण्डी खोल दे, री मूरख।" उत्तर में वह बोली, "जात दिखाओ, मेरे नागराय।" नागराय ने बहुत समझाया किन्तु हीमाल कहां मानने-वाली थी। आखिर नागराय अपनी जात दिखाना मान गया। तो हीमाल उसे पहले नहलाती धुलाती है। फिर दूध के कुण्ड में उतारती है। नागराय कुण्ड में उतरा कि उस की पाताल-लोक की रानियां उसके पांव में रस्सी डाल, नीचे ही नीचे खेंचती जाती हैं। नागराय कुण्ड में से ही हीमाल को दुहाइयां देने लगता है, "हीमाल, मेरे पांव में रस्सियां डाली गई। तुम्हारा मीत अब तुम्हें मिलने का नहीं है।"

किन्तु हीमाल क्यों मानने लगी ? डूबते-डूबते अब नागराय का सिर ही केवल दूध से बाहर रहता है। वह फिर दुहाई पर दुहाई देने लगता है, "मेरी मानो तो हीमाल, अभी समय है। बाद को पछताना पड़ेगा।" हीमाल फिर भी न माने। वह बस एक ही बात दुहराये जा रही थी, "जो हो सो, मुझे अपनी जात दिखाओ।" उस ने अपनी ज़िद्द न छोड़ी। इतने में खामोशी सी छा गई। हीमाल सोचने लगी, "भला यह खामोशी कैसी ? नागराय जो अभी बातें कर रहा था, वह कहां गया ?" किन्तु नागराय वहां

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
नहीं, कहीं और पहुंच गया था। अब क्या करूं, कहां जाऊं किस से कहूँ ? हीमाल विलाप करने लगी। हाथ मलने लगी। सोचा बहनों के पास चली जाये। किन्तु वह फबतियां कसतीं। जो पास था, सभी दान कर दिया। आखिर अन्त में एक बूढ़ा दान लेने आगया। उसके साथ उस की बेटी भी थी। दूर से आये थे और रात भर स्रोत के समीप ठहरे थे। नागराय ने जो कुछ किया था, वह सारा उसने देख लिया था। खा-पीकर नागराय थाली भर भात हीमाल के नाम से उस स्रोत के किनारे रख छोड़ता था। साथ ही यह कसम दिलाता था कि जो कोई यह भात खायेगा, वह खा पी कर थाली धो-धा कर इसी स्रोत में डाल दे।

इधर वह बूढ़ा जब हीमाल से भिक्षा मांगने गया, हीमाल बोली बूढ़े कोई कहानी सुना। बूढ़ा बोला बेटी मेरे पास कथा-कहानियां सुनाने को कहां ? किन्तु बूढ़े की बेटी अपने पिता से कहती है कि अब्बा सुनाओ ना इसे वह कल की बात। बूढ़ा बात टालता है। किन्तु बेटी उसे सुनाने पर विवश करती है। तो बूढ़ा हीमाल को स्रोत पर हुई सारी घटना कह सुनाता है। सारी वार्ता सुन कर हीमाल उस बूढ़े को अगले रविवार तक वहीं रुकाये रखती है। अगला रविवार जब आया तो हीमाल बूढ़े के साथ स्रोत पर जाती है। किन्तु बूढ़ा उसे यह समझा देता है कि जब वह कहे तब वह उस स्रोत पर जाये। आखिर निश्चित समय आ जाता है। सभी सामग्री सभी सामान स्रोत से ऊपर आजाता है। गवैय्ये ख्वांचे-वाले इत्यादि। खा-पी कर गायन की सभा लगती है। और उस के उपरान्त सभी सारे स्रोत के रास्ते नीचे उतरते हैं। नागराय को उतरना ही होता है। कि वह रोज की भांति भात की थाली स्रोत के किनारे रख छोड़ता है।

बूढ़ा तुरन्त हीमाल को इशारा करता है। वह जल्दी से जा कर छुपके नागराय को गिरेबां से पकड़ लेती है। नागराय बोला, "देव हो, जिन हो कि मनुष्य जात हो ! छोड़ दो मुझे। मुझे तल पाताल जाना है। देर हुई जा रही है मुझे।" हीमाल कहती है, "मैं देव या जिन नहीं, हीमाल हूँ।" नागराय मुड़ के कहता है, "मेरी धरोहर तुम्हारे पास है। रूमाल अंगूठी। वह मुझे दिखाओ तो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मानू मैं कि तुम हीमाल हो।" हीमाल ने तुरन्त दोनों चीजें दिखाईं। नागराय विवश हुआ, उसने उसे श्राप दिया और कंकरी बना डाला। जेब में डाल, साथ ले गया तल-पाताल। तो एक दिन ऐसा हुआ कि नागराय की रानियों को, जो परियां थीं, मानव-बू आने लगी। वे पति से कहने लगीं, "यह बू तो आप को भी आ रही है।" नागराय मानने से बिल्कुल ही इन्कार करता है। किन्तु वे कहां मानने वाली थीं। उन्हों ने नागराय को सचाई खोलने पर विवश ही कर दिया। नागराय ने मंत्र फूका और हीमाल को शाप से मुक्त किया। रानियां बोलीं, यह भी हमारी भांति काम काज करे। तो एक दिन हीमाल को भी घर कर काम-काज करने की बारी आती है। खाना पकाती है। और परियों के बच्चों के लिये दूध गरम करती है। यह दूध उसने ठंडा होने के लिये एक ओर रख छोड़ा होता है कि इतने में बच्चे कहीं से आकर पीने बैठते हैं। दूध गरम था अतः पीते ही जल गये। परियां क्रोधित हो गईं, उन्होंने भिड़ों का रूप धारण किया और लगीं हीमाल को डंक मारने।

हीमाल से ये दंशन सहे न गये। उसने प्राण त्याग दिये। उधर नागराय जब घर आता है। वह हीमाल की यह दशा देख कर रोने-कलपने लगता है। सभी परियों के हाथ जोड़ता है। परियों का मन अन्त में पसीज जाता है। वे आती हैं और हीमाल के शरीर का सारा विष वापिस चूस लेती हैं। हीमाल जीवित हो उठती है। किन्तु होती है बहुत दुर्बल। नागराय हीमाल को तल-पताल से फिर भू-तल पर ले आता है। दंडक-वन में एक पंगूड़े में उसे छोड़ स्वयं वापिस चला आता है। परियां हीमाल को फिर ढूंढने लगती हैं। उधर एक राजा आखेट खेलने निकला होता है। जब वह एक ऊंचे देवदारु के समीप पहुँचता है तो वह किसी की कराह सुनता है। हाय, हाय।

सिपाहियों को आज्ञा देता है कि वह देखें कि यह क्या बात है? सिपाही उस देवदारु से वह पंगूड़ा खोल लाते हैं। ज्योंही राजा की नज़र हीमाल पर पड़ती है। वह उस पर मोहित हो जाता है और उससे अपने साथ विवाह करने का प्रस्ताव करता है। हीमाल उत्तर देती है, यदि बारह बरस तक मुझे अपना कन्त नहीं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मिलता है तो मैं आप से ब्याह करूंगी। उधर नागराय उसको पाने के भरसक प्रयत्नों में लग जाता है। और आखिर एक दिन उसे राजा के पास पा ही लेता है। नागराय उसे कहता कि क्या मैं अपवे रूप में तुम्हारे पास आजाऊं या तुम्हारी जात के रूप में ? हीमाल सोचती है कि यदि कहीं वह मनुष्य-रूप में चला आया तो आशंका है राजा उसे मरवा डाले। इसलिए अच्छा यही समझती है कि वह सर्प के रूप में ही चला आये। बोली, आप अपने ही रूप में आजायें। राजा ने जब सांप को देखा, उसने उसे मरवा डाला। हीमाल इस समय सोयी थी। वह स्वतः नींद से जाग पड़ी। रोने-बिलखने लगी। राजा ने जब कारण पूछा। हीमाल ने उत्तर दिया, यह मेरा कन्त, मेरा भाग्य-देवता था। राजा बोला, हमें क्या मालूम था कि तुम लोग सांपों से भी विवाह करते हो। अगले दिन पौ फूटी ही थी कि हीमाल राजा से बोली कि मुझे चंदन की लकड़ी लाकर दीजिये। उसी चिता पर मैं इसका दाह संस्कार करूंगी। रोते २ विलाप करते कहती है। "चन्दन की चिता बनाऊंगी, तुम्हें यह किस ने मार डाला ? मेरे मित्र, मेरे कन्त मेरा भी कुछ सोचो, तुम्हें यह किसने मार डाला, मैं चन्दन की चिता बनाऊंगी"।

चिता जलने लगी। हीमाल से रहा न गया। वह भी उसी आग में कूद पड़ी और भस्म हो गई। राजा भस्मी के आगे परेशान स्थिति में रोने लगा। इतने में वहां सुध-बिलाव और बुध-बिलाव आगये। सुध-बिलाव, बुध-बिलाव से पूछता है, भई, यह राजा जो इतना रो-कलप रहा है, क्या इस के ऐसा करने से यह जीवित हो सकती है ? बुध-बिलाव उत्तर देता है, चुप करो तुम्हें क्या इन बातों से सरोकार ?

राजा इनकी बातें सुन रहा था। सुध-बिलाव बुध-बिलाव से रूठ गया। और चुपके से कहीं छुप गया। बुध-बिलाव उस से हाथ जोड़ने लगा कि भाई मुंह तो दिखाओ। मैं बताऊंगा कि यह कैसे जीवित हो सकती है। अब कहने लगा उस के जीवित होने की विधि—यह राजा कुम्हार के पास चला जाये और उससे दो नये लोटे ले आये। लोटों में यह भस्मी भरे और छोड़ आये चिनार वाले स्रोत में। तभी यह दोनों हाथ में हाथ डाले वहां से निकलेंगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

राजा कुम्हार के हां जाता है और मिट्टी के दो लोटे लाता है। उन में भस्मी भर देता है और चल पड़ता है चिनार-वाले सोते की ओर। वहाँ पहुंचता है। भस्मी से भरे दोनों लोटे सोते में डाल देता है। वहां से हीमाल तथा नगराय मुस्काते हुये एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले बाहर निकलते हैं। राजा अत्यन्त प्रसन्न हो जाता है और अपने महल को लौट आता है।

—मोहन निराश

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सन-कीसर

एक घर-परिवार की बात है। बेटा और बेटी थे उनके। लड़की का नाम सन-कीसर था। एक दिन की घटना है कि भइया पाठशाला से खाना खाने घर आया। खाना खाते खाते उसके भात से बाल निकला। वह भी सिर का। बाल उंगलियों से उठा कर कहने लगा—यह जिस के सिर का बाल है वह मेरी जोरू।

मां बोलो—हाय हाय बेटे यह तो मेरे सिर का बाल होगा।

बेटा फिर भी कहता गया—"यह जिसके सिर का बाल है, वह मेरी जोरू।"

बहन 'सन-कीसर' कहने लगी—"भइया, यह मेरे सिर का बाल होगा।"

भाई कहता ही गया—"यह जिस के सिर का बाल है, वह मेरी जोरू।"

सन-कीसर इस पर रुष्ट हुई और घर से भाग गई।

भागते भागते वह अब गांव से दूर आगई थी। सांझ घिरने लगी थी। सन-कीसर को भय होने लगा कि अब वह क्या करे ? कहां जाये ?

इतने में वहां से एक दरवेश गुज़रा। कमसिन लड़की को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

रोता देख, उससे बोला––"बेटी काहे को रो रही हो ?" सन-कीसर ने कहा––"बाबा, मैं घर से भाग आई हूं। वहां भइया ने गालियां दीं। जो मुझ से सही न गईं। मैं भाग आई। अब यहां जो पहुँची मुझे डर लगने लगा है, मैं क्या करूं, कहां जाऊं ?

दरवेश को लड़की की दशा पर दया आई। जेब से बीज के सात दाने निकाले और सन-कीसर से कहने लगा––"ले बेटी, ये बीज बो दे। इन से सात पेड़ उगेंगे। तू उन में से एक पेड़ की फुंगी पर चढ़ कर बैठ जाना। वहां तुझे कोई खौफ खतरा नहीं।"

सन-कीसर ने बीज के सात दाने लिये और मिट्टी में बोदिये। आन ही आन में सात पेड़ उग आये। और वह एक पेड़ की फुंगी पर जाकर बैठ गई। इतने में उसका पिता और उसका भाई उसको ढूंढते २ वहां आ पहुँचे। जब उन्होंने सन-कीसर को पेड़ की फुंगी पर बैठा पाया। वह उस की मिन्नतें करने लगे कि वह नीचे आये और घर लौट चले। किन्तु सन-कीसर ने एक न मानी। पिता को क्रोध आया। उसने कुल्हाड़ा लिया और उस पेड़ को काटने लगा यह पेड़ जो गिरने को ही था कि वह दूसरे पेड़ पर चली गई। उस का पिता उस पेड़ पर भी कुल्हाड़ा मारन लगा। ज्योंही वह पेड़ भी गिरने को था सन-कीसर तीसरे पेड़ पर चली गई। उसके पिता ने वह भी काटना शुरू किया। सन-कीसर चौथे पेड़ पर चली गई। इसी भांति छः पेड़ कट जाने पर जब सन-कीसर सातवें पेड़ पर चली गई। उस के पिता ने उस पेड़ पर भी कुल्हाड़ा मारा। वह व्याकुल हुई जाने लगी कि अब वह क्या करे ? उस ने चांद की बुढ़िया को आवाज़ दी, "मां, अपनी सीढ़ी लगा दे। मैं तुम्हारे पास चली आऊंगी मां।

चान्द की बुढ़िया ने अपनी एक किरण फैंकी और इसी किरण से सन-कीसर उसके पास पहुँची। यह देख पिता-पुत्र दोनों खिसियाने से हो गये। कुछ देर ठहरने के बाद चले गये।

सन-कीसर आकाश पर चान्द की बुढ़िया के पास रहने लगी। उस की वहां चैन से कटने लगी। एक दिन बुढ़िया ने उससे कहा "बेटी सन-कीसर, जरा मेरे केशों को कंघी दे दे। मगर हां ध्यान

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
रखना ज्यादा ऊपर कंघी न ले जाना। मेरे बाल गिरने लगेंगे तो उस पर मुझे क्रोध आयेगा।"

सन-कीसर ने हां कही और लगी चांद की बुढ़िया के सिर में कंघी देनें। बुढ़िया के बालों को कंघी देते देते सन-कीसर को चूक हुई। हाथ ज़रा ऊपर सिर में चला गया। बुढ़िया के बाल गिरने लगे। उसे बड़ा क्रोध आया। क्रोध में उसने सन-कीसर को आकाश से निकाल बाहर कर दिया और धरती पर गिरा दिया। आकाश से गिरते २ सन-कीसर एक कव्वे से घौंसले में जा गिरी। उस घोंसले में एक बूढ़ा कौआ रहता था। निःसंतान था। और जब वह सांझ ढले अपने कोटर में लौट आया, वहां वह सन-कीसर को बैठा पाता है। उससे पूछ बैठा, "तुम कौन हो? यहां कैसे आई हो?"

सन-कीसर ने रोते रोते अपनी सारी कथा सुनाई। बूढ़े कौए का मन पसीज गया। उससे बोला, "अच्छा, अब तुम यहीं रहोगे। मेरी भी कोई औलाद नहीं। समझ लो अब से तुम मेरी बेटी हो और मैं तुम्हारा अब्बा हूँ।"

दिन पर दिन बीतने लगा। सन-कीसर बड़े सुख और शांति से कौए के कोटर में रहने लगी। कागा भांत-भांत की वस्तुएं उस के लिये लाता। इसी बीच एक दिन सन-कीसर की मां उसे ढूंढते २ उसी पेड़ के नीचे आ पहुँचती है। ज्योंही वह सन-कीसर को वहां कौए के घौंसले में देखती है। उस की आंखों में आंसू उतर आते हैं। वह बेटी से मिन्नतें करने लगती हैं, "आ, नीचे आ बेटी, चल घर चलें।" किन्तु सन-कीसर मानने से बिल्कुल नकार करती। मां आंसू बहाती है, दो बोल बोलती है, "आ, आ सन-कीसर बेटी तुम्हारी गुड़ियां जाया हुई जा रही हैं।"

सन-कीसर उत्तर देती है, "मां, मेरी मां मैं नीचे नहीं आऊंगी।"

मां फिर मिन्नतें करती है, हाथ जोड़ती है, "आ, आ मेरी बेटी, गुडियां जाया हुई जा रही हैं, जो तेरी हैं।"

किन्तु सन-कीसर ने एक न सुनी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सांझ हो गई। सन-कीसर की मां थक-हार कर लौट गई। उधर जब कागा बाबा अपने बसेरे लौटता है, तो सन-कीसर की आंखों से आंसूओं की झड़ी लग जाती है। कौआ पूछता है कि बेटी तुम रो क्यों रहो हो ?

सन-कीसर बोली, "बाबा, मेरे लिये गुड़ियां ला दीजिये।" कागा बाबा ने ढारस बंधाते कहा, "बाबा तुम्हारे वारी, बेटी। कल तुम्हारे लिये गुडियां आ जायेंगी।" अगले दिन कौआ उसके लिये गुड़ियां लाता है।

दूसरे ही दिन सन-कीसर का पिता अपनी रूठी हुई बेटी को मनाने आता है। लेकिन सन-कीसर माने न। तब वह मिन्नतें करने लगा, "आ, आ मेरी बेटी, रंग-रोगन से सजा-सजाया चर्खा घर में पड़ा पड़ा जाया हुआ जा रहा है।"

सन-कीसर नीचे आने से इन्कार करती है। बोली, "नहीं, मेरे पिता, मैं नहीं आती।"

पिता फिर उस की मिन्नतें करता है। वास्ता देता है। आ मेरी बेटी चर्खा घर में पड़ा पड़ा ज़ाया हुआ जा रहा। सन-कीसर कुछ भी नहीं मानती है।

सांझ घिर आई। सन-कीसर का पिता थक-हार कर घर लौट जाता है। और बाद को जब कागा बाबा घौंसले में लौट आया। सन-कीसर ज़ार ज़ार रोने लगी। बाबा ने पूछा बेटी काहे को रो रही हो ? सन-कीसर बोली बाबा मेरे लिये रंगीन चर्खा ला दीजिये।

कागा-बाबा ने ढारस बंधाते कहा, "बाबा तुम्हारे वारी बेटी ! कल तुम्हारे लिये चर्खा आ जायेगा। और अगले दिन कौआ सन-कीसर के लिये रंगीन, खूबसूरत सा चर्खा ले आया।

और दूसरे दिन भाई, सन-कीसर को मनाने आ गया। हाथ जोड़े, मिन्नतें की। कहने लगा, "आ मेरी बहना, घर में पड़े-पड़े सोने के सभी ज़ेवर ज़ाया हुये जा रहे हैं।" सन-कीसर नीचे आने से बिल्कुल इन्कार करती है। बोली, "नहीं मेरे भय्या, मैं नहीं आती।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
भाई फिर मिन्नत करता है। किन्तु निष्फल। दिन ढल गया। भाई हताश होकर अपने घर लौट चला। और इधर बूढ़ा कौआ जब अपने बसेरे में लौट आया। सन-कीसर बरबस रो पड़ी।

"क्या है बेटी, तुम काहे को रो रही हो ?" कौआ बोला। सन-कीसर ने उत्तर दिया, "बाबा, मेरे लिये सोने के ज़ेवर ला दो।"

कागा बोला, "बाबा, तुम्हारे वारी, बेटी ! बस कल ही तुम्हारे लिये सोने के सुन्दर ज़ेवर लाता हूँ।"

दिन पर दिन बीतता गया। एक दिन सन-कीसर दूल्हन बनी, सोने के ज़ेवर सजाये रंगीन चर्खा कात रही थी कि पास से उस देश का राजा गुजरा। राजा मन्त्रियों के समेत शिकार खेलने निकला था। राजा जो उस वृक्ष के समीप पहुँचा तो उसके कान में चर्खे की गूं-गूं आने लगी। वह ऊपर दृष्टि जो उठाता है। वहां अप्सरा सी सजी संवरी युवती को पाता है।

तो क्या था राजा उस पर मोहित हो गया। वह सक-कीसर को कसम दिलाता है। कसम है तुम्हें उस की जिसने तुम्हें भी बनाया और मुझे भी। बताओ कि तुम अप्सरा हो कि मनुष्य ?"

सन-कीसर उत्तर देती है, "कसम से कहती हूं। मैं मनुष्य हूं और नाम मेरा है : सन-कीसर।"

राजा कहता है, तब तुम्हारा स्थान कौए के घोंसले में नहीं। तुम नीचे आओ मैं तुम्हें अपने महल ले जाऊंगा।"

सन-कीसर ने उत्तर दिया कि जब तक मेरा बाबा नहीं आता है और मैं उससे आज्ञा नहीं लेती हूं। मैं यहां से जा नहीं सकती।"

वह कब आते हैं ? राजा बोला।

सांझ को सन-कीसर ने उत्तर दिया। राजा बोला मैं उन की प्रतीक्षा करता हूं।"

किन्तु मन्त्री राजा को सुझाव देता है कि महाराज हमें शाम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तक यहां ठहरना नहीं चाहिए। क्योंकि फिर हमें राज-महल पहुँचने में देर होगी। और तिस पर रास्ता बहुत कठिन है।

राजा बोला, "मंत्री तो तुम्हीं बताओ हम क्या करें? हम सन-कीसर को साथ लिये बिना महल में नहीं लौट सकते।"

मंत्री ने उत्तर दिया, "राजन् यदि सन-कीसर खुद इस पेड़ से नीचे नहीं आती तो हम यह कटवायेंगे। वह स्वतः आपके चरणों पर आगिरेगी। और फिर हम इसे साथ ले चलेंगे।"

राजा बोला, अवश्य कुछ किया जाना चाहिए। नहीं तो.....।"

तो मन्त्री सन-कीसर को पेड़ से नीचे उतरने को कहता है। वह बाबा की आज्ञा के बिना नीचे आना नहीं मानती। आखिर मन्त्री लकड़हारों को बुला लाता है और वे उस पेड़ को काटने लगते हैं।

सन-कीसर उन्हें कोसती है। कहती है— जो कागा बाबा का यह कोटर काट डालेगा कुल्हाड़ी उस की गरदन पर पड़ जाये।" किन्तु लकड़हारे कुछ भी सुनने से इन्कार करते हैं। पेड़ कट कर गिर जाता है और सन कीसर नीचे आ गिरती है। राजा उसे उठा कर राज महल में ले जाता है।

राजा की पहले ही छः रानियां होती हैं। अब सन-कीसर सातवीं रानी हो जाती है। एक दिन राजा को ध्यान आता है कि इन सात रानियों में वह पटरानी बनाई जायेगी, जो गुणवान हो। अतः वह सातों को बुला लाता है। कहता है, "तुम लोगों को बराबर वजन का धान दिया जायेगा। जो जल्दी से कम समय में वह कूट के देगी। वही मेरी पटरानी बनेगी।"

सभी रानियां धान ले जाती हैं और अपने २ महल में कूटने लगती हैं। किन्तु सन-कीसर धान ले जाकर ऐसे ही रख छोड़ती है। वह खिड़की पर बैठी रो रही होती है, कि क्योंकर धान कूटे। क्योंकि वह इससे अनभिज्ञ थी। ध्यान आता है उसे कागा बाबा का। कि इतने में बूढ़ा कौआ उसे ढूंढता २ वहीं आ पहुंचता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सन-कीसर को देख उसका प्यार उमड़ आता है। वह बेटी को गले लगाता है। सन-कीसर रोते २ अपना सारा हाल कह सुनाती है।

कागा बाबा कहता है, "बाबा तुम्हारे बारी, बेटी, तुम रो क्यों रही हो ?"

ऐसा कह कर वह उसी क्षण वहां से चला और उसने सभी चिड़ियों और गौरय्याओं को आज्ञा दी कि वे सभी एक पल में राज-महल जाये और पलक-झलक में सन-कीसर के धान का छिलका उतार दें। सन-कीसर अत्यन्त प्रसन्न हुई। चावल उठा कर राजा के पास चली गई। जाते हुये, अन्य रानियां मिलीं। उन्होंने पूछा, "बहन सन-कीसर यह क्या तरकीब तुमने की ?" क्योंकि वे अभी भी अपना २ धान कूट ही रही थीं।

सन-कीसर बोली, "बहन क्या बताऊं, मैंने सारे का सारा धान वितस्ता में फैंक दिया, साथ ही ओखली और मूसल भी उसी में डाल दिये। तो क्या हुआ ? वहां से आन की आन में धान के चावल होके आगये।"

यह सुन सभी रानियां गईं और फैंक गईं अपना अपना धान वितस्ता में। साथ ही ओखली और मूसल भी डाल आईं।

सन-कीसर ने चावल राजा के सामने रखे। अन्य रानियों का हाल ही बुरा था। यह देख राजा उससे बहुत प्रसन्न हुआ। और अन्य छः रानियों पर रुष्ट हुआ। अगले दिन उसने आज्ञा दी, "सभी रानियां अपने २ महलों को लीप-पोत लें। जिसका लेपन सुन्दर होगा, वही पट-रानी बनाई जायेगी।"

सभी रानियां अपने अपने महलों का लीपन करने गईं। सन-कीसर रोने लगी, क्योंकि उसे लीपने की जांच ही नहीं थी। वह चिन्ताकुल ही बैठी थी कि कागा बाबा चला आया। सन-कीसर ने अपनी सारी विपदा कह सुनाई। कागा ने ढारस बन्धाया। उसी समय उड़ चला और सभी चिड़ियों और अबाबीलों को आज्ञा दी कि वे एक क्षण में सन-कीसर का महल सजा डालें। सन-कीसर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

यह देख कर बहुत प्रसन्न हुई। और राजा को निमंत्रण भेजा। रास्ते में अन्य रानियां मिलीं। वे पूछ बैठीं, बहन, यह कैसे तुम इतने ही समय में अपना महल सजा चुकी ?"

सन-कीसर ने उत्तर दिया, "क्या करूं बहन, मैं कीचड़, राख आदि लायी और उसी से दीवारें पोत डाली। तभी तो इतनी जल्दी काम कर चुकी।"

तो ये रानियां भी कीचड़, राख आदि लाई और अपने-अपने महल की दीवारों पर पोतने लगीं।

राजा, रानियों के महल देखने आया। सन-कीसर के महल सिवा सभी के महल भद्दे लग रहे थे। हर कमरे से बू आ रही थी। केवल सन-कीसर का महल ही सजा-संवार, सुगन्धित था। यह देख कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

अब के राजा ने आज्ञा दी कि सभी रानियां अपने २ महल में स्वादिष्ट पकवान बनायें। जिसका पकवान अत्यन्त स्वादिष्ट होगा, वह पट-रानी बना दी जायेगी।

सभी रानियां पूर्व-वत् अपने २ महलों में पकवान बनाने लगी। सन-कीसर के लिये यह अवसर भी कठिन परीक्षा का था। वह मायूस, सोचने लगी। भाग्य का करना कागा बाबा इस समय भी चला आया। सन-कीसर से दुःख का कारण पूछा। वह उत्तर में बोली, "बाबा, आज राजा फिर हमारी परीक्षा लेना चाहते हैं। आज्ञा दी है कि हम स्वादिष्ट पकवान बनायें। जिस के पकवान अत्यन्त स्वादिष्ट होंगे, वही पटरानी बनाई जायेगी।"

कागा बाबा ढारस बन्धाते हुए बोला, "बाबा, तुम्हारे वारी बेटी। तुम काहे को इतनी दुखित हो रही हो ?"

और बूढ़ा, सहृदय कागा उसी क्षण उड़ चला। फिर सभी चिड़ियों को आज्ञा दी कि वे सन-कीसर के महल में घी, केसर, भांत-भांत के मसाले और मांस आदि ले आयें। आन ही आन में सभी प्रबन्ध हुआ। और पलक झपक में नाना प्रकार के पकवान तय्यार हो गये।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सन-कीसर देख कर फूले न समाई। गई राजा को न्योता देने। जा रही थी कि रास्ते में अन्य छः रानियां मिली। पूछने लगीं, "बहन, यह कैसे तुम इतनी जल्दी सारा काम कर चुकी ?"

सन-कीसर बोली, "क्या करूं बहन, मैंने घास-फूस पकाई। पानी के बदले उसमें गो-मूत्र डाला। इसीलिये तो जल्दी से काम कर चुकी।"

तो वह छः रानियां जाती हैं और ऐसा ही करती हैं। परिणाम स्पष्ट था। राजा हरेक के महल से नाक-भौं चढ़ाये बाहर चला आया। और सन-कीसर के महल में उसे नाना प्रकार के पकवान खाने को मिले। राजा अब के सन-कीसर से अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

अन्य रानियों पर इतना क्रोधित हुआ कि उसी समय उन्हें तलाक दे दिया। और सन-कीसर को अपनी चहेती पट-रानी घोषित किया।

और फिर उन दोनों ने लम्बे समय तक राज-पाट का आनन्द लूटा।

—मोहन निराश

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कन कीटर

कहते हैं एक राजा था। एक दिन उसे ख्याल आया कि वह अपने देश की यात्रा पर निकलेगा। अतः वह अपने अमीर, वज़ीर तथा कोतवाल को बुलावा भेजता है। कहावत है राजाज्ञा को ना कैसी ? तीनों दौड़े चले आये। राजा बोला, "आज हम सभी देश घूमने निकलेंगे। यह देखने कि हमारी प्रजा संतुष्ट और प्रसन्न है कि नहीं।" तो वे राज महल से चल पड़े। सभी मुहल्ला-मुहल्ला वे घूमते रहे। जो एक जगह एक सुन्दर नारी देखी। उसे देखते ही सभी सुन्न होके रह गये। राजा, अमीर, वज़ीर तथा कोतवाल प्रत्येक मन ही मन उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो गये।

सोचने लगे, "प्रभु, यह कीच में इतना सुन्दर कमल यहां कहां ?" पूछ-ताछ से मालूम हुआ कि यह वहां के बादशाह के पशुओं की रखवाली करने वाले की पत्नी थी। इसके पश्चात् राजा अमीर, वज़ीर तथा कोतवाल तीनों को साथ ले कर वापिस राज-महल लौटा। गवाले की पत्नी का सौंदर्य उसे अशान्त तथा आकुल करने लगा। इसी भांति अमीर, वज़ीर तथा कोतवाल भी कामातुर होने लगे। राजा इस ग्वाले को किसी भांति अपने घर से दूर रखने की सोचने लगा। ताकि उसे उसकी पत्नी से दो एक बातें करने का अवसर मिल जाये। आखिर एक दिन वह ग्वाले को बुला लाता है। कहता है, "सुन बे ग्वाले, एक दिन के भीतर 'कन कीटर'

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
पक्षी ला के दे।" ग्वाला सुनते ही चौंक उठा। बोला, "महाराज, मैं ने आज तक ऐसा कोई पक्षी नहीं देखा है। नाम तक नहीं सुना है ऐसा, महाराज!"

महाराज बहुत क्रुद्ध हुआ। कहने लगा, "यह बहाने न बना, ग्वाले। इस पक्षी के बदन पर तो सभी प्रकार के पर होते हैं। यदि तू वह पक्षी ला के देता है तो ठीक। नहीं तो तुझे देश-निकाला दिया जायेगा।"

सुनते ही ग्वाले की टांगों पर जैसे किसी ने लाठी का प्रहार किया हो। आंखों में अंधेरा छा गया। सोचने लगा, कि पता नहीं यह कौन सी बला सिर पर आ गिरी है। यही सोचते २ घर पहुंचा और एक कोने में चिन्ता में पड़ा रहा। ज्यों ही पत्नी ने उस का यह हाल देखा, वह घबरा गई। पूछने लगी, "आप चिन्तित क्यों हैं नाथ।" ग्वाले ने सारी बातें कह सुनाई। ग्वाले की पत्नी ने जब सारी बातें सुनीं तो उसे हंसी आई। वह बहुत ही बुद्धिमान थी। पति से कहने लगी, 'आप जायें और राजा से दो दिन का अवकाश मांगें।" यह सुन ग्वाला राजदरबार की ओर चल पड़ा। राजा की सेवा में गया और वे सभी बातें बोला जो उसकी पत्नी ने कहने को कही थीं। राजा सुन कर प्रसन्न हुआ। क्योंकि वह ग्वाले की पत्नी से बातें करके यह जानना चाहता था कि उस निर्धन दरिद्र की ऐसी सुन्दर, अप्सरा सी पत्नी क्यों कर प्राप्त हुई है। इसी कारण तो यह बहाना बना के राजा ग्वाले को कहीं दूर भेजना चाहता था। तो दो दिन का अवकाश प्राप्त कर ग्वाले ने राजा से अनुज्ञा मांगी और अपने घर चला आया। बहुत व्याकुल, बहुत चिन्तित। पत्नी ने ढारस दिया, "कोई चिन्ता न करें देव! आप धीरज धरें। और जाके जंगल से सभी प्रकार के डैने और पर इकट्ठा करके ले आयें। साथ ही 'क्यलम'१ और मकई के दो तीन त्रक भी साथ लेते आयें। ये चीज़ें ला करके फिर अपने काम पर चले जाइये।"

---

१ 'क्यलम' : देवदारु की छाल से चूने वाला रस. जो गाढ़ा होकर चिपकाऊ होता है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ग्वाला यह सभी चीज़ें लाकर घर में रख देता है। और पत्नी से विदा लेकर अपने काम पर निकल पड़ा। इधर जब राजा तथा औरों को इस बात का पता चला कि ग्वाला 'कन कीटर' पक्षी लाने के लिये घर से चल पड़ा है। सभी मन ही मन हंसने लगे कि उजबक कहीं का आखिर दफान हो ही गया। इधर ग्वाले की पत्नी को राजा, अमीर, वज़ीर तथा कोतवाल चारों के पत्र आये—"यदि अनुज्ञा हो तो भेंट करने का अवसर दिया जाये।" कहने वाला कहता है। जब उसके पास संदेश वाहक आया, उसने सभी को मिलने के लिये एक ही समय दिया। निश्चित समय पर पहले कोतवाल वहां पहुँचा। अभी बैठने को ही होता है कि द्वार पर दस्तक होती है। सुनते ही कोतवाल के होश उड़ गये। ग्वाले की पत्नी से पूछता है, "कौन है ?" वह उत्तर देती है, "हो न हो, यह अमीर होगा।" कोतवाल माथा पीट के रह जाता है। अब क्या होगा ? यदि अमीर यहां बैठा देखेगा ? मुंह दिखाने के योग्य नहीं रहूँगा।" अतः कोतवाल ग्वाले की पत्नी को हाथ जोड़ने लगा। कहने लगा, "किसी भांति बचाओ मुझे।"

ग्वाले की पत्नी कोतवाल पर हंसती है। फिर अपना एक फिरण पहनने को देती है। सर पर ओढ़नी उढ़ा के मकई पीसने में लगा देती है। इधर कोतवाल स्त्री वेश में मकई पसीने लगता है, उधर अमीर अन्दर आ जाता है। और अभी जूता उतार ही रहा होता है कि द्वार कोई खटखटाने लगता है। अमीर वही का वहीं सन्न रह जाता है। कहने वाला कहता है, उसे सांस लेना भी भारी लगता है। ग्वाले की पत्नी से पूछता है, "यह कौन आया होगा ?" उत्तर में वह कहती है, "हो न हो, यह वज़ीर होगा।" अमीर हाथ जोड़ कर मिन्नतें करने लगता है कि किसी भांति उस की लाज रखी जाये। यदि वज़ीर उसे वहां देखता है, वह मारा जायेगा। ग्वाले की पत्नी ने क्या किया ? उसने अमीर को चावलों से मांड निकालने में लगा दिया। अमीर खुद से सोचने लगा, "प्रभु, यह किस बला में मैं फंस गया ?" ग्वाले की पत्नी गई और द्वार खोल वज़ीर को सम्मान से अन्दर ले आई। वजीर बैठा ही चाहता था कि दरवाज़े पर फिर दस्तक हुई। वज़ीर ने पूछा, "यह कौन ?" उसने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
उत्तर दिया, "हो न हो, यह राजा होंगे।" सुन कर वज़ीर ग्वाले की पत्नी के पांव पड़ा। मिन्नतें करने के बाद बोला, "राजा ने यदि देख लिया तो मारा ही जाऊंगा। वह मुझे सूली पर चढ़ा देगा।" ग्वाले की पत्नी ने तुरन्त लम्बा सा एक कपड़ा लिया और सिर से पैर तक उसके जिस्म पर लपेट लिया। फिर वहीं एक कोने में खड़ा करके रख छोड़ा। सिर पर उसके जलता दीपक रखा। जैसे यह कोई खम्भा हो। फिर गई और राजा को बड़े सम्मान तथा आदर के साथ अन्दर ले आई।

कहने वाला कहता है। राजा के होश भी उस समय उड़ गए जब किसी ने द्वार खटखटाया, पूछने लगा, "यह कौन है?" ग्वाले की पत्नी ने अपने स्वामी की आवाज पहचान ली। राजा से बोली, "यह मेरे स्वामी आ गये।" राजा का, काटो तो खून ही नहीं जैसा, हाल हो गया।

वह बोली, "महाराज, आप निःचिन्त रहें। आप के मान की रक्षा करना मेरे ज़िम्मे।" तो वह दौड़ी दौड़ी गई और उसने राजा के सारे शरीर पर 'क्यलम' मल दिया। और उस अंधेरे कमरे में डाल दिया जहां भांत भांत के पर और डैने रखे हुये थे। इस कमरे में जाते ही राजा के सारे शरीर के साथ ये पर और डैने चिपक जाते हैं। कहने वाला कहता है वह अर्थात् राजा अब मनुष्य दिखाई नहीं देता था। अपितु विचित्र पक्षी लगने लगा। इधर पत्नी ग्वाले की बांह पकड़ कर उसे कमरे में ले गई। देखा वह अत्यन्त चिन्तित था। ठंडी आहें भरता था। पत्नी ने पूछा, "आप चिन्तित क्यों हैं?" आह भर कर वह बोला, "कुछ समझ नहीं आता, अब मुझ पर क्या गुजरती है? शाम तक अगर मैं राजा के सामने 'कन कीटर पक्षी नहीं रखता, मेरी फांसी होगी। मैंने तुम्हारे कहने पर ही यह सारा झमेला ज़िम्मे लिया।" पत्नी बे-तहाशा हंसने लगी। और उस कमरे की ओर हो ली जहां राजा रखा था। रस्सी से बांध के उसे बाहर ले आई और पति से बोली, "यह देखें, यह 'कन कीटर' पक्षी है जाइये और इसे राजा की भेंट कीजिए।" ग्वाला पत्नी की बात सुनते ही चौंक पड़ा। अत्यधिक प्रसन्न हुआ। सोचा, राजा खुश होंगे और पुरस्कार देंगे। साथ ही अपना वचन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

भी पूरा हुआ।" तो वह 'कन-कीटर' पक्षी को लेकर राज-दरबार की ओर चल पड़ा।

कहने वाला कहता है, ज्यों ही ग्वाला इस विचित्र जन्तु को लिए रास्ते से गुज़रता है, सारा नगर दौड़ा चला आता आता है उसे देखने। काना-फूसियां होनी शुरू होती हैं। देखो फलां आदमी कन कीटर पक्षी जंगल से पकड़ के लाया है। यह राजा की भेंट में देना है। और राजा यह बातें सुन अन्दर ही अन्दर मर रहा होता है कि अपने राम का यह कैसा हाल हो गया? एक दुनिया रास्ते पर इकट्ठी हो जाती है। कोई यह नहीं जानता कि वास्तविकता क्या है? आखिर ग्वाला राज-दरबार में पहुँचा। वहां उसे राजा नहीं मिलता। राज-रानी माथा पीट रही होती है मुंह नोच रही होती है कि आखिर राजा कहां गया? देश भर में ढिंडोरा पिटवाया जाता है कि जो कोई राजा का अता-पता कहेगा उसे राज-कोश का आधा दिया जायगा। ग्वाले ने जब राज-दरबार में राजा को नहीं पाया। वह पिचित्र पक्षी को साथ लेकर फिर घर लौट आया।

राजा परेशान था ही। अब आतुर होने लगा। अन्दर ही अन्दर पानी-पानी हुआ जा रहा था। मन ही मन ग्वाले की पत्नी की बुद्धि की सराहना करने लगा। आखिर हाथ जोड़ कर उसे कहने लगा, "कृपा करके मेरी लाज रखें। नहीं तो मेरा फूटी कौड़ी भी मोल नहीं रहेगा।" ग्वाले ने जब 'कन कीटर' पक्षी मनुष्यों की भांति बोलता देखा, वह चौंक उठा। किन्तु दूसरे ही क्षण धीरे धीरे सभी बात समझने लगा। राजा ग्वाले की पत्नी से हाथ जोड़ने लगा कि, "अपना आधा कोश आपके चरणों पर रख दूं। कृपा करके यह रहस्य किसी पर न खोलें।" वह उत्तर में बोली, "महाराज, मुझे राजकोश की कोई चाह नहीं, कोई आवश्यकता नहीं। आज से आप का और मेरा पिता-पुत्री का संबन्ध होगा।" यह कह कर वह राजा को बड़े सम्मान तथा आदर के साथ राज-महल में पहुंचा देती है।

—मोहन निराश

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

दो भाई

ये थे दो भाई। जब इन की आपस में खट-पट हो गई, ये एक दूसरे से अलग हो गये। बड़ा भाई कुछ लालची था। उसने बाईं ओर का हिस्सा छोटे भाई को दिया, जब कि दाईं ओर का भाग अपने लिये रखा। अच्छी सी बैलों की जोड़ी आप रख ली और घटिया सी जोड़ी छोटे भाई को दी। छोटे भाइ ने कोई प्रतिवाद नहीं किया। जो बड़े भाई की इच्छा थी उसी पर संतोष किया।

दिन बीतते गये। बड़े भाई ने देखा छोटे भाई की बाड़ी दिनों दिन-फूलती जा रही है। बस चिन्ता में पड़ गया कि आखिर यह क्या बात है? 'एक तो मैं ने इसे बाँईं ओर की बाड़ी दी और तिस पर इस को घटिया सी बैलों की जोड़ी सौंप दी।'

तो बहुत सोच के बाद वह इस परिणाम पर पहुंचा कि मेरा यह छोटा भाई वास्तव में अपनी इस बैलों की जोड़ी से खूब काम ले रहा है। तभी तो इस की बाड़ी दिनों दिन फूलती जा रही है। आखिर यह बात ठान ली कि रात को चुपके से इस की यह बैलों की जोड़ी मार डालूंगा।

तो आधी रात को वह कुल्हाड़ा लेकर घर से चल पड़ा। और पहुंचा सीधे जाकर छोटे भाई की बाड़ी में। वहां दोनों बैल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

एक ग्रोर बंधे जुगाली कर रहे थे। बाड़ी में पग धरते ही वह चकित रह गया, जब उसने देखा कोई ढींकली से पानी निकाल रहा था। ग्रौर बाड़ी को पानी दे रहा था। सोचा शायद यह छोटा भाई है, किन्तु तभी यह ख्याल ग्राया शायद वह नहीं है। उसे क्या ग्रावश्यकया पड़ी थी जो रात को वह ग्रपनी बाड़ी सींचता। दिन जो इतना पड़ा था ,

वह यही सोच रहा होता है कि उस व्यक्ति ने जो कुएं से पानी निकाल रहा था, उसे पुकारा । मेरे समीप ग्राग्रो। 'डरो नहीं मुझ से। मैं जानता हूं, तुम बैलों की जोड़ी मारने ग्राये हो। किन्तु तुम इससे बाज ग्राग्रो।'

बड़ा भाई उत्तर देता है, "तुम्हें उस की कसम जिसने तुझे भी पैदा किया ग्रौर मुझे भी। पहले बताग्रो तो तुम कोई जिन हो देव हो या ग्रौर कोई हो ?'

वह व्यक्ति बोला, "मैं तुम्हारे छोटे भाई का भाग्य हूँ। मैं हर दिन रात को यह बाड़ी सींचता रहता हूं। तभी तो यह दिनों-दिन हरी भरी हुई जा रही है।" बड़ा भाई कहता है, "किन्तु मेरा भाग्य कहां पड़ा है। वह मेरी बाड़ी सींचने क्यों नहीं ग्राता ?" व्यक्ति ने उत्तर दिया, "तुम्हारा भाग्य समुद्र के एक टापू में सोया पड़ा है। इसी लिये वह तुम्हारी बाड़ी सींचने नहीं ग्राता।

'क्यों न मैं स्वयं जाकर उसे जगा लाऊं ?' बड़े भाई ने पूछा।

छोटे भाई का भाग्य बोला, "ठीक है, जाग्रो।" तो बड़ा भाई घर लौट ग्राया। उसने ग्रपनी पत्नी को नींद से जगाया, सुन रही हो ? पत्नी से कहने लगा, मेरे इस छोटे भाई का भाग्य तो उसकी बाड़ी सींच रहा है : इसी कारण इस की साग-सब्जी हरी-भरी होती जा रही है।'

पत्नी बोली, 'तभी तो मैं भी परेशान थी कि हमारी यह साग बाड़ी सूखी क्यों जा रही है ?' कोई चिन्ता नहीं भागवान। हमारा भाग्य तो समुद्र के एक टापू में सो रहा है। मैं ही जाता हूँ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
और उसे जगा कर लाता हूँ। पति ने ढारस दिलाते हुए कहा। पत्नी प्रसन्न हो गई। उसी दम उठी और रोटियां पाथने लगी।

कोई दस के लग-भग मक्कई की रोटियां तथा कुछ सत्तू कपड़े में बांधे, बड़ा भाई सुबह सूर्योदय होते ही चल पड़ा। चलते-चलते वह एक जंगल में पहुंचा। वहां क्या देखता है? एक रीछ छटपटा रहा था। रीछ को देखते ही उस के चेहरे का रंग उड़ गया। सोचा, ए मेरे प्रभु, यदि मुझे मारना ही था तो घर में ही मेरे प्राण क्यों न लिये। किन्तु रीछ बोला, ए आदमी, तू कहां से आया और कहां जाना है?

मैं पुर से आया और जाना है मुझे समुद्र के टापू में सोये पड़े अपने भाग्य को जगाने। बड़े भाई ने उत्तर दिया।

रीछ बोला, कितना अच्छा होता, यदि मेरा भी कुछ कह देते उसे?

बड़ा भाई कहने लगा, कहूंगा, बताओ तो सही क्या कहना है उसे?

रीछ बोला, उसे पूछना दिन ढलते ही मेरे पेट में दर्द क्यों होने लगता है? बहुत अच्छा, मैं पूछूंगा। बड़े भाई ने उत्तर दिया और अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक जगह पहुँचा। देखता है खूबानी का एक पेड़ खूब फला-फूला है। एक-एक खूबानी टमाटर के बराबर थी। बड़ी बड़ी लाल-लाल। रस भरी खूबानियां। चूंकि भूख ने सताया था। सोचा, क्या मालूम कितने दिनों तक चलना होगा। जब ये रोटियां और सत्तू खा चुकूंगा। फिर मेरा क्या बनेगा? क्यों न इस पेड़ से भर-पेट खूबानियां खाऊं और बहुत सारी साथ उठाऊं।

यह सोच कर वह उस पेड़ के समीप गया। एक बड़ी सी खूबानी पर नज़र पड़ी। उसे तोड़ा और मुंह में डाल लिया। ज्योंही चबाने लगा तो यह बहुत कड़वी लगी। तुरन्त मुंह से बाहर फैंक दी। उसे उलटियां आने लगीं। प्रभु की करनी खूबानी का पेड़ बोल उठा, ए आदमी, कहां से आये और कहां जाना है?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बड़ा भाई बोला, मैं पुर से आया और जाना है समुद्र के टापू में सोये पड़े अपने भाग्य को जगाने। खूबानी का पेड़ बोला, जरा मेरा भी जाकर कहना। कहूंगा, बतलाओ तो सही क्या कहना है उसे ? बड़े भाई ने पूछा।

पेड़ ने कहा, उसे पूछना, मेरा फल कड़वा क्यों होता है ? बहुत अच्छा, मैं पूछ लूंगा। बड़े भाई ने उत्तर दिया।

यह कह कर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। चलते चलते वह एक और जगह पहुंचा। देखता क्या है ? एक बादशाह शिकार करनचला था। कहने वाला कह गया है, घोड़े को पीछे से और गांव के मुखिया को आगे से नहीं गुजरना चाहिये। फिर तो वह रहा बादशाह। बड़ा भाई क्या करता। वह छुपते-छुपाते जाने लगा।

परमात्मा की करनी। बादशाह ने उसे देख लिया। उसने बड़े-भाई को बुला लिया और पूछने लगा। ए आदमी, तुम कहां से आये और कहां जाना है ? बादशाह सलामत ! मैं पुर से आया हूँ और जाना है मुझे समुद्र में सोया पड़ा अपना भाग्य जगाने।

बादशाह कहता है, क्यों न मेरा भी प्रश्न उसे पूछो ? बादशाह सलामत का हुकम सर आखों पर। कह दीजिये, क्या कहना है उस से। बड़े भाई ने प्रार्थना की।

बादशाह ने उत्तर दिया, उसे पूछना, मेरा सिर क्यों शाम से सुबह तक दुखने लगता है ? पूछ लूंगा, हज़ूर। बड़े भाई ने उत्तर दिया। और चल पड़ा फिर अपनी यात्रा पर। चलते-चलते पहुंचा आखिर समुद्र के टापू पर। वहां क्या देखता है कि उस का भाग्य सोया पड़ा खर्राटे ले रहा है। उसने उसे जगाया। कहने लगा, रे मेरे भाग्य ! तुम क्यों सोये पड़े हो ? मेरा छोटा भाई तो मज़े में है, क्योंकि उस का भाग्य जागा हुआ है। मुझे तुम ने क्यों भुला-बिसरा दिया है।

भाग्य बोला, चलो अब तो मैं जाग ही गया। तुम चलो मैं भी आता हूं।

नहीं, मेरे साथ आना होगा। बड़े भाई ने कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
चलो तुम, मैं तुम से पहले वहां पहुंचा। बड़े भाई ने उसका कहा माना और निकलने को था कि भाग्य फिर बोला, रास्ते में कोई मिला तो नहीं ?

बड़े भाई ने उत्तर दिया, हां तो, पहले एक रीछ मिला। उसे दिल ढलने के साथ ही पेट में दर्द होने लगता है।

जाकर उसे कहना, वह किसी मूर्ख का खून पिये। बड़ा भाई बोला, फिर खूबानी के एक पेड़ से भेंट हुई। उस बेचारे का फल कड़वा होता है।

उस की जड़ों के नीचे सात खज़ाने हैं। जब ये खज़ाने वहां से निकाले जायें। तभी उस के फल में मिठास आयेगी। भाग्य ने उत्तर दिया।

आगे चल कर एक राजा मिला। बेचारे के सिर में सायं से सूर्य निकलने तक सिर दुखता रहता है।

भाग्य ने उत्तर दिया, वह वास्तव में नारी है। जब वह किसी मर्द से ब्याह करेगा। तभी उसका दर्द जाता रहेगा। बस और कोई नहीं मिला। बड़े भाई ने कहा।

तो चलो, मैं भी आता हूं। भाग्य ने उत्तर दिया। कहीं फिर न सोजाना। मुझे छोटे भाई से बदला लेना है ना, हां। बड़ा भाई बोला और वापिस लौट पड़ा।

चलते-चलते वह उस जगह पहुँचा जहां उसे राजा मिला था। ज्योंही राजा की नजर उस पर पड़ी, वह दौड़ा चला आया और पूछता है, ए आदमी, जल्दी से बताओ भाग्य ने मेरा क्या कहा ?

बड़ा भाई बोला, हज़ूर, उसने कहा आप नारी हैं। जब तक आप किसी मर्द से ब्याह नहीं करते, तब तक आप के सिर का दर्द ठीक नहीं होगा। राजा बोला, यह बात तो अब हम दो को ही मालूम है। आओ तुम मुझ से ब्याह कर लो। तुम बादशाह हो जाओ और मैं तुम्हारी रानी, यह राज-पाट तुम्हारा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बड़ा भाई कहने लगा, हजूर, मैं आप का कहना मानता। किन्तु मुझे अपने छोटे भाई से बदला लेना है। इस लिये.....

राजा बोला, बाद को जाकर बदला लेना उस से। फिलहाल तो राजा बन जाओ। बड़े भाई ने माना नहीं, बोला, हजूर, मुझे नहीं चाहिए राज पाट। मुझे तो पहले अपने छोटे भाई से बदला लेना है।

राजा ने उत्तर दिया, तुम बहुत मूर्ख हो। वह अपनी राह चल दिया। रास्ते में उसे खूबानी का पेड़ मिला। पेड़ ने आवाज़ दी, ए आदमी, जल्दी बताना भाग्य ने मेरे बारे में क्या कहा ?

वह बोला, भाई, भाग्य ने कहा; तुम्हारी जड़ों के नीचे सात खज़ाने हैं। जब वह खज़ाने निकाले जायेंगे तब तुम्हारे फलों में मिठास आयेगी।

पेड़ बोला, अब तो तुम जानते ही हो यह बात। निकाल लो यह खज़ाने और जीवन भर आराम से रहो। बड़ा भाई कहने लगा, मेरे पास इतना समय कहां, मुझे तो अपने छोटे भाई से बदला लेना है।

खूबानी का पेड़ कहने लगा, तुम बड़े मूर्ख हो।

यह सुन कर वह अपनी राह हो लिया। चलते चलते जंगल में उसकी भेंट रीछ से हुई। रीछ ने आवाज दी, और पूछा, ए आदमी जल्दी से सुना, भाग्य ने मेरे प्रश्न के विषय में क्या कहा ?

बड़े भाई ने उत्तर दिया, भाग्य ने कहा, तुम किसी मूर्ख का खून पी लो। तभी तुम्हारे पेट का दर्द दूर होगा। रीछ ने जो उसकी बात सुनी। कुछ विचार किया और बोला, कहीं मेरे बगैर तो कोई मिला होगा ?

वह बोला, हां, खूबानी के पेड़ से भेंट हुई। उस के फल तो कड़वे होते है। भाग्य ने कहा उस की जड़ों के नीचे सात खज़ाने पड़े हैं। और बादशाह से भेंट हुई। उस का सिर सारी रात दुखता रहता है। भाग्य ने कहा, वह नारी है। वह किसी मर्द से ब्याह करे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

रीछ ने पूछा, हां तो जब तुम ने ये बातें उन्हें कह सुनाईं तो उन्हों ने क्या कहा ? वह बोला, बादशाह ने कहा, मेरे से ब्याह करो और राजा हो जाओ। खूबानी का पेड़ बोला, मेरे नीचे दबे सात खज़ाने निकालो, मजे से रहो।

तो उनका कहा माना क्यों नहीं ? रीछ ने प्रश्न किया।

बड़ा भाई बोला, मुझे तो छोटे भाई से बदला लेना था। इसी लिये सभी की बात का इन्कार किया।

रीछ कहने लगा, तो तुम जैसा मूर्ख और कहां मिलेगा मुझे ? यह कह कर रीछ उस पर झपट पड़ा। और उस का खून पी गया।

—मोहन निराश

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

व्यापारी का बेटा

पुराने जमाने में एक व्यापारी रहा करता था। उसके दो बेटे थे। दोनों जब बड़े हुए तो व्यापारी ने सोचा कि उन्हें अपने साथ ले जाकर कुछ दुनिया-धंधे की बातें सिखाये। यह व्यापारी व्यापार के हेतु दूर-दूर के देशों को जाया करता था। अपनी स्त्री से बोला, मैं दोनों लड़कों को अपने साथ ले जाऊंगा और अपने जीते-जी सिखलाऊंगा कि क्या करना-धरना चाहिए। स्त्री बोली, ठीक है, लेकिन इस वर्ष तुम एक ही बेटे को साथ ले जाओ, एक को यहीं मेरे पास रहने दो ताकि मैं अकेली न हो जाऊं। व्यापारी को अपनी स्त्री की बात मान लेनी पड़ी। वह बड़े लड़के को साथ लेकर व्यापार का माल उठाये एक देश को चल पड़ा।

कथा गुरु का कहना है कि वहां पहुँचने के लिए एक समुन्दर को पार करना पड़ता था। व्यापारी ने सारा माल जहाज़ पर लदवा दिया और उस देश को रवाना हो गया। बीच समंदर में पहुँचने पर एक भयंकर तूफान उठा और व्यापारी का तो कहीं पता ही न चला पर उसका लड़का एक तख्ते पर पड़ा-पड़ा समुन्दर की लहरों पर बहता रहा। उसे कोई होश-हवास न था और इसी अवस्था में जाने कितने दिन वह पड़ा रहा। खाद्य-सामग्री उसके साथ थी। अन्त आंधी का एक प्रबल झोंका आया और वह किनारे से जा लगा। दो-तीन दिन के बाद उसे होश आया तो क्या देखता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
है कि वह किसी अनजाने देश में पहुंच गया है। न कहीं जहाज है, न ही उसके पिता का कुछ अता-पता। वह रो पड़ा। सोचने लगा, अब कहां जाऊं, क्या करूं ? यही सोचते-सोचते वह एक दिशा में चल पड़ा। चलते २ एक गांव में जा पहुँचा। वहां, उसने देखा कुछ किसान खेती कर रहे थे। उसे बड़े ज़ोर की भूख लगी थी अतः इन्हीं से ईश्वर के नाम पर खाने को कुछ मांगा। किसानों ने पूछा, ए नौजवान, तू कहां से आया है और तुझे कहां जाना है ? उसने बता दिया कि वह अमुक देश का है और उसके साथ इस प्रकार की दुर्घटना घटी। अब पता नहीं यह कहां आ अटका हूं ? उस ने कहा। किसान बोले, नौजवान, तू अब लौट कर वहां जा नहीं सकता। मार्ग में बीहड़-बियावान है, जिन्न और देव हैं। अब तू हमाये साथ रह। इन लोगों में से एक की कोई संतान न थी। उसने सोचा क्यों न इसे अपना बेटा बना लूं और अपने यहां रखूं।

व्यापारी का बेटा अब किसान बन गया। लगा खेती-बाड़ी करने। कहते हैं इस गांव में यह प्रथा थी कि फसल पकने के समय ज़मींदार अपना भाग लेने आता था और जो जी में आये उठा ले जाता था। बचा-खुचा कुछ थोड़ा बहुत किसानों के लिये भी रख छोड़ता था। दैव की करनी, उस वर्ष वहां वर्षा ही न हुई, अतः फसल भी न उपजी। पर ज़मींदार नित्य की भांति अपना भाग वसूलने आ धमका। किसान बेचारे बहुत गिड़गिड़ाये, पैरों पड़े कि भाई, अब की तो हमारे यहां कुछ उपजा ही नहीं। पर ज़मींदार कहां सुनता। उसने अपने नौकरों को आदेश दिया और वे लगे पकड़कर सब की पिटाई करने। बेचारे व्यापारी के बेटे की भी खूब कस कर पिटाई हुई। उसने सोचा यह कैसी आफत टूट पड़ी किस बला में वह आ फंसा। उसी दिन बिना किसी को खबर किये वह रात को वहां चुपचाप भाग चला।

भागते-भागते वह एक दूसरे देश में जा पहुँचा। उसने देखा कि वहां दूकानें अच्छी हैं, मकान भी अच्छे हैं, उसने सोचा जरूर यह एक अच्छी जगह होगी। वह वहीं रह कर कभी कोई नौकरी-चाकरी करने लगा तो कभी कोई काम-धंधा। एक दिन वह एक हलवाई की दूकान पर गया। हलवाई ने कहा, चल मेरे यहां

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
नौकर रह। व्यापारी के बेटे ने इसे अपना अहोभाग्य समझा। सोचा, चलो बुरा क्या है, भीख मांगने से तो कहीं अच्छा है। वह हलवाई के यहां नौकरी करने लगा। वह उसके घर का काम-काज भी किया करता और दूकान का भी।

एक दिन हलवाई ने दूध की कढ़ाही उबालने के लिए आग पर रखी। व्यापारी का बेटा उसके बच्चे को गोद में उठाये पास ही खड़ा था। तभी हलवाई किसी काम से बाहर चला गया। और उससे कहा कि वह दूध को देखे। दुर्भाग्य से हलवाई का बच्चा उसकी गोद से छूट कर उबलती कढ़ाही में जा गिरा। बच्चे का सारा शरीर ऊपर से नीचे तक झुलस गया और वह मर गया। व्यापारी के बेटे की मानो आधी जान ही निकल गयी। लौटने पर हलवाई को जब पता चला तो वह लगा छाती पीटने। व्यापारी के बेटे को पकड़ कर वह तत्काल राजा के पास ले चला और फरियाद की, दुहाई है सरकार, मैंने इस आदमी का कितना हित किया और बदले में इसने मेरे बच्चे को मार डाला। व्यापारी के बेटे ने अपनी ओर से बड़ी अनुनय-विनय की, बहुत गिड़गिड़ाया। हुजूर, मेरा कोई दोष नहीं है। लेकिन उसकी वहां सुनता कौन? राजा ने आज्ञा सुनाई कि उसे फांसी पर लटकाया जाए। इस पर हलवाई बोला, इससे तो मेरा जी कुछ ठण्डा हुआ नहीं। इसे ऐसा दण्ड मिलना चाहिए कि मैं अपनी व्यथा भूल सकूं।

कहते हैं उस देश में नगर की सीमा के बाहर एक अंधकूप था। जिसे सब से भारी दण्ड देना होता उसे इस अंधकूप में डाल दिया जाता। राजा की आज्ञा हुई कि व्यापारी के बेटे को भी इसी अंधकूप में डाल दिया जाए। व्यापारी का बेटा बेचारा फूट-फूट कर रोने लगा। सोचने लगा कि अब तो बस जान गयी समझो। इतने में जल्लाद आये और उसे उठा कर अंधकूप में डाल दिया। वह घायल तो हुआ, पर मरा नहीं।

कहते हैं कि एक नवयुवक वहां के वज़ीर की बेटी पर मोहित हो गया था। वह प्रतिदिन रात को इस वज़ीर की बेटी से मिलने आया करता। एक दिन भेद खुल गया और उसे पकड़ लिया गया। राजा ने उसे भी यही सज़ा सुनाई। उसे इस अंधकूप में डलवा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
दिया। अंधकप में गिरते ही वह बेचारा मर गया। यह देख व्यापारी के बेटे की मानों आधी जान निकल गयी। उधर वज़ीर की बेटी का भी इस युवक से प्यार था। उसने जब सुना कि इसे अंधकूप में डाल दिया गया है, अपने साथ काफी धन रखकर उसने पुरुषों का भेष बनाया और एक लट्ठ तथा एक रस्सा लिए रात को वहां जा पहुँची। उसने रस्सा अंधकूप में फेंका और आवाज दी, जल्दी चढ़ो, यही समय है। व्यापारी के बेटे ने यह आवाज सुनी तो उसे बड़ा विस्मय हुआ। उसने रस्से को पकड़ लिया और उस के सहारे अंधकूप से चढ़ा। वजीर की बेटी नें कहा, तुरन्त इस घोड़े पर चढ़ो। वह स्वयं भी एक घोड़े पर सवार हो गयी और दोनों रातों-रात वहां से भाग निकले। भागते-भागते वे किसी और शहर में जा पहुंचे। सुबह होने पर वजीर की बेटी की दृष्टि व्यापारी के बेटे पर पड़ी तो देखती क्या है कि यह तो दूसरा ही आदमी घोड़े पर बैठा है। उसे बेहद क्रोध आया और अपनी तलवार खींचकर वह उसे मारने वाली ही थी कि व्यापारी का बेटा कह उठा, भला मैंने क्या अपराध किया है। वहां तो तुम्हीं ने मेरे प्राण बचाये और अब यहां तुम्हीं मुझे मार डालोगी, ऐसा क्यों ?

मुझे तुम्हें उस अंधकूप से बाहर नहीं निकालना था, मुझे तो उस दूसरे युवक को निकालना था जिसे कल उसमें डाल दिया गया था। वजीर की बेटी ने उत्तर दिया।

वह आदमी तो अंधकूप में गिरते ही मर गया था।

यह सुन कर वजीर की बेटी ने तलवार वापस म्यान में रख ली और कहा, मैं तो उसी के लिये घर-बार सब छोड़ कर निकल पड़ी थी। खैर, अब मैं वापस तो जा नहीं सकती, इस लिये आज से मैं तुम्हारी हुई और तुम मेरे।

अब ये दोनों पति पत्नी बन गये और अपने अपने घोड़ों पर सवार हो आगे को चल पड़े।

इस देश का मंत्री भ्रमण करने के लिए निकला था। उसने साथ कुछ सिपाही भी लिए थे। वह एक मैदान में डेरा डाले हुए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
था और वहां के दृश्य का आनंद ले रहा था कि घोड़ो पर सवार वजीर की बेटी और व्यापारी का बेटा उसी ओर आ निकले। ज्योंही मंत्री की दृष्टि इन पर पड़ी उसने इन्हें अपने सैनिक भेजकर अपने पास लिवा लाया और लगा पूछ-ताछ करने। तुम लोग कहां से आये हो और तुम्हें कहां जाना है ? ये इधर-उधर की बाते बनाने लगे पर सच बात उनके मुंह से निकल न पाई। इस पर मंत्री का संदेह बढ़ गया। उसने सोचा ज़रूर ये कोई जासूस हैं और अपने सैनिकों को आदेश दिया कि इनकी तलाशी ले लें। वज़ीर की बेटी अब तक पुरुष वेश में ही थी। करे तो करे क्या। विवश होकर मंत्री से बोली, मैं अबला हूं, अपनी तलाशी नहीं दे सकती। मंत्री का संदेह और भी गहरा हो गया। वह जान गया कि दोनों असल में घर से भाग चले हैं। उसने दोनों को बन्दी बना लिया। वज़ीर की बेटी को देखकर उसका मन ललचा गया। "मुझसे विवाह कर लो।" उसने प्रस्ताव रखा। लेकिन वह न मानी, बोलीं, मेरा घर वाला मेरे साथ है। मंत्रीने इसे बन्दी ही रखा और व्यापारी के बेटे को अपने नौकरों से पिटवा कर वहां से निकलवा दिया। व्यापारी का बेटा बड़ा छटपटाया, पर करता क्या, मन्त्री का हुक्म था। बेचारा फिर दर-बदर भटकने लगा।

उधर वज़ीर की बेटी को अपने साथ विवाह की स्वीकृति देने पर मंत्री विवश कर देता है। आखिर उसने मन्त्री से कहा, मैं तुम्हारे साथ विवाह करूंगी, पर हमारी धार्मिक प्रथा के अनुसार तुम्हें अभी चालीस दिन प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। उसने मन में सोचा कि कौन जाने इस अवधि में ईश्वर कुछ चमत्कार करे और मैं इसके चंगुल से मुक्त हो जाऊं। मन्त्री इसे अपने घर ले गया और प्रतीक्षा करने लगा कि चालीस दिन कब बीतेंगे। व्यापारी का बेटा कभी यहां कभी वहां भटकता रहा। आखिर एक दिन वह एक मैदान में जा पहुंचा। वहां उसने देखा कि एक ब्राह्मण तपस्या कर रहा हैं।

"ओ भाई ! तुझ पर कौन सी विपत्ति आ पड़ी है ? तू रोता क्यों है ?" ब्राह्मण ने प्रश्न किया। व्यापारी के बेटे ने उसे अपनी राम कहानी कह सुनायी और बताया कि उस पर वहां के मन्त्री ने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

अन्याय किया है। एक तो उसकी स्त्री को ले भागा, दूसरे उसे अपने नौकरों से पिटवाया। ब्राह्मण को उस पर दया आ गयी। उसे एक टोपी और एक ध्वजा देते हुए वह बोला, "यह जो टोपी है, इसे पहनने पर तुम सब को देख पाओगे लेकिन तुम्हें कोई देख नहीं पायेगा। तुम इसे पहनकर मन्त्री के घर चले जाओ। वहां इस ध्वजा से सात बार उसके द्वार पर दस्तक दो और अपने घर वापस चले आओ।" व्यापारी का बेटा गया और उसने ऐसा ही किया।

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

उधर चालीसवां दिन समाप्त होने को आया था और मन्त्री को अब वजीर की बेटी से विवाह करना था। व्यापारी के लड़के ने जब ध्वजा से सात बार उसके द्वार पर दस्तक दी तो उसकी आंखें खुली रहते हुए भी अंधी हो गईं। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अब वह करे तो क्या करे ? ब्याह करे तो कैसे ? उसने वैद्य बुलाये उन्होंने बहुतेरा इलाज किया पर उसकी आंखों की रोशनी नहीं लौटी। वह विचारने लगा कि भला उसे यह सहसा क्या हो गया। उसने ज्योतिषियों से पूछना आरंभ किया। ज्योतिषियों ने अपनी अपनी पोथियां देखीं और उससे कहा कि अमुक मैदान में एक ब्राह्मण रहता है, उसीने यह छेड़ की है। तुम उसी के पास चले जाओ, वही तुम्हें ठीक कर सकेगा।

मंत्री अपने नौकरों को साथ लेकर ब्राह्मण के पास गया। सामने पहुँच कर बहुत गिड़गिड़ाया, बोला, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुमने मेरी आंखों की रोशनी छीन ली ? तूने दया को बिसारा और अत्याचार किया, यह उसी का दण्ड है। ब्राह्मण ने उत्तर दिया। आंखों की रोशनी चाहता है तो इस आदमी को इसकी स्त्री लौटा दे और क्षतिपूर्त्ति के लिये अपनी बेटी भी इसे दे दो। मंत्री ने बहुत विनती की, कहने लगा, इसकी स्त्री को मैं अवश्य इसे दूंगा, पर अपनी बेटी कैसे दूं ?

ब्राह्मण कुछ न माना, बोला, "तूने अपराध किया है अतः उसकी सज़ा तुझे अवश्य भोगनी है," मन्त्री भी न माना और अपने घर लौट आया। इलाज के द्वारा ही अपनी आँखें ठीक करा लूंगा उसने सोचा।

व्यापारी का बेटा ब्राह्मण से बोला, "यह आपने क्या किया ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
मुझ को तो बस अपनी ही स्त्री चाहिए। ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "तू चिन्ता मत कर, यह आदमी लौट कर फिर यहीं आ जायेगा।" इस दिन ब्राह्मण ने व्यापारी के बेटे को फिर मंत्री के यहां भेजा और वही आदेश देते हुए कहा, "जा इस ध्वजा से फिर उसके द्वार पर दस्तक दे।" व्यापारी के बेटे ने वैसा ही किया और लौट कर ब्राह्मण के पास आ गया। प्रातः जब मन्त्री नींद से जागा तो पाया कि वह पंगु हो चुका है। पुनः उसने ज्योतिषी बुलवाये। "हम क्या कर सकते हैं—उसी ब्राह्मण के पास जाकर अनुनय-विनय करो", उन्होंने फिर कहा। मन्त्री को जब कोई और उपाय न सूझा तो पालकी में बैठ कर गया उसी ब्राह्मण के पास। वहां ब्राह्मण ने उसे फिर वही करने को कहा—"तुमने अत्याचार किया है, उसकी सज़ा तुम्हें भोगनी पड़ेगी।" वह पुनः बोला। मन्त्री ने जब देखा कि अब कुछ नहीं होने का, उसने व्यापारी के बेटे को उसकी स्त्री लौटा दी और साथ में अपनी बेटी भी दे दी। ब्राह्मण ने व्यापारी के बेटे से कहा—"अपनी स्त्री तेरे लिए वैध है, पर इस मन्त्री की बेटी को अपनी बहन समझना।"

व्यापारी का बेटा भी भला अब कहां जाता। तीनों वहीं ब्राह्मण के पास रहने लगे। उससे बोले, "आप ही हमारे बाप हैं और हम आप की संतान।"

ब्राह्मण के पास स्थान-स्थान के लोग भेंट और उपहार लेकर आते थे। उसके पास काफी धन जमा हो गया था। ये लोग अब इसी सेवा में रत रहते और सुख का जीवन व्यतीत करते। इसी प्रकार समय बीतता गया। आखिर एक दिन ब्राह्मण मर गया। इन लोगों ने सोचा, अब भला हम यहां रह कर क्या करेंगे ? कौन हमारे पास भेंट-चढ़ावा लेकर आयेगा ? उन्होंने उसकी सारी धन-सम्पत्ति बटोरी और वहां से चल दिए। वे चल तो पड़े, पर यह तय न था कि वे कहां जायें। ऐसे में उन्हों ने देखा कि वहां से एक कारवां गुज़र रहा था। व्यापारी के बेटे ने उन लोगों से जाकर पूछा कि भई तुम्हें तो नहीं पता कि अमुक शहर का रास्ता किधर से है ? दैवयोग से यह कारवां भी उसी शहर को जा रहा था। जहां व्यापारी के बेटे का असली घर था। अतः वह भी उसके साथ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

हो लिया और दोनों स्त्रियों को साथ में लिये अपने घर जा पहुँचा। वहां देखा उसका सारा घर जैसे उजाड़ पड़ा था। वहां उसकी मां और उसका भाई थे। उसने उन्हें गले लगाया और अपनी सारी आपबीती सुनाई। मंत्री की लड़की का उसने अपने छोटे भाई से विवाह कर दिया। कर्ज़दारों का सारा कर्ज़ चुकाया। दोनों भाई अपनी-अपनी पत्नियों और मां के साथ सुखपूर्वक रहने लगे और अपना घर फिर बसाया।

—शशी शेषर तोषखानी

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मछुआ और तोता

कहते हैं एक गरीब मछुआ था। उसे कभी पूरा न पड़ता था। वह और उसकी पत्नी दोनों दिन-भर मछलियां पकड़ते और शाम को बेचने जाते, फिर भी वे पेट भरने को भी जुटा न पाते थे। एक ऐसा समय भी आया जब मछुए के जाल में कोई मछली नहीं फंसती। वह बेचारा लाख सिर पटकता पर सब निष्फल। अब इन्हें फाके लगने लगे। एक दिन वह किसी और नदी में मछलियां पकड़ने को गया। वहां एक बड़ी सी मछली उसके जाल में आ फंसी। मछुए की स्त्री ने कहा कि मछली को बेचा जाए, पर मछुआ कहने लगा कि नहीं इसे हम खुद खायेंगे। कल जो मछलियां पकड़ेंगे उन्हें बेचेंगे। उसकी स्त्री ने पकाने के हेतु मछली को काटना शुरू किया। उसका पेट चीरने पर उसमें से मछली के ही आकार का एक पत्थर निकल आया। मछुए ने उठाकर उसे नदी में फेंक दिया। ज्यों ही वह पत्थर पानी में पड़ा, वहां से एक तोता निकल आया। यह देखकर मछुए को बड़ा आश्चर्य हुआ। नाव को एक ओर ले जाकर उसने तोते को पकड़ लिया। देखने में यह तोता बड़ा अच्छा था। मछुए ने उसे एक पिंजड़े में डाल दिया और पालने लगा। तोता मनुष्य की तरह बातें करने लगा। यह देख मछुए को और भी अधिक आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा कि भला यह क्या रहस्य है। उसने तोते से पूछा, "बताओ यह क्या माजरा है?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education, Bantalab, Jammu

तुम कैसे पानी के बीच प्रकट हुए और मनुष्य की भांति बोलने लगे ?', तोते ने उसे अपना किस्सा सुनाना शुरू किया।

तोता बोला—"मैं एक जौहरी था, हीरे मोल लेता था और उन्हें बेचता था। यही मेरा धन्धा था। एक दिन एक व्यक्ति बोलने वाला तोता बेचने आया। मुझे वह तोता बहुत पसन्द आया और मैंने दस हजार मोहरें देकर उसे खरीद लिया। इस तोते को मैंने खूब पाला और इसे सिधा लिया। अब मैं इसे पिंजरे के बाहर भी रखने लगा। वह यहां-वहां उड़ कर चला जाता और वापस आ जाता। एक दिन वह इसी प्रकार उड़ गया और फिर उसका कुछ पता न चला। मैं ने सोचा शायद किसी जंगल में भाग गया होगा या फिर शायद उसे बिल्ली खा गयी होगी। कई दिनों बाद वह तोता अचानक लौट आया। मैंने उससे पूछा, बताओ इतने दिन कहां रहे ? यह बोला कि क्या बताऊं ? उड़ते उड़ते मैं एक नगर में जा पहुंचा। वहा मैंने एक बड़ा अचम्भा देखा। इसी कारण मुझे देर हो गई।

मछुये ने पूछा भला वह कौन सा अचम्भा देखा। इसने जवाब दिया कि उस तोते ने कहा कि मैं जब उस नगर में विचरण कर रहा था तो उड़-उड़ते राज महल के पास पहुंच गया। वहां देखा, एक खिड़की पर वहां की रानी बैठी हुई थी, बड़ी रूपमती और सुन्दर। दिन भर वह उसी खिड़की पर बैठी रही, शाम होने पर वह उठी और उठते-उठते कहने लगी, हाय ! क्या कोई ऐसा नहीं जो मेरी इस समस्या को सुलझा दे और मैं उसकी हो जाऊं ?

उस तोते ने मुझे बताया कि उसने देखा कि रानी की हर चीज़ सोने की थी। उसके नौकर-चाकर भी सोने के कपड़े पहने हुए थे। यह रानी स्वयं वहां राज्य करती है, मगर भाग्य को कोसती रहती है। प्रति-दिन मैंने उसे खिड़की पर बैठते देखा और शाम को उठते समय 'हाय, क्या कोई ऐसा नहीं जो मेरी इस उलझन को सुलझा दे और मैं उसकी हो जाऊं, कहते सुना।

तोते ने मछुये से कहा, "जब उस तोते ने मुझ से यह सब कहा तो मेरा भी दिल मचल गया। मैंने कहा मैं भी देखूं यह रानी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कौन है और उसकी समस्या क्या है ? मैंने उस तोते से कहा कि मुझे उस शहर में ले चले। तोता मुझे अपने साथ उस शहर में ले गया। आगे-आगे तोता और पीछे-पीछे मैं। हम मंजिल-दर मंजिल चलते रहे जब तक उस शहर में पहुंच गये। वहां पहुंचने पर मैंने उस तोते से पूछा कि भई तोते अब रानी के महल में कैसे प्रवेश करूं ? वह बोला कि उसे संदेशा भेजो, कि तुम उसकी समस्या को सुलझा दोगे। उत्तर में वह कुछ कहेगी तो मैं तुम्हें स्वयं बतलाऊंगा कि क्या करना है। मैं जब रानी के पास पहुँचा तो वह परदे की ओट से बोल उठी कि यहां एक मैदान है। हर आठवें दिन वहां एक मकान प्रकट हो जाता है। उसके बाद आदमियों की एक टोली वहां आती है। ये लोग लकड़ियां इकट्ठी करके मकान के बाहर रख देते हैं। लकड़ियों का ढेर जब आकाश को छूने लगता है, ये उसमें आग लगा देते हैं। उसके बाद उस मकान से एक स्त्री को बाहर निकालते हैं और उसे आग में डाल देते हैं। स्त्री बहुत रोती-चिल्लाती है, पर ये लोग कुछ नहीं सुनते। वह बेचारी आग में जल जाती है और ये आदमी तब गायब हो जाते हैं और यह आग भी। मैंने इसका रहस्य जानने के लिये कई बार अपने सिपाहियों को वहां भेजा, पर उन आदमियों ने मेरे सिपाहियों को मार डाला। तब मैंने यह शर्त रखी कि जो इस रहस्य का पता लगायेगा उसी से मैं विवाह करूंगी। वही यहां का राज्य संभालेगा। रानी ने मुझे बताया कि आज तक बहुतेरे आये पर कोई मेरी इस समस्या को सुलझा नहीं सका। जो भी वहां जाता है वह फिर लौट कर नहीं आता।

तोते ने मछुए से कहा कि यह सुनने पर मैंने जाकर उस तोते से बात की। उसने कहा, "तुम एक बात करो। अमुक पहाड़ पर एक मलंग बाबा रहता है, उसी के पास जाओ। उससे अनुनय विनय करो, वह ज़रूर कोई मार्ग सुझायेगा। आगे क्या करना है, यह मैं बतलाऊंगा।

तोते ने मछुये से कहा कि मैं उस मलंग बाबा के पास गया। मैंने देखा वह एक गुफा के भीतर बैठा भगवान की भक्ति कर रहा था। उसकी मैं खूब सेवा टहल करने लगा। ऐसे में उस मलंग

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
बाबा ने एक दिन मुझे से पूछा कि तुझे क्या चाहिए। मैंने झट से सब बता दिया। मैंने कहा कि यह समस्या मैं सुलझा सकूं, मुझे बस यही चाहिये। उत्तर में वह डपट कर बोला कि चले जा अपने घर। इन बातों में मत उलझ। मैंने भी हठ किया। मैं बहुत गिड़गिड़ाया, रोया और फिर उसकी सेवा करने लगा। आखिर एक दिन मलंग बाबा पसीजा। उसने मुझे एक झोला और एक डण्डा दिया। बोला, "अमुक जगह चला जा, वहां एक स्रोत है। डण्डा हाथ में पकड़ और आंखें मूंद कर उस सोत में उतर जा। वहां तुझे एक नया ही लोक नज़र आयेगा। वहां एक राजा है, उसका नाम है राजा इन्द्र। उसी के पास तू जा और यह झोला उस मेरी ओर से भेंट कर देना, किन्तु डण्डा मुझे फिर लौटाना होगा। उसी को तू यह सारा किस्सा सुना, वही तेरी समस्या सुलझायेगा।"

तोते ने मछुये से कहा कि अब मैं राजा इन्द्र के पास गया और उसे सारी बात बताई वह बोला कि मैं तुझे भस्म कर डालता, पर क्या करूं तुझे उस मलंग बाबा ने भेजा है। अब उसी के नाम पर वापस चला जा। मैं बोला, "मैं इतना सफर तय करके यहां आया हूँ। इतनी कठिनाइयां मैंने इस बात के लिए उठाई हैं। अब खाली हाथ वापस जाऊं तो कैसे ?" मैंने उससे बहुत अनुनय-विनय की। आखिर उसने बताया वह जो मकान तूने देखा है, तिलिस्म से बनता है। वे आदमी मेरे देव हैं; वह स्त्री मेरी बेटी है। वह एक देव पर मोहित हो गयी थी और उसी के साथ भाग गयी थी। मैं उसे पकड़ कर लाया, कहा कि बाज़ आ, मेरा नाम बदनाम मत कर। उसने मुँह फेर लिया और कुछ न कहा। इसीलिये मैंने उसके लिये यह सजा नियत की है। हर आठवें दिन उसे जलाया जाता है और वह फिर जीवित हो उठती है। यह कह कर उसने मुझे पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा दिया और कहा जब वह मकान प्रकट होगा, उसके साथ यह पत्थर का टुकड़ा छुला देना, अपने-आप तू उससे चालीस गज़ दूर छिटक जायेगा। जो मेरे कहे पर परतीत नहीं तो स्वयं देख ले क्या होता है।

तोते ने मछुए से कहा कि मैंने वह पत्थर का टुकड़ा ले लिया और मलंग बाबा के पास जा कर उसका डण्डा लौटाया। फिर मैं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
उस मकान के पास गया, पत्थर का टुकड़ा उससे छुआया और चालीस गज दूर जा टिका। वहीं से उस मकान की ओर देखता रहा। देखते-देखते उस पत्थर से प्रकाश फूटना शुरू हुआ। वह जगमगा उठा और मकान गायब हो गया। मैंने देखा एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री एक देव के साथ बैठी हुई है। यह सब देख लेने के बाद मैं लौट कर रानी के पास चला आया और उसे सब कह सुनाया। वह बोली कि कैसे समझूं तुम सच कह रहे हो या झूठ ? अब मैं भला उससे क्या कहता, फिर उसी तोते के पास चला गया और उससे सलाह मांगी। वह तोता कहने लगा कि जाओ, फिर उसी मलंग बाबा के पास जाओ। उसी से अनुनय-विनय करो। मैं फिर गया और बाबा से बहुत विनय करने लगा। बहुत समय तक उसकी सेवा करने के बाद उसने मुझ से कहा कि तू फिर राजा इन्द्र के पास चला जा। जाकर कह कि उस अपनी कन्या को अब क्षमा करे। मलंग बाबा ने मुझे फिर वही डण्डा दिया और अपनी टोपी दी। और कहा कि यह टोपी राजा इन्द्र के आगे डाल दे, किन्तु यह डण्डा वापस ले आना।

तोते ने मछुए से कहा कि मैं फिर राजा इन्द्र के पास गया उसके सामने मलंग बाबा की टोपी रख दी। उसने मुझ से फिर कहा कि तुझे मैं भस्म कर डालता, पर क्या करूं तुझे उस मलंग बाबा ने भेजा है। मैंने उसकी खूब मनुहार की। कहा कि अब अपनी बेटी की यह सजा माफ कर दो। मैंने उसे बहुत मजबूर किया और आखिर उसने मुझे वचन दिया। वह बोला कि जा, आज से मैं उसे यहीं बन्दी रखूंगा। अब न तो वह मकान ही पैदा होगा और न उस युवती को आग में जलाया जायेगा। राजा इन्द्र से यह वचन लेकर मैं ने मलंग बाबा के पास उस का डण्डा रख दिया और पहुँचा रानी के पास। उससे मैंने कहा कि यह तो राजा इन्द्र की कन्या है। जिसे आग में जलाया जाता था। और उसे मैंने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। मैंने उसे यह भी बता दिया कि अब उस युवती की सज़ा समाप्त हो गयी है। रानी ने कहा कि यदि यह सत्य है तो वह मकान वहां फिर पैदा नहीं होना चाहिए। अब हम उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं। जब वह मकान प्रकट हुआ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

करता था। उस दिन वह मकान पैदा ही न हुआ और न इन्सान ही। रानी मुझसे बोली, सचमुच तुमने मेरी शर्त पूरी कर ली है। अब मैं तुम्हारी हूं। मैंने उससे विवाह कर लिया और उस राज्य का राजा बन गया। अब मैं उस मलंग बाबा के पास भेंट-उपहार लेकर जाया करता। तोते को भी अपने साथ ले जाता। मलंग बाबा मुझ से बोला कि देख, तेरी समस्या अब हल हो गयी। अब इस तोते को अपने पास मत रख। इसे बेच दे उसका यह कहना मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने सोचा देखो कैसी अजब बात करता है। इस तोते ने ही मुझे इस कमाल पर पहुंचाया, इसी को मैं बेच डालूं, वाह! मैंने उस तोते को बेचा नहीं और अपने घर जा कर बैठ गया।

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तोते ने मछुए से कहा कि समय बीतता गया। मेरी स्त्री बीमार पड़ गयी। बहुत इलाज वगैरह कराने पर भी कुछ न हुआ। मैं मलंग बाबा के पास गया। वह बोला, "मैंने तुझ से कह दिया है तोते को बेच दे। यह तुझे कष्ट पहुंचायेगा। मुझे क्रोध आ गया। मैंने सोचा यह जाने क्या बकवास कर रहा है। तोते ने ही मुझे इस उत्कर्ष पर पहुंचाया है, वही भला मुझे कष्ट पहुँचायेगा। मैंने तोते को नहीं बेचा और इतने में रानी मर गयी। उसी के कारण मैं वहां राज्य करता था। वही मर गयी तो मैं सोचने लगा कि अब क्या करूं? तोते से पूछा तो वह बोला कि तुम्हें मैं फिर राजा बना दूंगा। चलो मेरे साथ आओ। वह मुझे एक नदी के पास ले गया। वहां पर एक पेड़ था। तोते ने मुझ से कहा कि इस पेड़ के पास खोदो। वहां से एक सन्दूक निकालना है। उसमें मोतियों का एक हार होगा, उसे निकाल कर मेरे गले में डाल दो। मैंने वहां पर खोदना शुरू किया। खोदते-खोदते जमीन में से एक सन्दूक निकल आया। उसमें से मैंने मोतियों की माला निकाल ली। ज्योंही यह माला मैंने उस तोते को पहनायी तो वह एक देव बन गया। उसने फूंक मारी और मुझे पत्थर का एक टुकड़ा बना दिया। फिर मुझे नदी में फैंक दिया। वहां मुझे एक मछली निगल गयी। छः महीने मैंने उस मछली के पेट में पड़े-पड़े बिताये पता नहीं अब मैं कैसे यह तोता बन गया। ?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तोते ने मछुए से कहा कि यदि तुम मुझे उसी मलंग बाबा के पास ले जाओगे, वह मुझे दुआ देगा और मैं इस कष्ट से मुक्त हो जाऊंगा। मछुए को यह सुनकर उस पर दया आ गयी। उसे पिंजरे में रखकर वह उस मलंग बाबा के पास ले गया। राह में उसे एक अपाहिज मिला। अपाहिज मछुए से बोला, "हे मनुष्य तुम्हें इस तोते को लेकर अमुक मलंग बाबा के पास जाना है। वहां उससे मेरी भी कहना। काफी विनती करना मेरी ओर से। कहना मुझे इस कष्ट से अब मुक्ति दिलायें। मछुआ हैरान हो गया। उसने पूछा कि तुम्हें कैसे पता चला, मुझे मलंग बाबा के पास जाना है? अपाहिज बोला कि मुझे इस तोते की सारी कथा मालूम है। यह कौन था और क्या होगया है, सब जानता हूं। मैं स्वयं उसी मलंग बाबा के पास था। उसने इससे कहा था कि उस तोते को बेच दे क्योंकि वह एक देव था। उस देव को मलंग बाबा ने सजा दी थी और वह तोता बन गया था। इसने मलंग बाबा की बात नहीं मानी इसी से वह सज़ा इसे लग गयी। अपाहिज कहता गया कि खुद मुझे भी यही हुआ। एक बार मैंने भी उसकी बात नहीं मानी, तभी मेरा यह हाल हुआ। उसने मछुए से अनुरोध किया कि बाबा के पास तुम जब पहुँचोगे तो मेरी ओर से भी विनती करना।

यह सुनकर मछुआ मलंग बाबा के पास गया। वहां पहुंच कर तोते और अपाहिज की ओर से अनुनय-विनय करने लगा। मलंग बाबा ने फूंक मारी और तोता फिर अपने असली रूप में आ गया। उसने दुआ मांगी और वह अपाहिज भी भला-चंगा हो गया। जौहरी पुनः जौहरी बन गया। उसने मछुए को मालामाल कर दिया। मछुए का सारा दारिद्र दूर हो गया और वह चैन से रहने लगा।

—शशि शेखर तोषखानी

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

चिड़िया और चिड़िया के बच्चे

एक थी रानी। वह महल के झरोखे पर बैठ बाहर का दृश्य निहारा करती थी। इस झरोखे के निकट, बाहर एक चिड़िया का घोंसला था। उसमें थे चिड़िया के बच्चे। चिड़िया जब इनके लिये चूगा ले आती तो ये चिड़िया के बच्चे चीं चीं करके चिचियाते थे। रानी को चिड़िया के बच्चों का यूं चीं चीं करना बहुत अच्छा लगता था। इसलिये वह प्रतिदिन झरोखे पर बैठ इनका शोर सुना करती थी।

एक दिन रानी नित्य की भांति झरोखे पर बैठी। पर इस दिन उसे चिड़िया के बच्चों का चीं-चीं सुनाई न पड़ा। उसने सोचा यह बात क्या है? क्यों नहीं इनकी मां आज इनके लिये चूगा लेकर आती? ख्याल आया शायद ये अब बड़े हो गये होंगे और उड़ गये होंगे। किन्तु मन में उसके सन्देह बना रहा। दासी को बुला कर बोली कि चिड़िया के घोंसले में हाथ डाल कर देख उसमें कोई है या नहीं। दासी ने झरोखे से बाहर बांह निकाल कर उस घोंसले में हाथ डाला और वहां से चिड़िया के बच्चे बाहर निकले, किन्तु सबके सब मरे हुए। रानी को आश्चर्य हुआ वह दासी से बोली कि भला ऐसी कौन सी चीज है जिसे खाकर यह सब के सब मर गये। दासी से उसने इन चिड़िया के बच्चों के पेट खुलवाये और देखा कि सब के पेट में कांटे पड़े हैं। रानी दासी से कहने लगी, कि इनकी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
अपनी मां इन्हें चूग के बदले काटे तो खिलाती नहीं। वह मर गयी होगी या शायद किसी शिकारी पक्षी ने उसे मार डाला और इनके बाप ने दूसरा विवाह किया होगा। यह कहते-कहते उसने बाहर झांका तो देखा कि सचमुच एक दूसरी ही चिड़िया पेड़ पर बैठी हुई थी। चोंच में उसकी कांटा था। अब रानी को पक्का संदेह हो गया। उसका मन बड़ा दुःखी हुआ।

इस रानी के अपने भी तीन राज कुमार थे। चिड़िया के बच्चों की यह दशा देख कर उसके मन में उनका विचार आया और वह खो-सी गयी। तभी वह अपने कक्ष के सभी द्वार और खिड़कियां बन्द करके बैठ गयी। दरबार से निवृत्त होकर बादशाह जब वहां आया तो रानी को दर-दरवाज़े बन्द किये हुए पाया। रानी ने उसके लिये दरवाज़ा न खोला, बोली कि पहले मुझे एक वचन दो, तभी दरवाज़ा खोलूंगी। बादशाह को रानी का बड़ा प्रेम था। उसने वचन दिया कि जो रानी मांगेगी, वह दे देगा। जैसा कहेगी, करेगा। इस पर रानी ने द्वार खोल दिया। बादशाह के बैठते ही रानी कह उठी, कि पहले अपना वचन पूरा करो। बादशाह ने कहा कि बोलो; क्या चाहती हो? मैं अपना वचन पूरा करूंगा। चिड़िया और चिड़िया के बच्चों की सारी कहानी सुनाने के बाद रानी ने कहा कि मुझे वचन दो, यदि मैं तुमसे पहले मरूं तो तुम दूसरा विवाह नहीं करोगे। बादशाह ने वचन दे दिया।

समय बीता और आखिर एक दिन रानी मर गयी। बादशाह अब विधुर जीवन के दिन काटने लगा। दूसरा विवाह करता पर क्या करे वचन जो दिया था। दिन बीतते गये। सामन्त और मंत्री बादशाह पर बड़ा ज़ोर डालते हैं, कहते हैं कि मरे हुए के पीछे कौन मरा है? आखिर धीरे-धीरे वे उसे दूसरा विवाह करने के लिये राज़ी कर लेते हैं। बादशाह अपने वचन का पालन नहीं कर पाया और उसने दूसरा विवाह कर ही लिया। लेकिन तीनों राजकुमारों को उसने किसी सुदूर स्थान को भेज दिया।

कुछ समय बाद इस दूसरी रानी ने सुना कि बादशाह ने अपने राजकुमारों को उससे छिपा कर रखा है। सुनते ही वह तत्क्षण रूठ बैठी। बादशाह के यह पूछने पर कि वह किस बात पर रूठी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
है। वह बोल उठी कि तुम्हें क्या ? तुम्हें तो मैं अपनी शत्रु दिखाई दी हूँ जो अपने राजकुमारों को मुझ से छिपा कर रखा है। बस वह उसके पीछे ही पड़ गयी, कहने लगी कि तब तक मैं तुम्हारी स्त्री नहीं जब तक अपने बेटों को तुम मेरे पास नहीं ले आते। बादशाह विवश हो गया। उसने तीनों राजकुमारों को वापस बुला लिया।

राजकुमार लौट आये तो रानी ने उन्हें गले से लगाया, चूमा पुचकारा। राजकुमार भी उसे अपनी मां की दृष्टि से देखने लगे। ऐसे में एक दिन रानी ने बड़े राजकुमार से कहा कि आओ, मेरे साथ पांसे का खेल खेलो। रानी के मन में कुविचार उठा था। राजकुमार ने इनकार कर दिया। कहने लगा कि मां और पुत्र का आपस में पांसा खेलना उचित नहीं है। यह कह कर वह चला गया। तब रानी ने मंझले राजकुमार से कहा। उसने भी यही उत्तर दिया। तीनों राजकुमारों से जब उसे एक ही उत्तर मिला तो मन ही मन उसे बड़ा सदमा हुआ। उसी समय से उसने बीमार होने का स्वांग रचाया। बादशाह बड़ा चिन्तित हुआ। बहुत इलाज कराया गया, पीर-फकीर बुलाये गये पर रानी ठीक न हुई। आखिर विवश होकर बादशाह ने अपने राज्य के सब से बड़े हकीम को बुलाया। उसे हुक्म दिया कि रानी को ठीक कर दो। नहीं कर सकोगे तो तुम्हें मौत के घाट उतार दूंगा। हकीम बेचारे को प्राणों का भय व्याप गया। उसने देखा तो रानी को कोई रोग है ही नहीं। उधर रानी ने उसे चुपके से अपने पास बुलवाया और कहा कि देखो, बचना चाहते हो तो एक काम करो। बादशाह से कहो कि रानी को दिल की बीमारी है। यह तभी ठीक होगी जब उसे तीनों राजकुमारों के कलेजे खाने को मिलेंगे। फिर बोली, यदि तुम ऐसा करोगे तो एक तो तुम्हारी जान बचेगी, दूसरे मैं तुम्हें इनाम दूंगी। हकीम ने गनीमत समझा। तत्काल वह बादशाह के पास गया और उससे वही सब कहा। बोला कि इसके अतिरिक्त और कोई इलाज ही नहीं है। यह सुन कर बादशाह बड़ा दुखी हुआ, पर अपनी इस रानी का उसे बड़ा प्रेम था। उसने अपने मंत्री को बुलाया और उसे हकीम का बताया हुआ इलाज सुनाया। बादशाह ने कहा कि चुपके से तीनों राजकुमारों को किसी जगह ले

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
जाओ और उनके कलेजे निकाल कर रानी को दे दो। मन्त्री सयान था, तत्काल सब समझ गया। बादशाह के सामने उसने हामी भरी और तीनों राजकुमारों को अपने साथ ले गया।

मंत्री बुद्धिमान और स्वामिभक्त था। उसने राजकुमारों को सारा किस्सा कह सुनाया कि भई बात यों है। सौतेली मां तुम्हारी हत्या करवाना चाहती है। इसलिए तुम लोग रातों रात इस स्थान से भाग जाओ। जहां सींग समाये वहां जाओ, पर यहां मत रहो। उसने उन्हें अपनी ओर से मोहरों की एक थैली दे दी और इस नगर से बाहर कर दिया। तीनों राजकुमार नगर से भिन्न दिशा में भाग चले। मंत्र ने क्या किया, चुपके से तीन कुत्तों को मरवाया और उन्हीं के कलेजे निकलवा कर रानी को खाने को दिये। रानी ने कलेजे खा लिये और भली-चंगी हो गयी उसने समझा तीनों राजकुमार मर गये। उधर राजकुमार अपना सफर कर रहे थे।

भागते-भागते वे एक देश में पहुँच गये। वे रास्ते में चल रहे थे कि वहां से एक व्यक्ति भागता हांफता हुआ आया। उसका मेढ़ा खो गया था। राजकुमारों के निकट पहुंचने पर उसने उनसे पूछ कि भई, तुम्हें कहीं कोई मेढ़ा तो नहीं दिखाई दिया? बड़ा राजकुमार बोल, "काले रंग है तुम्हारा मेढ़ा?" यह व्यक्ति उछल पड़ा, कहने लगा, "हां-हां काले रंग का ही है। बताओ कहां देखा तुमने?" राजकुमार ने कहा कि मुझे तो कुछ मालूम नहीं। तुम्हारा मेढ़ा मैंने नहीं देखा। पर यह व्यक्ति कहां छोड़ने वाला था। बोल, "मैं कैसे मानूं? जरूर तुम्हीं ने लिया होगा।" उसने राजकुमार की बांह पकड़ ली अपने साथ ले जाने लगा। कहने लगा, "मुझे अपना मेढ़ा लौटा दो।" इसी बीच एक और आदमी वहां भागता हुआ आया। राजकुमारों के निकट पहुंचने पर वह बोला, "भाइयो मेरा ऊंट खो गया है, तुम लोगों ने उसे यहां कहीं देखा तो नहीं?" मंझले राजकुमार ने कहा, "क्यों भाई, तुम्हारा ऊंट बाईं आंख से काना है क्या?" यह आदमी खुश हो गया। कहने लगा, "वही, वही तो मेरा ऊंट है। तुमने उसे कहां देखा?" राजकुमार ने कहा, "मुझे कुछ मालूम नहीं। मैंने तुम्हारा ऊंट नहीं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

देखा है।" इस आदमी ने उसे गिरेबां से पकड़ लिया। कहा, "तब तो तुम्हीं चोर हो। तुम्हीं मेरा ऊंट ले गये हो।" तभी वहां एक और आदमी दौड़ता हुआ आया। उसकी स्त्री भाग गयी थी। इस ने भी उनसे पूछा, "आप लोगों ने किसी स्त्री को यहां से जाते हुए तो नहीं देखा?" छोटा राजकुमार बोला, "तुम्हारी स्त्री गर्भवती तो नहीं?" लक्षण को एक दम सही देख यह आदमी कह उठा, "यह बताओ, तुमने उसे कहां देखा?" राजकुमार ने कहा, "मैंने उसे नहीं देखा है। बस यों ही पूछा।" पर यह व्यक्ति छोड़े जब न। तीनों व्यक्तियों ने खूब ओ-हल्ला मचाया। बहुत से लोग वहां जमा हो गये। सभी कहने लगे कि ये लोग तो ठग हैं। सब को ऐसे ही ठगेंगे। किसी को पता न था कि ये तो राजकुमार हैं।

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

इन तीनों राजकुमारों को पकड़ कर लोग वहां के बादशाह के पास ले गये। सबने अपनी-अपनी फरियाद सुनायी। एक ने कहा, "मेरा मेढ़ा खो गया है।" दूसरा बोला, "मेरा ऊंट गुम हो गया है।" तीसरे ने गुहार मचायी, "मेरी स्त्री को ले भागे हैं।" बादशाह ने राजकुमारों से बयान लिया तो सब से बड़ा राजकुमार बोला, "मैं कोई चोर नहीं हूं। अब रहा मैंने इससे कैसे कहा कि इस का मेढ़ा काले रंग का है। सो, बादशाह सलामत चलते-चलते राह में मैंने एक जगह कांटों की झाड़ी में काली ऊन के थोड़े से रोंये उलझे हुए देखे। मैंने जब सुना कि इस आदमी का मेढ़ा इसी रास्ते भाग गया है, मैंने झट अनुमान लगाया कि इसका मेढ़ा काले रंग का होगा। अन्यथा मैंने इसका मेढ़ा कहीं देखा तो था नहीं।"

बादशाह ने मंझले लड़के का बयान लिया तो वह बोला, "बादशाह सलामत, राह चलते हुए मैंने देखा कि सड़क की दाईं ओर जो पेड़ थे उनके पत्ते और छोटी-छोटी टहनियां तो चरी गयी थीं, पर बाईं ओर के पेड़ों के सारे के सारे पत्ते मौजूद थे। मैंने जब सुना इस व्यक्ति का ऊंट भाग गया है, मैंने आप ही अंदाज़ा लगाया कि वह बाईं आंख से काना रहा होगा तभी उसने केवल दाईं ओर के पेड़ों के पत्ते चर लिये थे। बाईं ओर के पेड़ उसे दिखाई न दिये होंगे। तीसरे राजकुमार ने भी अपना बयान देते हुए कहा,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

"बादशाह सलामत, राह चलते-चलते मैंने देखा सड़क की एक ओर किसी मनुष्य के बैठने का एक निशान था। शायद कोई वहां सुस्ताने को बैठा था। उठते समय उसने एक हाथ से जमीन का सहारा लिया था। यह देखकर मुझे विचार आया कि यह कोई मज़दूर-वजदूर रहा होगा जो वहां बैठ सुस्ताया था। बोझ के कारण उठती बार उसने जमीन पर हाथ टिकाये होंगे। बाद में जब इस आदमी ने कहा कि इसी रास्ते से इस की स्त्री भाग गयी है, तो मैंने तत्काल सोचा कि वह गर्भवती रही होगी। चलते-चलते वह थक गयी होगी और वहां बैठ सुस्तायी होगी। वरना बादशाह सलामत, इस की स्त्री मुझे कहीं दिखाई तो नहीं दी न मैं कोई चोर हूं।"

बादशाह ने जब तीनों राजकुमारों के बयान सुने तो उनकी बुद्धि देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया। सोचा, ये जरूर किसी ऊंचे घराने के होंगे। उसने फरियादियों को जाने को कहा और इन से बोला, "आज तुम लोगों को हमारे यहां दावत है।" बादशाह ने महमान के तौर पर इन्हें अपने पास ठहराया और इनकी काफी खातिर की। उसने स्वयं रसोई का निरीक्षण किया और इनके लिए बढ़िया नेमतें बनवाई। जब ये बढ़िया व्यंजन उनके सामने परसे जा रहे थे बादशाह द्वार के पीछे छिप कर देखने लगा। उस ने सोचा, "देखूं तो ये किस ढंग से खाते हैं और आपस में क्या बातें करते हैं।"

खाते-खाते एक राजकुमार ने कहा—"बादशाह ने बहुत बढ़िया व्यंजन तो बनवाये, मगर कुत्ते के मांस के।" दूसरा राजकुमार बोला, "रोटियों से भी मुर्दे के मांस की बास आती है।" तीसरा कह उठा, "अरे मेरी समझ में यह बादशाह, बादशाह का नहीं किसी बावर्ची का बेटा है।" बादशाह ने ये बातें सुनीं तो आग बबूला हो गया। कहा, "अच्छा, तो मैं बावर्ची की संतान हूं। उसे बेहद क्रोध आया। सोचा, अन्दर जायें और तीनों को कत्ल कर दें। पर साथ ही इनकी बुद्धिमत्ता की बाद आयी। क्यों न आया पहले इनकी बातों की सच्चाई की जांच करना ठीक रहेगा। यह सोचा, वह दौड़कर रसोई घर में घुसा। लगा रसोइये को डपटने और उससे पूछताछ करने, "सच-सच बता, जिस बकरे का

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

मांस पका है, इसमें क्या नुक्स था ? वरना मैं तुझे मार डलूंगा। वह बेचारा थर-थर कांप उठा। दोनों हाथ जोड़ कर बोला, "हुज़ूर बादशाह सलामत, मैं सच-सच बताता हूं, फिर चाहे आप मारें या रखें। इस बकरे की मां उसे जन्म देते ही मर गयी थी। उसके साथ सामने के आंगन में एक कुत्तिया ने भी बच्चे दिगे थे। यह भी बड़ा होने तक उसी का दूध पीता रहा।" बादशाह समझ गया कि क्यों मांस में कुत्ते की बोटियों का स्वाद था। इसी प्रकार उसने उस आदमी को बुलवाया जिस के पास से आटा मंगाया गया था। बादशाह ने उससे पूछा, "क्यों बे, आटे से मुर्दे के मांस की बू क्यों आती थी ?" वह आदमी प्राण भय से कांप उठा। कहने लगा, "बादशाह सलामत आटे में कोई नुक्स नहीं था। हां, एक बात ज़रूर है। यह गेहूँ मैंने कब्रिस्तान के इलाके में बोया था। हो सकता है उसी का कुछ असर हो।" यह सुनकर बादशाह को पूरा विश्वास हो गया कि शहज़ादों का कहना सच था। दो बातें सच निकलीं तो वह समझ गया कि ज़रूर तीसरी बात भी सच होगी। अब उसे धैर्य कहां ? दौड़ा-दौड़ा मां के पास गया और उससे पूछा, "सच-सच बताओ अम्मा, कौन है मेरा बाप ?" मां बोली, "बेटे यह कैसी बात करते हो ? तुम्हारे बाप बादशाह थे।" पर यह कहां मानने वाला था। बोला, "यदि तुम मुझे सच-सच नहीं बताओगी तो मैं या तुम्हें मार डालूंगा या आत्म-हत्या कर लूंगा। बादशाह की मां जब बहुत मजबूर हुई तो बोली, "बेटे तो फिर सुनो सच्ची बात ! मेरे बस बेटियां ही बेटियां होती थीं। यह बात बादशाह को बहुत बुरी लगी। वह मुझ से बोला, अगर फिर तुम्हारे लड़की हुई, तो मैं तुम्हें मार डालूंगा। भाग्य की करनी, उस बार भी मेरे लड़की ही हुई। अब मैं क्या करती। मैंने अपनी दासी से कहा कि दैव ने मुझे बचाना था। बादशाह की बाबर्चिन का भी उसी दिन प्रसव हुआ था। उससे तुम पैदा हुए थे। दासी ने उठा कर मेरी लड़की बाबर्चिन को दे दी और तुम्हें मेरे पास रख गयी। बादशाह को सूचना दी गयी कि लड़का हुआ है।"

बादशाह ने जब यह सुना तो कहा कि राजकुमारों ने कुछ

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

झूठ नहीं कहा है। मैं सच-मुच बावर्ची का बेटा हूँ। उनकी बुद्धि देखकर वह दंग रह गया। सोचा, मंत्री-पद के उपयुक्त हैं तो बस यही तीन। जाकर उसने उन्हें सब कुछ बता दिया। कहा, "आज तक तुम लोग मेरे मेहमान थे, आज से मेरे विशेष परामर्शदाता हुए।" राजकुमार बादशाह के खास आदमी बन गये। इनका काम था दिन में बादशाह को परामर्श देना और रात को पहरा देना। तीनों भाइयों ने बारी-बारी से बादशाह के यहां पहरा देना शुरू किया।

एक दिन बादशाह और उसकी मलिका अपने महल में सोए हुए थे। हाथ में तलवार लिये बड़ा राजकुमार पहरा दे रहा था। तभी उसने देखा कि एक बड़ा सा अजगर छत से उतर कर बादशाह के पलंग की ओर आ रहा है। यह देखते ही राजकुमार ने अजगर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और उनका ढेर मलिका के पलंग के नीचे रख दिया। अजगर को मारते समय खून के कुछ छींटे मलिका के वक्षस्थल पर जा गिरे। राजकुमार ने यह देखा तो सोचने लगा कि कैसे मलिका के वक्षस्थल से इन खून के छींटों को पोंछ डालूं। यदि हाथ से पोंछूं तो वैसा करना उचित नहीं होगा। उसने क्या किया, रूई का एक छोटा सा टुकड़ा जेब से निकाला और उसे तलवार की नोक पर लपेटा। उसीसे वह रानी के शरीर पर से ये खून के छींटे पोंछने लगा। इससे रानी एकदम जाग गयी। ज्यों ही उसने आंखें खोलीं अपने वक्षस्थल पर नंगी तलवार देखी। वह समझी सेवक की नीयत बिगड़ गयी है। इसने बादशाह को मार डाला है और अब मुझे मारने जा रहा है। वह बादशाह के चिकौटियां काटने लगी बादशाह जाग गया और तभी राजकुमार का पहरा समाप्त हो गया और वह चला गया। मलिका ने बादशाह को सारा हाल कह सुनाया। इतने में पहरा देने दूसरा राजकुमार आया। उसके भीतर प्रवेश करते ही बादशाह ने उससे प्रश्न किया कि यदि कोई अपने स्वामी से विश्वासघात करे तो उसके साथ क्या व्यवहार करना चाहिए। राजकुमार ने उत्तर दिया, "हज़ूर उस का सिर धड़ से अलग कर देना चाहिए, उसे भूसी की आग में जला डालना चाहिए, उसे नगर से निष्कासित कर देना चाहिए। लेकिन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
जांच कर लेने के बाद।', बादशाह बोला, "उसका क्या मतलब ?" इस पर राजकुमार ने उसे एक किस्सा सुनाया। पहरा देकर यह राजकुमार चला गया तो सबसे छोटा राजकुमार भीतर आया। बादशाह ने उससे भी यही प्रश्न किया। इस राजकुमार ने भी वही कहा जो मंझले राजकुमार ने कहा था। और एक किस्सा सुनाया। बड़े राजकुमार की बारी फिर आई। बादशाह ने उससे भी वही प्रश्न किया। उसने भी वही उत्तर दिया और जांच करने की आवश्यकता पर एक किस्सा कह सुनाया। ये तीनों कथायें आगे दी जा रही हैं।

—शशि शेखर तोषखानी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ख्वाजा साहब का कुत्ता

दण्ड देने से पहले जांच करने के विषय पर मंझले राजकुमार ने बादशाह को यह किस्सा सुनाया :—

"एक थे ख्वाजा साहब। समय के फेर से बेचारे बड़े विपन्न हो गये। उनके पास एक बन्दूक और एक कुत्ते को छोड़ कुछ भी न रहा। बन्दूक और कुत्ते को लेकर ये अब शिकार को जाया करते। इस तरह जो मिलता उसी पर गुज़ारा करते। एक दूसरे ख्वाजा साहब ने एक दिन उनका यह हाल देखा। उन्होंने मन ही मन सोचा, "सचमुच यह दुनिया किसी की नहीं। देखो, ये ख्वाजा साहब कैसे थे और अब कैसे खाक में मिल गये हैं।" उनके मन में दया उमड़ आयी। सोचा, "इसकी मैं कुछ सहायता करूंगा, पर करूं किस ढंग से?" यही सोचते हुए वे उनके यहां गये और बोले, "आपके पास यह जो कुत्ता है न, मुझे बड़ा पसन्द है।" फिर एक रकम सामने रखकर कहा कि यह मुझे कीमत पर दे दें। निर्धन हो चुके ख्वाजा साहब को विश्वास नहीं आया। उन्होंने सोचा कि यह कुत्ता मेरे किस काम का है। उन्होंने रुपये ले लिए और गले में रस्सी डाल कर अपना कुत्ता उन्हें दे दिया। पैसे वाले ख्वाजा कुत्ते को लेकर अभी गये ही थे कि इन ख्वाजा साहब के घर कर्ज़दार आ धमकते हैं। कहते हैं कि तुमने अपने कुत्ते को एक खासी रकम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Pandit Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में बेच दिया है, अब सूनिये हमारा पैसा। कर्ज़दारों ने वह सारी की सारी रकम इनसे ऐंठ ली और ये बेचारे पहले की भांति खाली हाथ के खाली हाथ ही रहे। अब क्या हो! उन्होंने फिर बन्दूक संभाली लगे फिर शिकार से रोजी कमाने। इसी भांति वे अपने दिन कटने लगे।

इधर कुछ काल बाद उन धनवान ख्वाजे के घर रात को चोर घुसे। जो कुछ उनके पास था सब ले गये। उसे खाक में मिला दिया। सुबह जब उन्हों ने देखा कि चोरों ने खुजलने को नखून भी न छोड़ा है, तो वे बड़े दुखी हुए। कुत्ते की ओर देखकर बोले कि अबे ओ कुत्ते, कुछ न सही तो तू कूं-कू तो करता। शायद मैं जाग पड़ता और मेरी सब सम्पत्ति न ले जाते। उत्तर में कुत्ते ने मुंह से उनका दामन खींचा और कुछ दूर तक दौड़ा कर गया। किन्तु लौटा तो फिर दामन खींचा। ख्वाजे की समझ में कुछ न आया। उन्होंने मन में सोचा कि वास्तव में उस ख्वाजे का दलिदर मुझ से चिपक गया। वहां बहुत से लोग एकत्रित हो गये थे, वे ख्वाजे से कहने लगे कि भाई, कुत्ते को शायद पता है कि तुम्हारा माल कहां है, इसी से वह तुम्हारा दामन खींच रहा है। शायद कहना चाहता है कि मेरे पीछे-पीछे चलो। ख्वाजा साहब ने सोचा चलो देख आएं क्या बात है। वे कुत्ते के पीछे-पीछे हो लिये और कुत्ता आगे-आगे दौड़ने लगा। आखिर चलते-चलते एक जंगल में पहुंचने पर कुत्ते ने एक जगह अपने पंजों से जमीन को खुरचना शुरू किया और ख्वाजा साहब का दामन पकड़ कर वह उस जगह ले गया। ख्वाजा साहब अब स्वयं वहां पर खोदने लगे। खोदते-खोदते वहां से उनका सारा चोरी हुआ माल बरामद हुआ। यही नहीं वहां से बेशुमार दौलत निकली। इसे चोरों ने इस स्थान पर गाड़ के रखा था। ख्वाजा ने सोचा यह सब तो अब उन्हीं का है, अतः सारी दौलत बटोर कर वे अपने घर ले आए। अब वे पहले से भी कई गुणा अधिक दौलतमन्द बन गये।

अब इस ख्वाजा साहब को ख्याल हुआ कि यह कुत्ता तो सच-मुच बड़ा मूल्यवान है। सोचा कि मैंने तो उस ख्वाजे को इस का पूरा मूल्य दिया ही नहीं। तत्काल उन्होंने एक बड़ी रकम की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
हुण्डी लिख कर कुत्ते के गले से बान्ध दी और उसे उन ख्वाजाके घर भेज दिया। उधर वे दलिधर के मारे ख्वाजा साहब शिकार से लौट कर घर आ रहे थे। घर के निकट पहुंचे तो देखा उनका कुत्ता दौड़ कर आ रहा है। उन्हों ने समझा शायद यह मालिक के यहां से भाग कर आया है। वह यदि इसे ढूंढता हुआ यहां आया तो उसका सारा मूल्य वापस मांगेगा। भले-बुरे का विचार किये बिना ही उन्हों ने बन्दूक तानी और कुत्ते को मार डाला। उन्होंने ख्याल किया कि बला मारे इसके मरने के बाद कौन पूछेगा। पर साथ ही उन्हें शक हुआ कि कहीं उन्हें भ्रम तो नहीं हुआ। हो सकता है जिसे उन्होंने मार डाला वह किसी और का कुत्ता हो। पास आकर जब उन्होंने देखा उसके गले से एक बड़ी रकम की हुण्डी बन्धी हुई है। अब वे अपना सिर धुनने लगे। सोचने लगे कि हाए, यह मैंने क्या कर डाला। बिना देखे-सोचे मैंने ऐसे कुत्ते को मार डाला।

कथा समाप्त करके राजकुमार बादशाह से बोला, "तो हज़ूर, बादशाह सलामत, यदि वे ख्वाज़ा साहब पहले ठीक से जांच करते, बेचारा कुत्ता तो मारा न जाता।"

—शशि शेखर तोषखानी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बादशाह का तोता

दण्ड देने से पूर्व जांच करने के विषय पर छोटे राजकुमार ने बादशाह को यह कथा सुनाई—

"एक था बादशाह। उसके पास एक बोलने वाला तोता था। एक दिन की बात है कि तोता खिड़की पर लटके पिंजड़े में था। बाहर आकाश में तोतों का एक झुण्ड उड़ रहा था। इस तोते ने ज्यों ही उनकी ओर देखा, इसके आह निकल गयी। बादशाह ने यह देखा तो तोते से पूछा, "अरे तोते, तून क्यों आह भरी ?" तोता बोला, "आह नहीं भरूं तो क्या करूं ? वह देखो मेरे भाई कैसे खुश और खुशहाल दावत खाने जा रहे हैं। मैं भी यदि इन की भांति स्वतंत्र होता, मैं भी दावत खाने जाता।" तोते की बात से बादशाह कुछ प्रभावित हुआ, बोला, "अरे तोते, तुझे यदि मैं दावत पर जाने के लिए मुक्त कर दूं, तू लौटने पर मेरे लिए क्या लायेगा ? और हां, मुझे यह वचन भी देते जा कि तू दावत खाने के बाद अवश्य लौट आयेगा।" तोते ने लौट आने का वचन दिया और कहा कि एक बादशाह के लिए जैसी भेंट उचित है, लाऊंगा। बादशाह ने तोते को मुक्त कर दिया। तोता पंख फड़फड़ाता हुआ उड़ गया।

तोतों के राजा के यहां ब्याह था। वहां दुनिया भर के तोते

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
आये हुए थे। यह मनुष्य की बोली बोलने वाला तोता भी अपने बन्धुओं के बीच पहुँच गया। वहां दावत खा चुकने के बाद वह अपने स्वामी के पास लौट आया और ज्यों अपना वचन पूरा किया। बादशाह के पास आने पर बादशाह ने उससे पूछा, "क्यों बे तोते, तू तो दावत खाकर आ गया, भला मेरे लिए क्या भेंट लाया ?" तोते ने अपनी चोंच से एक छोटी सी गुठली निकाल कर उसके सामने रख दी। बादशाह ने कहा, "तोते, तू यह क्या ले आया है ? मेरा तो विचार था तू कोई अच्छी सी भेंट लायेगा।" तोता बोला, "मेरे स्वामी, मैं कोई घोड़ा-गधा तो हूं नहीं कि भारी बोझ लाद कर ले आता। जो ला सका, ले आया।" बादशाह ने कहा, "इस गुठली का मैं क्या करूंगा।" तोता बोला, "स्वामी, इस गुठली को बो दीजिए। इससे वृक्ष उगेगा जो गर्मियों में ठण्डक पहुँचायेगा और जाड़ों में गर्मी। जब बड़ा होगा इस में फल लगेगा। जो कोई भी इसका फल खायेगा वह सौ साल का हो, सात का हो जायेगा।" इस बादशाह की भी आयु काफी हो आई थी। उसने सोचा, वाह, मुझे और क्या चाहिए ? भला उसी समय उसने वह गुठली अपने बाग में बोने के लिए दे दी। उसकी रक्षा का पूरा प्रबन्ध किया गया। समय बीतता गया और यह वृक्ष बढ़ता गया। एक दिन माली ने आकर बादशाह को सूचना दी कि पेड़ में फल लग गया है। यह सुनकर बादशाह बड़ा खुश हुआ। अपने मंत्री को साथ में लिये वह बाग में चला गया उसका फल खाने।

बादशाह के आगे-आगे उसका कुत्ता था। बाग में पेड़ के निकट पहुँचने पर उन्होंने देखा एक फल नीचे गिरा हुआ था। बादशाह का कुत्ता दौड़ कर गया और यह फल खाने लगा। उसने वह खाया ही था कि वह वहीं मर गया। बादशाह ने कुत्ते का यह हाल देखा तो उसे बेहद गुस्सा आया। मंत्री से बोला, "वास्तव में तोता बड़ा दगाबाज़ है। उसे ज़रूर मुझ से बैर है, तभी उसने मुझे यह विषैला फल खिलवाना चाहा।" वह तत्काल वहां से लौट चला और जाकर तोते की गर्दन मरोड़ डाली। तोता मर गया। बादशाह ने हुक्म दिया कि इस विष-वृक्ष को समूल उखाड़ दिया जाए। मंत्री ने कहा, "हज़ूर बादशाह सलामत, पेड़ ने हमारा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
क्या बिगाड़ा है। होने दीजिए एक विष-वृक्ष भी बाग में। क्या पता कभी काम आ जाए।" बादशाह ने मंत्री की सलाह मान ली और वृक्ष को बाग में रहने दिया गया। किन्तु किसी ने उसके साथ हाथ लगाने का भी साहस न किया, उसका फल खाने की बात तो दूर रही।

समय बीतता गया। उस राज्य में एक बूढ़ा रहा करता था और रहती थी उसकी बुढ़िया। बूढ़ा बड़ी उम्र का हो चुका था। कमाने-काम करने का सामर्थ्य उस में रहा न था। उसकी बुढ़िया हर दिन उससे झगड़ा किया करती थी —घर में यह वस्तु नहीं है, वह वस्तु नहीं है। रोज़-रोज़ के इन झगड़ों से बूढ़ा बहुत तंग आ चुका था। एक दिन तो उसके जाने मन पर भी आगया। सोचने लगा, बला मारो, ऐसे जीने से तो मरना ही भला। बुढ़िया से बोला, "ले, तू ही यहां बैठ, मैं जाकर विष खा लूंगा।" यह कह कर वह बादशाह के बाग की ओर चल पड़ा। उसने सोचा कि वहां जो विष का पेड़ है, वह उसी का फल खायेगा और मर जायेगा। बूढ़ा चला गया और बुढ़िया उसके पीछे-पीछे छाती पीटती हुई दौड़ी।

बाग में पहुंचने पर बूढ़े ने ज्यों ही उस वृक्ष का फल खाया वह तत्क्षण जवान बन गया। उसे नया यौवन मिला। उसने अपने आप पर सिर से पांव तक नज़र डाली तो खुशी से उछल पड़ा और पुनः अपने घर की ओर चल पड़ा। बुढ़िया ने इस युवक को बाग से निकलते हुए देखा तो पूछा, "बेटे, वहां तुमने मेरे बुड्ढे को तो नहीं देखा ?" यह बोला, "अरी तू होश में है क्या ? वह तो मैं ही हूं।" बुढ़िया ने इसे गालियां दीं और कहा, "लाज नहीं आती जो बूढ़ी माई के साथ ठिठोली करते हो।" बूढ़ा लगा कसमें खाने, कहने लगा, "चल आ, तू भी यह फल खा ले, देख कैसे एक-दम जवान बन जायेगी।" बुढ़िया ने भी जब वह फल खाया वह भी एक छोटी लड़की बन गयी। अब चारों ओर यह बात फैल गयी कि बूढ़े और बुढ़िया ने विष-वृक्ष का फल खाया और दोनों फिर युवा हो गये। बादशाह ने भी यह सुना और सुन कर आश्चर्य चकित रह गया। उसने झट इन दोनों को पकड़ बुलाया और सारी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
बात पूछी। पूरा विश्वास होने पर उसने स्वयं भी वह फल खा लिया। खाते-खाते ही वह भी जवान बन गया।

कथा गुरु का कहना है कि उस दिन जो फल नीचे गिरा था उस पर एक अजगर ने अपनी लार टपकाई थी। इसी से वह कुत्ता मर गया। अब बादशाह हाथ मलने लगा कि उसने यह क्या किया, बेचारे निर्दोष तोते को मार डाला।

राजकुमार ने बादशाह से कहा—"यदि वह पहले बात की जांच करता, तोता तो न मरता।"

—शशि शेखर तोषखानी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बादशाह और बाज़

सब से बड़े राजकुमार ने भी दण्ड देने से पूर्व जांच करने की आवश्यकता पर ही बादशाह और बाज़ की कथा सुनायी—

"एक था बादशाह। एक दिन वह शिकार खेलने निकला। बहुत से नौकर-चाकर, सिपाही-लश्कर अपने संग ले चला। शिकार खेलते-खेलते वह जंगल में बहुत आगे निकल गया। शिकार आगे-आगे भागा और बादशाह उसके पीछे-पीछे। दौड़ते-दौड़ते बादशाह थक गया। उसे प्यास भी बहुत लगी। आस-पास देखा तो वहां कोई नदी या जलाशय नज़र न आया। मारे प्यास के उसकी ज़बान सूख गयी। तभी उसने देखा एक चट्टान पर से बून्द-बून्द करके पानी टपक रहा है। उसने तुरन्त जेब से एक प्याला निकाला और उसके नीचे रख दिया। बादशाह के साथ उसका बाज़ भी था। बाज़ ने जब देखा कि बादशाह पानी से भरा प्याला पीने ही वाला है, उसने अपने पंख फटकार कर प्याला उलट दिया। बादशाह को बेहद क्रोध आया, मारे प्यास के उसका गला सूख गया था। तो भी वह बाज़ को कुछ न कर सका। प्याला फिर से पानी की उन टपकती बून्दों के नीचे रख दिया। वह बहुत बेचैन था कि प्याला जल्दी-जल्दी भर जाए। ज्यों ही प्याला भर आया और बादशाह उसे उठाने को ही था कि बाज़ ने उसे फिर गिरा दिया। बादशाह क्रोध से भभक उठा, पर बाज़ उसे बड़ा प्यारा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
था, अतः अब की भी उसे कुछ कर न सका। तीसरी बार भी जब बाज़ ने प्याला उलट दिया तो बादशाह आपे में न रह सका। उसने तुरन्त बाज़ को मार डाला। उसने समझा बाज़ वास्तव में उसका शत्रु था जो उसे तड़पा-तड़पा कर मार डालता।

इतने में बादशाह के अनुचर वहां आ गये। उन्होंने बादशाह को क्रोध से भभकता हुआ पाया। पूछने पर बादशाह ने बाज़ वाली सारी घटना कह सुनायी। वह प्यास से बुरी तरह से तड़पने लगा और अपने अनुचरों से बोला, "ठीक यही रहेगा कि तुम लोग उस स्थान से पानी ले आओ जहां पर इन बून्दों का स्रोत है। वे लोग तत्काल बून्दों का स्रोत ढूंढने चल पड़े। देखते क्या हैं कि ऊपर एक बहुत बड़ा अजगर धूप सेंक रहा है और उसके मुंह से लार बह रही है। यही बून्द-बून्द करके उस चट्टान पर से टपक रही थी। वे तुरन्त दौड़ कर बादशाह के पास गये, उसे सब बता दिया। वे बोले, "खुदा का शुक्र है कि आपने पानी पिया नहीं। वह तो एक भयंकर विषैले अजगर की लार है।" बादशाह ने जब यह सुना तो बहुत पछताया। सोचा, कि उसने यह क्या किया, व्यर्थ में बेचारे बाज को मार डाला।"

तीनों राजकुमारों के दृष्टान्तों को सुनकर बादशाह बोला, "अच्छा तो बताओ तुम क्योंकर मलिका के वक्षस्थल पर नंगी तलवार रखे हुए थे?" उत्तर में बड़ा राजकुमार बोला, "बादशाह सलामत जरा पलंग के नीचे तो देखें। उसके बाद मुझ से यह प्रश्न करें।" बादशाह ने जब देखा कि पलंग के नीचे टुकड़े-टुकड़े हुआ अजगर पड़ा है, उसकी चीख निकल गई। सारी घटना सुन लेने के बाद वह इन तीनों राजकुमारों की बुद्धिमत्ता पर बड़ा खुश हुआ। इस बादशाह के तीन लड़कियां थीं। तीनों का विवाह उसने इन तीनों राजकुमारों से कर दिया। विवाह खूब धूम-धाम से रचाया गया। बड़े-बड़े बादशाह, वजीर, सामन्त आदि भोज पर निमंत्रित किये गये। इस सम्बन्ध में तीनों राजकुमारों का पिता भी वहां भोज में उपस्थित था। उसने जब दूल्हों को देखा तो झट अपने बेटों को पहचान लिया। उन्हें देखकर वह घोर आश्चर्य में पड़ गया। उठकर उन्हें खूब गले से लगाया। सब हैरान हुए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
कि यह क्या बात है। राजकुमारी ने जब अपने पिता को अपनी सारी गाथा कह सुनाया, उसे चिड़िया और चिड़िया के बच्चों की याद आयी। उसी समय जाकर उसने उनकी सौतेली मां को मार डाला और अपने वफादार वज़ीर पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने स्वयं तीनों राजकुमारों का विवाह रचाया और तीन-तीन बहुओं को घर ले आया। अब उसके दिन सुख से बीतने लगे और चिड़िया और चिड़िया के बच्चे की बात उसे सदा याद रही।

—शशि शेखर तोषखानी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जैसा करोगे वैसा भरोगे

किसी जगह एक बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे। वे बहुत ही निर्धन थे। इनको दो समय का पूरा भोजन भी नहीं मिलता था। इनके पास जवान इकलौती बेटी थी। यह बूढ़ा और बुढ़िया रात दिन सोते जागते इस लड़की के बारे में सोचते रहते थे कि हम क्या करें, कैसे इस लड़की की शादी हो, कौन इसको ले जायेगा। बूढ़ा सुबह शाम मसजिद में जाता था और रोते रोते खुदा से प्रार्थना करता था कि ऐ खुदा मैं क्या करूं, कहां से इस जवान लड़की की शादी के लिये पैसे लाऊं। रो-रो कर खुदा से मांगता था।

एक दिन जब यह सजदे से फारिग हुआ तो मसजिद में से आवाज़ आई। ऐ बूढ़े तुम पौ फटते ही लड़की को साथ ले कर घर से निकल जाना और तुम्हारे घर में जो भी कुछ हो वह उसके साथ देना और जो पहले तुम्हारे सामने आये, लड़की उसके हवाले कर देना।

बूढ़ा जब घर वापस आया तो उसने बुढ़िया को मसजिद का वाका सुनाया। बुढ़िया ने सोचा पता नहीं कौन और कैसा आदमी मिलेगा। इस लड़की के भाग्य में क्या लिखा होगा। पर बाद में सोचने लगी। शायद खुदा इसी में भलाई सोचता होगा। उसने घर की सब चीज़ें टटोल लीं पर वहां पर कुछ न था। अन्त में एक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
हांडी में से थोड़े "जौ" मिले वह बूढ़ा ने एक फटी हुई रूमाल में बांध लिये और बूढ़े को दे दिये।

सुबह सवेरे पौ फटते ही बूढ़े ने लड़की का हाथ थामा और एक हाथ में यह रूमाल जिसमें थोड़े से "जौ" थे उठाया और चल पड़ा। चलते-चलते आगे बढ़ता गया पर कोई न मिला। आखिर और थोड़ी दूर चल कर उसे एक रीछ सामने आया। रीछ ने झुक कर बूढ़े को सलाम किया। बूढ़े ने सोचा यह रीछ ज़रा दयालू है। इसने लड़की को रीछ के हवाले कर दिया और "जौ" की रूमाल हाथ में दे दी, और खुद घर वापस आ गया।

बुढ़िया ने पूछा कौन हमारा दामाद बन गया। बूढ़े ने कहा रीछ सामने आया और मैंने लड़की को उसे सौंप दिया। बुढ़िया ज़ार-ज़ार रोने लगी और भाग्य को कोसने लगी। उसने सोचा रीछ लड़की को खा गया होगा।

मां की ममता महान होती है बुढ़िया लड़की को नहीं भुला सकी। उसने कुछ समय गुजरने के बाद बूढ़े को कहा जरा उस लड़की का पता करो। डर है कि वह जिन्दा न होगी। फिर भी पता तो करना चाहिए।

बूढ़े ने मान लिया उसने कहा मैं उसी जगह पर जाऊंगा जहां मुझे रीछ मिला था। हो सकता है कि कुछ पता मिले।

बूढ़ा चलता गया, जो "जौ" की पोटली उन्होंने लड़की को दी थी, उसके दाने उस फटी हुई रूमाल से नीचे गिर गये थे और उसके पेड़ उगे हुये थे। बूढ़ा इन पेड़ों के सहारे चलता गया और एक जगह जमीन में बड़ा छेद देखा। वह उधर से ही नीचे उतर गया। चलते २ वह पाताल पहुँच गया। रात पड़ने लगी, वह एक घर पर पहुंचा और उनसे जगह मांगी पहले उन्हों ने इन्कार किया, बाद में रात को जगह दे दी।

मकान मालिक ने बूढ़े से पूछा कि बूढ़े तुम कहां से आये हो और कहां जाना है ? बूढ़े ने अपनी लड़की की कहानी सुनाई और कहा मैं लड़की को बुलाने जा रहा हूँ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मालिक मकान उसकी दास्तान सुन कर हंस पड़ा और कहा वह रीछ नहीं था। वह इस पाताल का शाहज़ादा था। जिसने तुम्हारी लड़की के साथ शादी की है। बादशाह मर गया। अब उसका लड़का तख़्त पर बैठ गया। इसलिए तुम्हारी लड़की मलिका बन गई है।

बूढ़े को अन्दर से कुछ यकीन न आया। फिर भी वह महल की ओर चल पड़ा। दैवयोग से उसकी अपनी ही लड़की सामने आ गई। बापने बेटी को नहीं पहचाना। कहां गरीब लिबास और कहां शाही लिबास। पर लड़की ने बाप को पहचान लिया। उसे गले से लगाया। खुशी के आंसू बहने लगे। अपनी दासियों को हुक्म दिया कि बूढ़े को नहलाया जाये और शाही लिबास पहनाया जाये। ऐसा ही हुआ। फिर मलिका अपने बाप को बादशाह के पास ले गई। बादशाह ने भी अपने ससुर का बड़ा स्वागत किया। तीन दिन बूढ़ा महल में रहा और तीन दिन के बाद लड़की को कहा मैं वापस जाऊंगा पता नहीं बुढ़िया का क्या हाल होगा। लड़की ने बाप से कहा अपने दामाद से विदाई मांग लो और अगर वह कहेगा कि किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है. तो तुम कहना कि मुझे वह बकरी दे दो जो सोने का गोबर देती है।

बूढ़ा दामाद से विदाई मांगने के लिए गया। बादशाह ने बूढ़े से कहा किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है। बूढ़े ने बकरी मांगी। बादशाह ने दे दी।

बूढ़ा बकरी लेकर चल पड़ा और डेरे वालों के यहां रात को ठहर गया। खाना वगैरह खा कर डेरे वालों से कहा मैं नमाज़ पढ़ने जाता हूँ। इस बकरी का ख्याल रखना। इसको कसम न देना यह सोने का गोबर देती है। जब वह मसजिद में चला गया तो डेरेवाली बकरी को गौशाला में ले गयी और वहां पर कसम दिलाई कि रे बकरी तुझे उस खुदा की कसम है जिसने पैदा किया, सोने का गोबर दे दो। बकरी ने गोबर दे दिये। मकान वाली की नियत बदल गई। उन्हों ने बकरी को बदल दिया और दूसरी बकरी बूढ़े को दे दी।

बूढ़ा जब घर पहुंचा तो बकरी को बुढ़िया के हवाले किया,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
लड़की की सलामती की खबर सुनाई। बुढ़िया खुश हो गई और फिर जगह साफ करके बकरी को नीचे ले गई। बकरी को कसम दिलाई और कहा कि बकरी तुझे उस खुदा की कसम है जिसने पैदा किया, सोने का गोबर दे दें। पर बकरी ने न दिया बुढ़िया ने बहुत दफा कसमें दीं पर बकरी नकली थी। बुढ़िया ने बूढ़े से कहा, पता नहीं किस डाइन से मिलकर आये हो। हमारी लड़की को कहां रीछ ने जिन्दा रखा होगा बूढ़े ने बहुत कसमें कीं कि नहीं हमारी लड़की मलिका है पर बुढ़िया को यकीन न आया।

कुछ और समय बीतने के बाद बूढ़ा फिर लड़की के पास चला गया। रात को उसी मकान में ठहर गया। सुबह होते ही महल की तरफ रवाना हो गया। आगे फिर लड़की आई, कुशल मंगल पूछा और फिर नहला धुला कर महल में ले गई। तीन दिन और तीन रात बूढ़े ने पेट भर कर रंग २ के खाने खाये और लड़की को बकरी का हाल सुनाया। लड़की हैरान रह गई। आखिर जब बूढ़ा घर की तैयारी करने लगा तो लड़की ने फिर कहा अगर बादशाह तुम्हें पूछे कि क्या चाहिए, तो तुम कहना कि मुझे वह हांडी दे दो, जिस में रंग २ की न्यामतें तैयार हो जाती हैं। बूढ़ा दामाद के पास गया। दामाद ने चलते समय पूछा क्या चाहिए। बूढ़े ने कहा मुझे वह हांडी दे दो जिस में तमाम ज़ियाफतें तैयार हो जाती हैं। बादशाह ने हांडी दे दी।

रात को बूढ़ा फिर उसी मकान में ठहरा। खाना खा लिया और कहा मैं मसजिद में नमाज़ पढ़ने के लिये जाऊंगा और मकान वाली से कहा कि यह हांडी सम्भाल कर रखना, इसको जब कसम देते हैं तो यह तरह २ की न्यामतें पैदा करती है। बूढ़ा जब मसजिद में चला गया तो मकानवाली ने हांडी को कसम दी कि ऐ हांडी तुझे उस खुदा की कसम है जिसने पैदा किया, तू हमें पुलाव दे दे। हांडी ने पुलाव तैयार किया और सबों ने पेट भर कर खाया। इस बाबत भी मकान वालों की नियत बदल गई और उन्हों ने वह हांडी छिपा ली और नकली हांडी वहां रख दी। जब बूढ़ा वापस आया तो घर की तैयारी करने लगा मकान वाली ने उसे नकली हांडी दे दी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बूढ़ा जब घर पहुंच गया तो बीबी को पहले लड़की की खुशखबरी सुनाई और उसके बाद हांडी दे दी, और बताया इसको कसम देने से तरह २ की न्यामतें मिलती हैं, बुढ़िया ने हांडी को कसम दी ऐ हांडी तुझे उस खुदा की कसम है जिसने पैदा किया। हमें पुलाव दे दो। हांडी ने कुछ न दिया। फिर बुढ़िया बार २ सवाल करती रही मगर हांडी ने कुछ न दिया।

बुढ़िया को बहुत क्रोध आया उसने बूढ़े की एक न मानी। और कहा तुम किसी डाइन के पास जाते हो जो तुम्हें ठगती है।

कुछ समय बीत गया, बूढ़े ने फिर बुढ़िया को कहा कि मैं लड़की के पास जाऊंगा, पर उसने एक न मानी। आखिर बूढ़े ने उसे मना लिया और वह चला गया। रात को इसी घर में ठहरा और सुबह महल की तरफ रवाना हुआ। आगे फिर लड़की मिली, उसने अपने बाप से हाल चाल पूछा और बाप ने बकरी और हांडी का किस्सा सुनाया। लड़की ने हैरान हो कर कहा ऐसा नहीं हो सकता है। शायद रास्ते में तुम को कोई यह चीज़ें बदल देता है। तीन चार दिन लड़की के पास रहने के बाद बूढ़ा जाने की तैयारी में लग जाता है। लड़की कहती है जब तुम्हें दामाद पूछे कि किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है तो कहना मुझे वह "रस्सी और गज़ दे दो।" जब बूढ़ा दामाद के पास पहुँचा तो दामाद ने पूछा कि किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है। बूढ़े ने कहा मुझे "रस्सी और गज़ दे दो।" बादशाह ने ससुर की यह खाहिश पूरी की। जब बूढ़ा वापस निकला तो फिर इसी मकान में ठहरा और खाना खा कर मकान वाली से कहा कि मैं मसजिद के निमाज़ पढ़ने जाऊंगा। इस रस्सी और गज को सम्भाल कर रखना। मकान वाली को इसका शरफ बता कर चला गया। मकान वाली ने इस रस्सी को कसम दिया कि तू अपना शरफ दिखा। रस्सी ने सबों को बांध दिया, और गज ने मारना शुरू किया। जब बूढ़ा मसजिद से वापस आया तो वहां पर यह तमाशा देखा। उसने मकान वाली को बताया कि मैंने तुम को कहा था कि रस्सी के साथ हाथ न लगाना। आखिर मकान वाली ने हाथ जोड़े और बकरी तथा हांडी को वापस कर दिया। बूढ़े ने रस्सी और गज़ को रुकने के लिये कहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

बढ़ा हांडी तथा बकरी को लेकर घर वापस पहुंच गया। बुढ़िया को लड़की का कुशल मंगल सुनाया और मकान वाली की धोखेबाजी का किस्सा भी बुढ़िया को सुनाया। बुढ़िया ने हांडी को कसम दिलाई और हांडी ने रंग २ की जियाफतें दीं। फिर बकरी के पास गई। उसको भी कसम दी तो बकरी ने सोने का गोबर दिया जिस से वह मालामाल होकर आराम से जीवन गुज़ारने लगे।

—जया दर

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जंगलीराज

एक नगर में एक बादशाह था। यह बादशाह रोज़ प्रातः दरिया पर मुंह धोने के लिए जाता था। जब यह दरिया से मुंह धोकर वापस आता था तो आधे रास्ते पर इसकी रानी इसके राह में खड़ी होती थी। कुछ समय बीत गया, एक दिन जब यह मुंह धोकर वापस आया तो रानी उसकी राह में खड़ी न थी। बादशाह को बहुत क्रोध आया, कारण मालूम करने के बिना ही उसने अपने वजीर को हुक्म दिया कि रानी को जंगल में छोड़ दिया जाये।

रानी गर्भवती थी। गर्भ के भार से इसके लिए सीढ़ियों पर से उतरना और चढ़ना मुशकिल था। इसी लिए वह उस दिन राजा की राह में प्रतीक्षा न कर सकी और न राजा ने उसे पूछा। रानी ने जब यह आज्ञा सुनी वह ज़ार २ रोने लगी। उसने बादशाह को मनाने की कोशिश की पर बादशाह ने एक न सुनी।

गर्भिणी रानी जंगल में फिर रही थी। उसने एक बड़े पेड़ के खोखले में एक ऋषि और ऋषि पत्नी को देखा। वह रोते रोते उनके सामने आई। उन दोनों ने उसे सवाल किया कि तुम कौन हो कहां से आई हो और तुम्हें किस संकट ने घेरा है? रानी ने सारा हाल कह सुनाया। ऋषि और ऋषि पत्नी को इस पर दया आई और कहा हम कन्दमूल और पेड़ के सूखे पत्ते खाकर गुज़ारा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
करते हैं। अगर तुम भी इसी तरह हमारे साथ रहनी चाहती हो तो खुशी से रह सकती हो। रानी मान गई। ऋषि पत्नी भी गर्भवती थी। यह दोनों बड़े प्रेम से जंगल में गुज़ारा करने लगे।

कुछ समय के बाद रानी के बहुत ही सुन्दर बेटा पैदा हुआ जो पूरा राजकुमार दिखाई देता था। ऋषि ने उसका नामकरण किया और नाम "जंगलराज" रख दिया। कुछ समय और बीतने के बाद ऋषि पत्नी का भी बेटा हो जाता है और उसका नाम ऋषि कुमार रखा गया। इन दोनों बच्चों का लालन पालन बड़े प्यार से होता रहा। और यह दिन दुगनी रात चौगनी तरक्की करने लगे। ऋषि पत्नी जंगलराज को अपने बेटे से ज्यादा प्यार करती थी। इसी तरह रानी भी ऋषि पत्नी के बेटे को प्यार करती थी। अगर कहीं बच्चे आंख से ओझल हो जाते तो वह एक दूसरे के बच्चे के लिए पागल हो जातीं। ये दोनों बड़े होते गये।

एक दिन दोनों भाई माताओं के पास गये और कहा हम दोनों शिकार खेलने जायेगें। जब माताओं ने यह सुना तो वह डर गईं उनका दिल कांप उठा। मगर दोनों ने हठ ठानी, कुछ न माना, और अन्त में माताओं का आशीर्वाद लेकर शिकार के लिए चल पड़े। जब यह शिकार के लिये जंगल में पहुँच जाते हैं तो इनको तीसरा लड़का अपनी ही उमर का मिल जाता है। यह लड़का "जंगलराज" के बाप के वज़ीर का लड़का होता है। वह कहता है कि मैं भी शिकार खेलने के लिए आया हूं। अब यह तीनों चलते चलते एक तीन राहे पर पहुँच गये और आपस में सलाह करते हैं कि कौन किस रास्ते जायेगा। वज़ीरजादा दाहिनी तरफ से ऋषि कुमार बाईं तरफ से और जंगलराज सीधे रास्ते से चला गया। दिन भर शिकार ढूंढने के बाद शाम को तीनों ने उसी स्थान पर मिलना था। जंगलराज सीधे २ चलता गया। उसकी एक तालाब पर नजर पड़ी, जहां पर एक परी अपने साथियों के साथ शतरंज खेल रही थी। जब परी की नजर जंगलराज पर पड़ गई उसने तालाब में छलांग लगा दी और एक शीशे का टुकड़ा वहीं पर छोड़ गई। यह शीशे का टुकड़ा चमक रहा था। यह शीशा नहीं हीरा था। जंगलराज ने यह शीशा उठाया और वापस आने लगा। मन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
में परेशान था कि शिकार न मिला। चलते २ वह अपने साथियों के पास पहुंच गया। वज़ीरज़ादा और ऋषि कुमार दोनों शिकार लेके खड़े थे। जंगलराज ने यह शीशे का टुकड़ा वज़ीरजादे को दिखा दिया। वज़ीरजादा बहुत चालाक था, उसने हीरा पहचान लिया, उसने जंगलराज को अपना शिकार दिया और शीशे का टुकड़ा उससे ले लिया। यह शीशा लेकर वह सीधे बादशाह के पास पहुँच गया। बादशाह ने वज़ीरजादे को बदले में बहुत धन दे दिया।

दूसरे दिन सुबह होते ही यह तीनों इसी तीनराहे पर पहुँचे और अपने २ चुने हुए रास्ते से निकल पड़े। जंगलराज चलता गया और फिर उसी तालाब के पास पहुँचा। वहां पर परी उसी तरह शतरंज खेल रही थी। परी ने जब जंगलराज को देखा तो वह एकदम तालाब में कूद पड़ी और फिर शीशे का टुकड़ा वहां पर छोड़ गई। जंगलराज गया और उसने फिर वह शीशे का टुकड़ा उठाया और वापस आ गया। ऋषिकुमार और वज़ीरजादा फिर वहीं इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जंगलराज को आज भी शिकार न मिला। वजीरजादे ने शीशे का टुकड़ा उस से ले लिया और अपना शिकार उसको दे दिया। वजीरजादा फिर बादशाह के पास गया और यह टुकड़ा भी उसके हवाले कर दिया। आज बादशाह ने उसको धन से मालामाल कर दिया। वजीरजादा रोज़ बादशाह को एक २ हीरे का टुकड़ा देता था और बादशाह बदले में धन देता था। एक रोज़ बादशाह ने वज़ीरजादे को कहा कि वह शतरंज की पट्टी उठा कर इधर ले आए मैं भी शतरंज खेलना चाहता हूं।

आज जब वज़ीरजादा शिकार खेलने के लिए आया तो उसने जंगलराज को कहा। भाई आज मुझे बादशाह ने शतरंज की पट्टी मांगी हैं और कहा है अगर तुमने वह पट्टी न लाई तो मैं तुम को जान से मार डालूंगा। यह सुन कर जंगलराज असमंजस में पड़ गया। वजीरजादे के साथ उसका प्यार और मित्रता बढ़ गई थी उसने वजीरजादे को वचन दिया कि मैं जान की बाजी लगा कर यह काम करूंगा। और फिर यह तीनों शिकार के लिए चल पड़े।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
जंगलराज फिर तालाब पर पहुचा और परी उसी तरह शतरंज खेल रही थी। जब उसने तालाब में कूदना शुरू किया तो जंगलराज ने उसको कसम दी और कहा तुझे उस प्रभु की कसम है जिसने तुम को पैदा किया कि यह शतरंज की पट्टी वहीं पर रख दो। परी पट्टी वहीं पर छोड़ कर तालाब में उतर गई। जंगलराज बहुत खुश हुआ उसने पट्टी उठाई और सिर पर रख दी, और चलने लगा। ज्यों ज्यों वह कदम आगे को बढ़ाता उसके कदम पीछे को पड़ जाते थे। और वह लुड़कते २ तालाब में गिर गया।

वहां पर उसने अपने आप को एक महल में पाया। महल में उसने एक कमरा देखा यहां पर उसने उसी "परी" को गहरी नींद सोते देखा। इसने परी को जगाने की बहुत कोशिश की पर उस की नींद न खुली। आखिर उसकी नज़र दीवार पर लटकी हुई एक माला पर पड़ी। उसने माला उठाई और परी के गले में डाल दी। जिससे उसकी नींद खुल गई। जब उसने जंगलराज को सामने देखा तो कहने लगी कि तुम यहां पर क्यों आये। और अपनी कहानी कह सुनाई और कहा कि मुझे यहां पर एक देव लाया है और बन्द रखा है जब वह आता है तो मुझे माला पहनाता है और मैं जाग पड़ती हूँ और जाता है तो गले से माला निकाल लेता है और मैं सो जाती हूं। वह अभी आयेगा और तुमको मार देगा। जंगलराज बहुत परेशान हुआ और उसने परी से कहा मैं क्या करूं मुझे बताओ।

परी ने कहा यह शतरंज की पट्टी तुम अपने सिर पर रखो तुम को कोई देख न सकेगा। जंगलराज ऐसा ही करता है। इतने में देव आ जाता है और परी को कहता है कि यहां पर मानस की बू आती है। बताओ यहां पर कौन आया था। मैं उसे मार डालूंगा। परी ने जवाब दिया कि अगर कोई यहां आया है तो मारते क्यों नहीं। यहां कोई नहीं आया था। देव ने परी के घुटने पर सिर रखा और सो गया। और सवेरे चला गया।

देव के चले जाने पर जंगलराज फिर निकला और परी को कहा देव को हम मारेंगे। पर मेरे साथ वायदा करो कि तुम उसके मरने के बाद मेरे साथ शादी करोगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

परी ने कहा कि देव को केवल एक आदमी मार सकता है उसका नाम है "जंगलराज"। वह एक बादशाह का बेटा है। बरामदे में पिंजड़े में एक पंछियों की जोड़ी है, एक मैना और एक तोता। जो इनकी गरदन मरोड़ कर मारेगा, उसी समय देव मर जायेगा। उसकी जान इन दो पंछियों में है।

जंगलराज यह सुन कर बरामदे में पहुँचा। यह पंछियों की जोड़ी आपस में बातें कर रही थी। पहले जंगलराज को इन पर दया आई। पर परी का ध्यान आते ही उसने इन को मार दिया। सारा महल हिल गया। परी ने जान लिया कि देव मर गया। परी और जंगलराज पट्टी पर बैठ कर तालाब से बाहिर निकलते हैं। और तालाब के किनारे पर बैठते हैं। दैवयोग को कौन जानता है।अचानक वहां एक पक्षिणी आयी और उसने एक झपटे से जंगल-राज को अपने पंजों में बन्द किया और अपने बच्चों के लिए नाश्ता ले जाने लगी। नीचे से एक शिकारी ताक में बैठा था। उसने एक दम तीर चलाया और पक्षिणी को नीचे मार गिराया। जंगलराज उसके पंजों से आज़ाद हुआ और बहुत दूर एक जंगल में गिर गया।

परी तालाब के किनारे पर बैठ कर अपने भाग्य को बार २ कोसने लगी। वह सावत रोती थी। वह उधर ही बैठी थी कि ऋषिबालक और वज़ीरज़ादा जंगलराज को ढूंढते २ वहां पर पहुंच गये। उन्होंने जब परी को देखा तो उसे रोने का कारण पूछा। परी ने कहा कि बड़ी मुशकिल से दैव ने मुझे देव के पंजे से बचाया था। पर जिस मनुष्य ने मुझे बचाया, दुर्भाग्य वश वह मुझ से छूट गया। एक पक्षिणी आई और झपटा मार कर उसे पंजों में उठा कर ले गई। परी ने वह सारी कहानी सुनाई और कहा कि वह रोज मुझ से एक २ शीशे का टुकड़ा ले जाता था, अंत में उस ने मुझ से शतरंज की पट्टी मांगी। मैंने शतरंज की पट्टी को श्राप दे रखा था कि जब वह तुम को सिर पर रखेगा। तुम उसको तालाब में ले आना। मैं देव के पंजे में थी मेरा ख्याल था कि मैं उसको अपने पास रखूं। पर भगवान ने मेरी अभिलाषा पूर्ण नहीं की। ऋषिकुमार और वज़ीरजादे ने कहा कि वही जंगलराज था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education, Bantalab, Jammu
वज़ीरजादे ने परी को उठाया और बादशाह के महल में पहुंचा दिया। बादशाह परी को देखकर मोहित हुआ और उसे कहा मेरे साथ शादी करो। परी ने कहा कि बादशाह सलामत अगर मुझे अपना पति न मिला तब मैं हजूर के साथ शादी करूंगी।

बादशाह ने कहा कि हमें किस तरह पता लगेगा वह जिन्दा है कि नहीं। परी ने कहा कि सारे शहर में डिंढोरा पिटवा दो और कहो कि जितने भी शहर में जवान मरद हैं वह आ कर अपनी अपनी आप बीती सुनायें। यह बात बादशाह ने मान ली और ऐसे ही हुआ।

उधर से तीन दिन और तीन रात के बाद जंगलराज को होश आई और अपने आप को एक वीरान और सुनसान जंगल में पाया। ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि हे प्रभु! अब मैं क्या करूं। मेरी मां क्या सोचती होगी। उस परी का क्या हाल होगा। भगवान ने उसके टूटे हुए दिल की आवाज़ सुन ली। अचानक एक बुड्ढा आ गया उसने कहा मेरा नाम 'ख्वाजा खिजर' है। मैं तुम्हारी मुसीबत को जानता हूँ और मैं तुम्हारी मदद के लिए आया हूं। तुम यह छड़ी हाथ में ले लो और चलते जाना, रास्ते में तुमको बहुत सी बलाओं का सामना करना पड़ेगा। यह छड़ी दिखा देना, तुम्हारा दुःख दूर हो जायेगा। रास्ते में उसे शेर, चीते, सांप, भेड़े मिले। मगर विधि के विधान से कोई भी उसका बाल बांका न कर सका। शेर जब आया तो वहां पर दूसरा शेर पैदा हो गया, उसने शेर को खाया। चीता आया तो उसको शेर ने और सांप को अजगर ने खा लिया। इसी तरह सब आपत्तियों का मुकाबला करके वह घर पहुंच गया।

इधर से जंगलराज की मां और ऋषि पत्नी जंगलराज के लिए रोते २ अन्धी हो गई थीं। कहीं भी उसका पता न था। इतनी रानी परेशान न थी जितनी ऋषिपत्नी परेशान थी। अचानक जंगलराज आ गया और ऋषिपत्नी तथा मां के गले से मिल गया। बेटे को देख कर उनकी अन्धी आंखों में रोशनी आ जाती है। इतने में ऋषिकुमार और वजीरजादा आ जाते हैं वह इसको परी का पता देते हैं कि परी बादशाह के महल में है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education, Bantalab Jammu

जंगलराज उसी समय बादशाह के महल में अपने जीवन की कथा सुनाने के लिए जाता है। और बादशाह को अपनी मां के बारे में सारी कथा कह सुनाता है। और कहता है बादशाह सलामत हजूर ने मेरी मां को अपने महल से निकलवाया था तो उन दिनों मैं उस के पेट में था। बादशाह ने जब यह सारी कहानी सुनी और पता लगा जंगलराज मेरा ही बेटा है, तो बादशाह ने उसको गले से लगा लिया।

परी ने कहा यह मेरा पति है। बादशाह ने जंगलराज की शादी परी से की और जंगलराज अपनी माँ, ऋषि पत्नी, ऋषि और ऋषिकुमार को महल में ले आया। बादशाह ने अपना राज्य जंगलराज को सौंप दिया। जंगलराज ने ऋषिकुमार को अपना वजीर बनाया। और आराम की जिन्दगी बसर करने लगे।

—जया दर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जैसी करनी वैसी भरनी

पुराने जमाने में एक राजा था जो बहुत ही न्यायप्रिय और दयालु था। सारी प्रजा उस से खुश थी। उस राजा की चार रानियां थीं चारों का एक २ बेटा था और इन चार भाइयों की उमरों में चार-चार दिन का फरक था। राजा बूढ़ा होने लगा। उसने सोचा कि मैं इन चारों बेटों में से किसी एक को तख्त पर बिठाऊंगा और स्वयं ईश्वर का नाम भजूंगा। पर यह इस विचार से परेशान था कि अगर मैं एक को बनाऊं तो दूसरी रानी नाराज़ हो जायेगी। इसी तरह चारों का विचार करके उसके मस्तिष्क में कोई बात नहीं जचती थी।

अन्त में उसने अपने दरबार में सब वज़ीरों और अमीरों में अपनी राय प्रकट की और उनसे भी सलाह मांगी। वह भी इस सवाल से परेशान हुए, कोई पूरा मश्वरा न दे सका। अन्त में एक वज़ीर ने राजा को कहा कि महाराज ! मेरी एक सलाह है कि आप खजाने से चार अशरफियों के थैले मंगवायें और चारों बेटों को व्यापार के लिए दे दें। इन चारों में से जो राजकुमार कम पैसों से व्यापार करके ज्यादा लाभ जमा करके लायेगा उसको आप राजा बना दें।

प्रातः चारों शहजादों को दरबार में बुलाया गया। और राजा ने उनको अपना फैसला सुनाया और कहा कि तुम चारों भाई

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
जाओ और अपने साथ एक २ थैली अशरफियों की ले जाओ और जो शहजादा कम पैसों से ज्यादा मुनाफा लेकर आयेगा वह ही सिंहासन का वारिस होगा।

राजा की यह आज्ञा सुनकर चारों भाई व्यापार के लिए जाने को तैयार हुए। उन्होंने अपनी २ माताओं ने आज्ञा ली। उनका आशीर्वाद लेकर वह सफर के लिए चल पड़े। वह ज्यादा तेज २ चलने लगे और एक जगह पर पहुँचे जहां पर एक सबज़ बाग था। उन्होंने यहीं पर अपना डेरा डाल दिया। खाना पीना हो गया और सो गये। जब यह सब सो रहे थे तो पौ फटते ही बड़ा राजकुमार जाग पड़ा। उसने इधर उधर थोड़ा भ्रमण किया और उसकी नजर मील भर की दूरी पर एक लहलहाते हुए बाग पर पड़ी वह आगे चलता गया और इस बाग के समीप पहुंच गया। बाग को इसने कहीं दरवाजा न देखा, आखिर बहुत ढूंढने पर इसे एक ड्योढ़ी दिखाई दी ड्योढ़ी पर उसने एक बूढ़े दरबान को देखा और उसे कहा ऐ बूढ़े दरबान अगर मैं इस बाग की सैर करूं तो तुमको कोई इतराज़ तो नहीं। दरबान ने कहा कि तुम जा सकते हो। राजकुमार अन्दर चला गया और बाग की सर करने लगा। राजकुमार का मन इस बाग को देखकर बाग २ हो गया। यह बाग फलों से लदा हुआ था। उसने सोचा व्यापार के लिए यह अच्छा है। उसने बूढ़े दरबान से कहा कि ऐ बूढ़े अगर मैं इस बाग को ठेके पर लूंगा तो कितना रुपया देना होगा। दरबान ने कहा कि पांच सौ रुपया देना होगा।

राजकुमार ने इसको रुपयों की थैली दी और कहा कि जब तक मैं यहां पर रखवाली के लिए नौकरों चाकरों का प्रबन्ध न कर लूं। तब तक तू इसका ध्यान रखना। यह कह कर राजकुमार आगे बढ़ा और थोड़ी दूर चल कर जब उसने पीठ फेर कर देखा तो बाग गायब था और न ड्योढ़ीबान ही था। वह अपने साथ हुई ऐसी घटना से चकित था। वह रोता पीटता अपने भाइयों के पास पहुँचा और उन को यह सारा हाल सुनाया। आखिर यह दिन भी बीत गया और शाम को सब सो गये।

दूसरे दिन पौ फटते ही दूसरा राजकुमार जाग पड़ा। इधर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
उधर चलने लगा और उस को भी वही बाग दिखाई पड़ा। वह भी बाग में गया और उसे वही ड्योढ़ीबान मिला। बाग पर उसका दिल ललचाया और ड्योढ़ीवान से सौदा करके बाग का व्यापार किया और अशरफियों की थैली उसके हवाले कर दी जब वह वापिस निकलने लगा और पीछे मुड़ कर नज़र दी देखा तो बाग गायब था। वह भी रोता पीटता भाइयों के पास आ गया। इसी तरह तीसरे भाई के साथ भी हुआ। यह सब सोचने लगे कि हम अपना देश छोड़कर परदेस में व्यापार करने के लिए आये थे। अब हम क्या करें, हम अपने बाप को कौन सा मुंह दिखायेंगे। हमारा सारा धन व्यर्थ हुआ।

अन्त में चौथे दिन चौथा भाई उठा और पौ फटते ही इस बाग में गया, बाग उसी तरह का था। इस राजकुमार ने अपना मुंह हाथ धोया। भगवान से प्रार्थना की और उसे कहा हे प्रभु हम व्यापार करने के लिए आये थे अब हम अपने बाप को क्या मुँह दिखायेंगे। हे प्रभु ऐसा सबब करो जिसे हम अपने बाप के पास इज़्ज़त से जा सकें। बाग को देखने के बाद राजकुमार उसी बाग के तालाब पर सो गया। उसने सपना देखा तो सपने में उसने एक आदमी को देखा, उसने कहा कि तुम्हारे तीनों भाइयों की नियत बुरी थी। वह एक दूसरे को धोखा देना चाहते थे। इसलिए वह इस व्यापार में हार गये। मगर तुम्हारा व्यापार सफल रहेगा, जीत जाओगे, तुम्हारी नियत में कोई खोट नहीं है, मगर एक बात याद रखना जब यह बाग गायब हो जायेगा तुम जरा प्रतीक्षा करना। बाग के गायब होने पर तुमको एक झाड़ी दिखाई देगी। तुम ईश्वर का नाम लेकर इस झाड़ी के नीचे जाना। इस झाड़ी के नीचे एक तहखाना है उस तहखाने में तुम्हारा मकसद पूरा हो जायेगा। इसके बाद राजकुमार जाग पड़ता है और भाइयों की तरह ड्योढ़ीवान के पास जा कर सौदा करता है। सौदा करने के बाद बाग गायब हो गया। राजकुमार की नजर उस झाड़ी पर पड़ गई और झाड़ी को हटा कर तहखाने में घुस गया। तहखाना हीरों और जवाहिरों से भरा था। यह राजकुमार भाइयों के पास गया और उनको बुला कर लाया। बाकी तीन भाई तहखाने के बाहिर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

थे। राजकुमार ने लाल और ज्वाहिरात निकाल २ कर भाइयों को दे दिये। भाइयों की नियत यह ज्वाहिरात लेते २ ही बदलने लगी। चौथे शहजादे की नजर एक कमरे पर पड़ी जिस में चार पलंगों पर चार औरतें सो रही थीं। कमरे की दीवारों पर कुछ जेवरात रखे हुए थे और खूबसूरत गरारे भी थे। राजकुमार ने सोचा यह औरतें इन जेवरातों और गहनों को पहन कर कितनी सुन्दर दिखाई पड़ेगीं। उसने यह कपड़े और आभूषण उन को पहनाये। ज्यों ही उसने इनको कपड़े और आभूषण पहनाये वह जाग पड़ीं। मगर एक औरत के जेवर उसने अपनी जेब में डाल दिये। इन चारों औरतों को इसने भाइयों के हवाले कर दिया। अभी यह तहखाने में ही था कि भाई औरतें और हीरे ज्वाहिर ले कर भाग गये। और तहखाने के दरवाजे पर एक भारी पत्थर रखा ताकि वह बाहिर न निकल सके। दैवयोग से एक आदमी वहां से चला और उसने यह पत्थर इस तहखाने से उठाया। राजकुमार इसी गुफा में सोया था तो उसने फिर सपना देखा, सपने में एक आदमी को आते देखा जो इस तहखाने से पत्थर उठा कर दूसरी तरफ को फैंक देता है। जब उसकी नींद खुली तो उसने अपना सपना सच्चा पाया।

बाकी तीन राजकुमार इन चार औरतों और हीरे ज्वाहिरों को लेकर राजा के पास पहुंच गये। राजा ने जब इन सुन्दर औरतों को देखा तो वह बूढ़ा इन पर मोहित हुआ और इनसे शादी करनी चाही। तीन औरतों के पास जेवरात थे मगर चौथी के पास न थे। उसने राजा से कहा हजूर जब मेरे जेवर भी इन तीनों के बराबर बन जायेंगे तब मैं शादी करूंगी। तमाम सुनार बुलाये गये। वह जेवरात बना कर लाये मगर शकल एक जैसी न थी। आखिर राजा ने एक बड़े चतुर सुनार को बुलाया मगर वह भी हार गया।

उधर से राजकुमार चलते २ अपने नगर में पहुँचा और इसी सुनार की दुकान पर आया और उसे पूछने लगा कि सुनार भाई क्या कर रहे हो। सुनार ने अपनी मुसीबत का हाल सुनाया और कहा अगर मैं जेवरात इन जेवरों के मुकाबले में न बना सका तो राजा मुझे मार डालेगा। राजकुमार मन ही मन हंसने लगा। उसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सुनार पर दया आई। और उसने जेब से वैसा ही चौथा जेवर निकाला और दिखाया और दे भी दिया। सुनार राजा के पास यह जेवर लेकर चला गया।

जब चौथी औरत ने यह जेवर देखा वह अपना जेवर पहचान गई इस औरत ने सुनार से सवाल किया बता यह जेवर किस ने बनाया है। सुनार ने कहा मेरा एक गोद लिया हुआ बेटा है यह उसी ने बनाया है। औरत ने बादशाह से प्रार्थना की और कहा कि मैं उसको देखना चाहती हूं जिसने यह बनाया है। राजा ने सुनार को हुक्म दिया कि उस लड़के को दरबार में हाजिर किया जाये।

राजकुमार बाप के पास दरबार में आया। बड़ी इज्जत से बाप को आदाब किया। और सारा हाल सुनाया जो उनके साथ हुआ था। बाकी तीन भाई भी उसके सामने खड़े थे। वह बाप के सामने रुसवा हो गये। और राजा को उनकी धोखेबाजी और बद-नियती का पता चला। राजा ने अपने वजीरों और अमीरों को बुलाया और ईमानदार राजकुमार को तखत पर बिठा दिया। जो वह चाहता था कि मेरे बाद मेरी प्रजा को न्यायप्रिय और दयालु राजा मिले।

—जया दर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तीन शर्तों वाली राजकुमारी

एक बादशाह था। उसका एक बेटा था। शाहजादे ने अपने बाप से शादी करने की इच्छा प्रकट की और कहा कि मेरी शादी ऐसी औरत से होनी चाहिए जिसको मैं नित्य सात जूते दिया करूंगा और बदले में वह मुझे १०१ रुपया देगी। बादशाह यह शर्त सुन कर हैरान हुआ। उसने अपने वज़ीरों और अमीरों को इस तरह की लड़की ढूंढने का हुक्म दिया। पर सब विफल रहे। एक दिन एक वज़ीर ने बादशाह से कहा मैं यह काम करूंगा।

यह वज़ीर दूसरे वज़ीर को लेकर शाही महल से चल पड़ा। कुछ दिन ढूंढने के बाद वह एक जगह पर पहुंचे जहां पर उन्हों ने एक लड़की को देखा। इन दोनों ने इस लड़की से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारे पिता का नाम क्या है। यह जवान लड़की थी और बहुत अकलमन्द थी।

लड़की ने उन दोनों की तरफ देखकर जवाब दिया। मेरा बाप रोज़ जंगल में कोयले लाने के लिए जाता है और मैं उसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ। जितनी जल्दी वह प्रातः जंगल में जाता है उतनी ही जल्दी वह वहां से शाम को वापस आता है।

इन्होंने लड़की से फिर सवाल किया। ज्यादा सवेरे जाने की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

वजह क्या है ? लड़की ने बहुत नम्रता से जवाब दिया। कोयले
Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
जब बुझ जाते हैं तब वह उनको बोरी में भर देती है। इसलिए उसे बुझने का इन्तज़ार करना पड़ता है। अगर वह गर्म २ कोयले बोरी में भर देगा तो उनको दुबारा सुलगने का डर होता है। फिर सुलग कर इनको दुबारा बुझना होता है इसलिए उसे दुगना समय व्यर्थ हो जाता है। इसलिये कोयले ठंडे करके वह बोरी में भर देता है इस तरह से बिना थकावट के आराम से वापस आता है।

यह जवाब सुन कर दोनों वज़ीरों ने सोचा यह लड़की तो अकलमन्द है। और इन्होंने लड़की से पूछा। बेटी तुम्हारे बाप ने कहीं पर तुम्हारी सगाई तो नहीं की है। लड़की ने शरमा कर कहा नहीं अभी नहीं। इसके बाद वज़ीरों ने इस लड़की को शाहजादे का सारा किस्सा सुनाया। लड़की ने कहा कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। मैं शाहजादे की यह ख्वाहिश पूरी कर सकती हूं। मेरे बाप के आने का इन्तजार करो।

इतने में लड़की का बाप भी आ गया, और सब लड़की के घर चले गये। लड़की ने अपने बाप को मेहमानों के आने का कारण बताया और उनका सबों ने स्वागत किया।

दोनों वज़ीर लड़की के बाप के पास बैठे और उस को शाहजादे की सारी कहानी सुनाई। बाप ने अपनी लड़की से पूछा कि शाहजादे की शर्त इस तरह है क्या तुम वह शर्तें निभा सकती हो। लड़की ने कहा कि तुम वजीरों को यकीन दे दो मैं यह काम कर सकती हूँ। इसके बाद दिन मुकर्रर हुआ। वजीर वापस चले गये। और शाही महल में लड़की मिलने का पता देने के लिए चले गये।

बादशाह यह सुनकर बहुत उदास हुआ कि एक गरीब लड़की उसके शाहजादे को शादी के लिए मिल गई। कहां पर शाही खानदान और कहां पर एक गरीब लड़की। वजीरों ने बादशाह को मनवा लिया। और शाहजादे की मुनादी सारे शहर में पिट गई।

जब लड़की शाही महल में आ गई तो उसने अपने साथ एक जूता रखा था। शाहजादे ने पूछा तुमने जूता साथ क्यों लाया है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लड़की ने जवाब दिया कि हजूर के हुक्म के मुताबिक मैंने जूता साथ लाया है।

शाहजादे ने कहा कि मैंने आज तुम को सात जूते देने थे पर आज यहां पर मेहमान हैं कल मैं तुमको १४ जूते इकट्ठे दूंगा और तुम मुझे २०२ रुपया दोगी।

तीसरे दिन शाहजादा लड़की के पास आया और उसने लड़की को कहा कि आज मैं तुम को २१ जूते दूंगा और आज तुम को ३०३ रुपया देना है।

लड़की ने कहा कि आज यहां पर मेरे मेहमान हैं। कल यह शर्त पूरी होगी। चौथे दिन जब शहजादा आया तो उसने लड़की को शर्त पूरी करने के लिए कहा।

लड़की ने जवाब दिया कि शाहजादा आप किस लिए इतना गुमान करते हो। एक गरीब लड़की को जीतना बड़ी बात नहीं है। मैं तुम्हारा कमाल तब देखूंगी, जब तुम उस राजकुमारी को जीत कर लाओगे, जिसने तीन शर्तें रखी हैं। और जिसको बड़े २ राजकुमार नहीं जीत सकते।

यह सुन कर शाहजादे के दिल में जोश पैदा हो गया। वह उदास हो गया और अपने मन में ठान ली कि मैं उस राजकुमारी को जीत कर लाऊंगा। वह अपनी मां के पास गया और उससे फौज और रुपया मांगा। मां ने बहुत मिन्नत कीं और कहा बेटा उस राजकुमारी को कोई नहीं जीत सकता है। तुम इस हठ से बाज आ जाओ। फिर वह बाप के पास चला जाता है। उससे फौज व रुपया लेकर आया और बीबी के पास गया और बीबी से कहा मैं उस रहस्यमयी राजकुमारी को जीतने के लिए जाऊंगा। पर जब तक मैं वापस आऊंगा। तब तक तुम ऐसा बाग लगाना, जिसमें सोने के पेड़ और चांदी के पत्ते हों। यह कह कर वह चला गया।

शाहजादा अपनी फौज को लेकर एक शहर में पहुँच गया। और वहां पर अपना डेरा डाल दिया। इस शहर में एक लंगड़ा ठग रहता था। उसने सुना कि एक शाहजादा माल व फौज ले कर शहर में आया है। वह शाहजादे के पास आया और कहा कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An Unit of Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

हजूर आप का बाप मेरे से एक टांग उधार ले गया था। पर आज तक उसने वह टांग वापिस नहीं की। इसलिए वह टांग मुझे लौटा दीजिये। शाहजादे ने लंगड़े से कहा अगर ऐसी बात होती तो मेरा बाप मुझे जरूर बता देता। फिर भी मैं अपने बाप पर करजा नहीं रखना चाहता। तुम मेरी टांग ले लो। लंगड़े ने कहा मैं टांग को को लेकर क्या करूं, मुझे टांग की कीमत एक हज़ार रुपया देदो। शाहजादे ने लंगड़े ठग को एक हज़ार रुपया दे दिया और वह चला गया।

दूसरे दिन शहजादा दूसरे शहर में पहुंचा। वहां पर काने ठग ने सुना कि एक शहजादा इस शहर में आया है और उसके पास दौलत है। वह भी शहजादे के पास आया और कहने लगा कि हजूर के बाप ने मेरे से एक आंख उधार ली है और अब तक लौटा नहीं दी। मैं एक ही आंख से देखता हूं। मुझे आंख लौटा दो। शाहजादे ने कहा मेरे बाप ने अब तक मुझे यह बात नहीं कही है खैर मैं बाप पर करजा नहीं रखना चाहता हूं। तुम मेरी आंख ले लो। काने ठग ने कहा मैं आंख लेकर क्या करूं। मुझे आंख की कीमत दो हज़ार रुपये दे दो। शाहजादे ने काने ठग को दो हजार रुपये दे दिये और वह चला गया।

चलते चलते शहजादा तीसरी जगह पर पहुँच गया। जहां पर एक जादूगरनी रहती थी। इस जादूगरनी के दरवाजे पर लिखा था कि जो तीन शर्तों वाली राजकुमारी को जीतने जायेगा, उसे पहले मेरे साथ खाना पीना और बात-चीत करनी चाहिये। जब शाहजादे ने यह पढ़ा तो वह अन्दर घुस गया। यहां पर जादूगरनी बैठी थी। जादूगरनी ने इसे नाम पूछ लिया और सारा हाल पूछा। शाहजादे ने आप बीती सुनाई। जादूगरनी ने दो छोटी २ हांडियाँ लाई और चूल्हे पर धर दीं और खाना पकाने लगी। शाहजादा इन छोटी हांडियों को देख कर दंग रह गया। और जादूगरनी से पूछा कि इतनी छोटी हांडियों में एक आदमी का खाना पूरा नहीं हो सकता है। मेरे साथ इतनी फौज है, इनका खाना कैसे होगा। जादूगरनी ने जवाब दिया कि अगर इन हांडियों में से सबों का खाना पूरा न हुआ तो मैं हार गई। अगर पूरा हुआ तो तुम को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
यह फौज और धन दौलत यहीं पर छोड़ कर जाना होगा। हांडियां चूल्हे पर चढ़ी थीं, खाना तैयार हुआ। खातून ने शाहजादे की फौज के हाथ धुलाये और खाना परोस दिया। फौज ने पेट भर कर खाना खाया। जादूगरनी ने सबों से पूछा कि और लेने की जरूरत तो नहीं। शाहजादा यह देखकर हैरान रह गया। उसके बाद उसने अपने और शाहज़ादे के लिए खाना डाल दिया। यह दोनों खाना खा चुके। और जादूगरनी ने शाहजादे को शर्त पूरी करने के लिए कहा शाहजादा फौज और धन दौलत छोड़ कर वहां से अकेला चल पड़ा।

आखिर वह राजकुमारी के शहर में पहुँच गया। और वहां पर मुनादी दिलाई कि राजकुमारी को जीतने के लिए एक शाहजादा आया है। जब राजकुमारी ने यह सुना तो उसने शाहजादे को अपने पास बुलाया और कहा मैंने तीन शर्तें रखी हैं। जो मुझ से तीन बातें करायेगा मैं उसके साथ शादी करूंगी। शाहजादे ने यह शर्त मन्जूर की।

रात को जब वह राजकुमारी के महल में पहुँच गया। वह सो गया और इतनी गहरी नींद सो गया कि उसको राजकुमारी को तीन बातें करवाना याद न रहा। सुबह जब हुई तो राजकुमारी ने शाहजादे से कहा कि आज तक यहां पर हजारों राजकुमार मेरे साथ शादी करने के लिए आये हैं पर मुझे कोई बात न करवा सका। सब हार गये और मैंने उनको बेच डाला है। अब तुम्हारी बारी है।

राजकुमारी ने एक तेली को बुलाया और शाहजादे को उस के पास बेच दिया। तेली ने शाहजादे को कोहलू में बैल के बदले बांध दिया। कुछ दिन ऐसे होता रहा। इतिफाक से तेली और उसके घरवाले कहीं बाहर चले गये और शाहजादे को वहां पर अकेला रख दिया अवसर पा कर शाहजादे ने अपने बाप और बीबी को खत लिखा। बीबी को लिखा में तीन शर्तों वाली राजकुमारी को ले कर आ रहा हूँ। बाग तैयार रखना जिसमें सोने के पेड़ और चांदी के पत्ते हों। बाप को लंगड़े, काने, जादूगरनी और राजकुमारी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
का सारा हाल लिखा और लिखा में एक तेली के पास बेच दिया गया हूं।

दैवयोग से खत बदल जाता है बाप का खत बीबी लेती है और बीबी का खत बाप के पास पहुँच जाता है। बाप बाग बनाने की तैयारी में लग जाता है। पर वह एक दूसरे को खत के बारे में कुछ नहीं कहते।

शाहजादे की बीबी बहुत अकलमन्द और होशियार थी। उस ने अपने ससुर से कहा कि मैं १० दिन के लिए अपने मायके जाना चाहती हूँ। ससुर ने उसे आज्ञा दे दी।

शाहजादे की बीबी ने मरदाना लिबास किया और एक कसाई की दुकान पर जा कर भेड़े की आंखें, टांग और हड्डियां खरीद लीं। और कुम्हार के पास जाकर दो छोटी २ हांडियां लेकर चल पड़ी। एक घोड़ा उसके साथ था।

चलते चलते वह लंगड़े ठग के शहर में पहुंच गई और वहां पर डेरा डाल दिया। लंगड़े ठग ने सुना कि इस शहर में एक बड़ा सौदागर आया है। उसे ठगना चाहिये। वह इस खातून के पास चला गया जो मरदाना लिबास में थी। कहा कि तुम्हारे बाप ने मेरे से एक टांग उधार ली थी और अब तक लौटा नहीं दी। खातून ने कहा कि मेरे बाप ने मुझे नसीहत की है कि पहले उसकी दूसरी टांग भी काट लो फिर दोनों इकट्ठे जोड़ लेना। मैंने टांग साथ लाई है। जब लंगड़े ने यह सुना तो वह उछल कर कहने लगा। ख्वाजा सौदागर मुझे टांग की जरूरत नहीं है। लंगड़ा मुट्ठी बांध कर भागने को तैयार हुआ कि सौदागर ने कहा पहले वह एक हज़ार रुपया वापस कर लो जो तुम्हें मेरे बाप ने उधार दिया था। लंगड़े ने एक हज़ार रुपया निकाल कर वापस दे दिया और भाग गया।

दूसरे दिन शाहजादे की बीबी काने ठग के शहर में पहुंच गई और डेरा डाल दिया। जब काने ठग ने यह सुना कि कोई बड़ा सौदागर आया है तो वह अपने साथियों के पास गया और उन को कहने लगा कि यहां पर कोई ख्वाजा सौदागर आया है चलो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
उसको लूट ले। काना ठग सौदागर के पास आया और कहने लगा कि तुम्हारे बाप ने मुझ से एक आंख उधार ली थी। अब तक नहीं लौटा दी, मुझे वह दे दो। सौदागर ने जवाब दिया कि मुझे अपने बाप ने कहा है कि पहले उसकी दूसरी आंख भी निकाल लेना फिर दोनों लगा देना। जब काने ने यह सुना तो वह भागने को तैयार हुआ। खातून ने कहा मेरे बाप ने तुम को दो हजार रुपये उधार दिये थे वह वापस लेने को कहा है। काने ने अपनी जान के डर से जल्दी २ दो हजार रुपये निकाल कर दिये और भाग गया।

तीसरे दिन शाहजादे की बीबी जादूगरनी के शहर में पहुँच गई। वहां खिड़की पर लिखी हुई शर्त को पढ़ा और अन्दर घुस गई। जादूगरनी ने समझा आज और कोई धनवान फंस गया। उसने शाहजादे को हाल पूछा शाहजादे ने बताया में तीन शर्तों वाली राजकुमारी को जीतने के लिये आया हुं। जादूगरनी ने कहा पहले खान पान हो जाये फिर जाना। शाहजादे ने कहा बहुत अच्छा। जादूगरनी ने हांडी चूल्हे पर चढ़ा ली और खाना पकाने लगी। शहजादे ने पूछा कि इसमें खाना कैसे पूरा होगा। जादूगरनी ने जवाब दिया। चलो शर्त करो अगर पूरा हुआ तो मैं जीत गई तो जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह सब छोड़कर जाना होगा। और अगर पूरा न हुआ तो तुमने मुझे जीत लिया। शाहजादे ने मन्जूर कर लिया। जादूगरनी बाहिर कुछ करने लिए चली गई। शाहजादे की बीबी ने जल्दी से यह दो हांडियां उठाईं और अपनी दो हांडियां चूल्हे पर रख दीं। जादूगरनी जब वापस आई तो शहजादे के हाथ धुलाए। और खाना परोसने लगी तो एक आदमी का भी खाना न हुआ। जादूगरनी हैरान रह गई। शहजादे ने उसे फौज व धन दौलत वापस ले लिया और आगे चल पड़ी।

चलते २ वह उस शहर में पहुँच गई जहां पर तीन शर्तों वाली राजकुमारी थी। उस दरवाजे पर पहुँच गई जो राजकुमारी के महल का था। वहां पर दरबान आपस में लड़ रहे थे। उनका कुछ घरेलू झगड़ा हो गया था। शहजादे की बीबी वहीं पर रुकी। एक मरद को देख कर दरबानों ने उसको अपने घरेलू झगड़े का हाल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
सुनाया। शहजादे ने उनके झगड़े को सुलझा दिया। दरबान और उसके घर वाले इस पर खुश हुए। उन्होंने इस शहजादे से पूछा। बताओ तुम कैसे आये हो। शहजादे ने कहा मैं तुम्हारी राजकुमारी को जीतने के लिए आया हूं। दरबानों ने सोचा इसने हमारी मदद की है। हम भी इसकी मदद करेंगे।

एक ड्योढ़ीवान ने कहा भैया! मैं शाहजादी की एक टांग के नीचे रहता हूं। जब तुम शाहजादी के महल में घुस जाओगे तो तुम मेरी तरफ कहना। ऐ पलंग अगर तुम्हारी मालकिन को मेरी नाराजगी है तो क्या तुमको भी है? मैं जवाब दूंगा, यार मुझे सारी उमर इस पलंग के नीचे खतम हुई जिस वक्त राजकुमारी करवट बदलती है तो मेरी हड्डियां भस्म हो जाती हैं।

दूसरे ड्योढ़ीवान ने कहा कि मैं चरागदानी के नीचे होता हूं। मुझे भी तुम कहना ऐ चरागदानी अगर राजकुमारी को मेरे साथ नाराजगी है तो क्या तुमको भी है। मैं जवाब दूंगा कि मुझे रात और दिन यहीं पर डियूटी देते हुए गुजर गई और रात दिन मेरा एक जैसा है।

तीसरे दरबान ने कहा कि मैं खिड़की के चौखटे के पास होता हूँ। मुझे भी तुम यही सवाल करना। मैं जवाब दूंगा कि मुझे सारी उमर इस महल की खिड़कियां खोलते और बन्द करते हुए गुजर गई।

यह सब सुनकर शाहजादे की बीबी अन्दर चली गई। और शाम को जब राजकुमारी के कमरे में पहुंच गई तो कमरे में घुसते हुए पलंग की तरफ मुंह करके बोली ऐ पलंग अगर राजकुमारी को मेरे साथ नाराजगी है तो तुम को क्या है तुम अपनी खबर सुनाओ एक दम पलंग वाले दरबान ने कहा कि मैं उमर भर से इस पलंग के नीचे हूं। और जब राजकुमारी करवट बदलती है तो मेरी हड्डियां चूर हो जाती हैं।

राजकुमारी को गुस्सा आया और कहती है कि ऐ पलंग वाले दरबान तुमने क्यों मेरे बारे में ऐसा कहा। प्रातः होने दे मैं तुम को जला कर भस्म कर दूंगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शाहजादा फिर चरागदानी के पास चला गया और उसे कहा कि राजकुमारी को मेरे पर नाराजगी है तो तुमको क्या है, तुम तो मेरे साथ बोलो।

चरागदानी ने जवाब दिया कि मेरे यार ! मुझे तुम्हारे साथ क्या नाराजगी है। मेरी सारी उमर यहां पर ड्यूटी देते हुए बीत गई न कहीं दिन है और न कहीं रात।

राजकुमारी को गुस्सा आया और तेज़ हो गई। उसने चरागदानी वाले दरबान को कहा। सुबह होने दो मैं तुम्हें पाश २ करके रख दूंगी। इधर से शहर में मुनादी हो गई कि राजकुमारी ने दो बातें कीं।

शाहजादा और चलकर खिड़की के चौखट के पास पहुंच गया और उसे भी यही सवाल किया। चौखट वाले दरबान ने जवाब दिया। मेरी सारी उमर इस महल की खिड़कियां दिन रात खोलते और बन्द करते बीत गई। जब तक मैं खतम हो जाऊंगा।

राजकुमारी का गुस्सा और भड़क उठा और उसने कहा ठहरो सुबह होने दो मैं तुम्हें भी राख बना कर छोड़ूंगी। उधर से शहर में डिंढोरा पिट गया कि राजकुमारी ने तीन बातें कीं। और वह अपनी शर्त हार गई।

राजकुमारी ने शाहजादे की बीवी को अपना आप सौंप दिया। और शाहजादे ने उन तमाम राजकुमारों को एक २ करके आज़ाद किया। जिनको इसने बेच दिया था। फिर अपने पति के बारे में पता किया कि वह कहां पर है। तीन शर्तों वाली राजकुमारी ने बताया कि मैंने उस को तेली के पास बेच दिया है।

शाहजादे की बीवी एक-दम तेली के घर अपने शाहजादे को आज़ाद कराने के लिए गई और वहां पर अपने पति को बहुत ही बुरी हालत में देखा। कोहलु के चक्र को खींचते २ उसके वक्ष पर पड़ा दाग लगा था। नकली शहजादे ने उससे वह कपड़े मांगे जो तेली उसको चक्र में बांधने के समय लगाता था। उसने तेली को शाहज़ादे का दाम वापस दिया। और उसको रिहा कर दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

और राजकुमारी के महल में पहुंचा दिया। स्वयं वह अपने शहर वापस चली गई। और अपने ससुर के पास पहुंच गई।

थोड़े दिन बीतने के बाद शाहजादे ने अपने बाप को पैगाम भेज दिया कि में तीन शर्तों वाली राजकुमारी को लेकर घर वापस आ रहा हूं। बाप बहुत खुश हुआ। जब बेटा घर पहुंच गया तो बाप ने उसका बड़ा स्वागत किया। शाहजादे ने अपने बाप से कहा कि मेरी उस बीबी को बुलावो जिसने मुझे ताना दिया था कि "मैं तब तुम को मान लूंगी जब तू तीन शर्तों वाली राजकुमारी को जीत कर लाओगे।" जब उसकी बीबी उसके सामने आई तो उसे कहने लगा मैं अपने मकसद में सफल हुआ अब तुम अपनी शर्त पूरी करो।

बीबी ने कहा तुम्हारे जूते और मेरे रुपये देने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता है मैंने तुम्हारे प्यार के लिए वह बाग बनाया है जिसमें सोने के पेड़ और चांदी के पत्ते लगे हुए हैं।

शाहजादे ने बीबी से कहा तुमने मुझे ताना दिया था कि जा मैं तुम्हारी बहादुरी तब देख लूंगी जब तुम तीन शर्तों वाली राजकुमारी को जीत कर लाओगे। देखो मैंने अपना कौल पूरा किया।

शाहजादे की बीबी ने हंस कर कहा। इस राजकुमारी को तुमने जीता या मैंने, जादूगरनी को तुमने हराया या मैंने, उससे तुम्हारी दौलत और फौज वापस ले ली। लंगड़े और काने से मैंने रुपये वापस लिये। जो तेली तुम को कोहलू में बैल के बदले जोतता था। उससे मैंने तुम को बचाया, और बादशाह से कहा कि बादशाह सलामत इसके सीने पर एक बड़ा दाग देखो। जो इस को कोहलू चलाते २ लग गया है। उसके बाद बीबी ने वह लगाम और कपड़े दिखाये जो तेली उस समय शाहजादे को पहनाता था। जिस समय वह चक्र के साथ जुड़ जाता था। शाहजादे के बाप ने शाहजादे के कपड़े उतार कर वह दाग देखे। इसके बाद शाहजादे की बीबी ने वह चिट्ठी दिखाई जो उसने बाप को लिखी थी।

बादशाह यह सब देख कर दंग रह गया। शाहजादे का

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
सिर बीबी के आगे झुक गया। बादशाह ने इस लड़की की बुद्धि की दाद दी। और उसे शाबाश दी कि सारे घर की और माल दौलत की चाबी उसके हवाले कर दी।

—जया दर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ख्वाजा नूर

किसी नगर में एक बादशाह रहता था, जिस का नाम "ख्वाजा नूर" था। ख्वाजा नूर बहुत ही अच्छा बादशाह था। पर इसकी कोई सन्तान न थी। ख्वाजा नूर की दैव वश एक बड़े फकीर के साथ मुलाकात हुई। उसने फकीर से अपने निःसन्तान होने के बारे में सुनाया। फकीर उस पर दयालु हुआ और उसने ख्वाजा नूर को तसल्ली दी कि मैं ईश्वर से तुम्हारे सन्तान होने के बारे में प्रार्थना करूंगा। भगवान ने फकीर की प्रार्थना स्वीकार की और ख्वाजा नूर के घर एक पुत्र हुआ।

बादशाह का बेटा बढ़ने लगा। वह किसी से अधिक बोलता चालता नहीं था। लोग कहते थे कि यह बोलने से शरमाता है इसलिए इसका नाम "हयाबन्द" रखा गया। बाप ने इसके साथ इस की हम उम्र के दो और बालक रखे। जिनके साथ वह बोलता चालता और हंसता खेलता था। धीरे २ इसका प्यार इनके साथ भाइयों की तरह बढ़ गया। समय गुजरता गया, वह बड़ा हो गया।

बड़ा होने पर इसने अपने पिता से कहा कि मुझे कुछ माल दे दो, मैं व्यापार करने के लिए विदेश जाऊंगा। बादशाह बहुत खुश हुआ उसने बेटे को अनमोल मोतियों की मालाएं दीं और व्यापार के लिए विदेश में भेज दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
ख्वाजा हयाबन्द चलते २ एक नगर में पहुचा और मालाएं बेचता गया। एक दिन इसने एक महल की खिड़की पर अति सुन्दर लड़की को देखा और देखते ही देखते वह उस पर मोहित हुआ। इस लड़की ने भी उपर से व्यापारी को मालाएं लेकर देखा वह भी उसके रूप पर मोहित हुई। उसने अपनी एक दासी को बुलाकर कहा कि एक व्यापारी मालाएं लेकर आया है तुम नीचे जाओ और कुछ मोतियों की मालाएं ऊपर ले आओ में देख लूंगी। और साथ ही माला का मोल भी पूछना।

हयाबन्द ने दासी से कहा कि ऐ दासी तुम इन मोतियों के हारों को क्या पहचान सकती हो कि कौन सा तुम्हारी मालकिन के योग्य है। तुम अपनी मालकिन को नीचे भेज दो वह अपने लिए मोती का हार आप पसन्द कर लेगी। दासी ऊपर चली गई और मालकिन को बताया कि यह व्यापारी बड़ा ढीठ है और कहता है कि मालकिन को नीचे भेज दो वह स्वयं अपने लिए हार पसन्द कर लेगी।

यह सुन कर लड़की स्वयं नीचे आ गई और हार पसन्द करने लगी। जब वह बैठ गई तो हयाबन्द उसको ध्यान से देखने लगा। वह क्या देखता है कि इस लड़की के बाल सोने के थे और इसकी कमीज़ के दामन पर भी सोने के दाने लटक रहे थे। जब वह उठती बैठती थी तो दामन की आवाज हो जाती थी। लड़की ने हार पसन्द किया, दाम चुका लिया और ऊपर चली गई।

हयाबन्द ने जाते २ लड़की से कहा—सुनो सुन्दरी इस माला का अगर धागा टूट गया तो मेरे बिना कोई भी यह मोती नहीं पिरो सकता है। जब हयाबन्द चलने लगा तो उसने इस सुन्दरी के दरवाजे पर पहचान के लिए अपना निशान लगा दिया।

माल बेचकर जब हयाबन्द घर पहुंचा तो वह बहुत उदास हुआ सुन्दरी के प्यार ने इसको पागल बना दिया। उसने अपने कमरे को बन्द किया और बैठा रहा। जब ख्वाजा नूर ने सुना कि मेरा बेटा व्यापार करके वापस आया है और कमरा बन्द करके बैठा है तो वह बहुत उदास हुआ। उसने अपने नौकरों चाकरों को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
हुक्म दिया कि हयाबन्द की उदासी का कारण मालूम करो और मुझे फौरन बताओ।

जब हयाबन्द को नौकरों ने पूछा तो उसने जवाब दिया मेरे बाप को कह दो कि वह मेरी शादी करे, और शादी उस जगह करे जहां पर मैं बता दूं।

जब बाप ने सुना कि मेरा बेटा शादी करना चाहता है तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। और कहा कि मेरे बेटे से पूछो वह कहां पर और किस के साथ शादी करना चाहता है वह यह जानने के लिये बड़ा बेचैन हुआ।

हयाबन्द ने बाप को शहर का नाम बताया और कहा कि उस सुन्दरी के दरवाजे पर मैंने मोहर लगा रखी है।

ख्वाजा नूर प्रात: काल की प्रतीक्षा करने लगा। पौ फटते वह घर से अल्लाह का नाम लेकर रवाना हो गया और उसी शहर में पहुँच गया। वहां दरवाजे पर अपने बेटे की लगाई हुई मोहर देखी और अन्दर घुस गया।

वहाँ पर लड़की ने और उसके मां बाप ने ख्वाजा नूर का नाम और आने का कारण पूछा। ख्वाजा नूर का नाम सुनकर वह बहुत खुश हुए और उसका बड़ा स्वागत किया। अच्छी तरह से उसका अतिथिसत्कार किया।

ख्वाजा नूर ने लड़की के बाप से कहा कि मेरा इकलौता बेटा है जिसको मैंने बड़े लाड प्यार से पाला है। मैं उसकी इच्छा से उसका विवाह करना चाहता हूँ और मैं अपने बेटे की शादी आप की बेटी से करना चाहता हूँ। इसलिए मैं आप से रिश्ता मांगने के लिए आया हूँ।

लड़की का बाप जिस का नाम खान था, ख्वाजा नूर के बेटे के साथ अपनी बेटी के विवाह की बात सुनकर अति प्रसन्न हुआ और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा उसने एक दम यह रिश्ता कबूल किया और शादी का शुभ दिन मुकर्रर हो गया।

ख्वाजा नूर बेटे की शादी तय करके प्रसन्न चित्त घर पहुंचा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
अपनी बीवी को बेटे की शादी का हाल बताया, वह बहुत खुश हुई। उसने बहू के लिए हर तरह के जेवर तैयार करवाये। मां और बाप फूले न समाते थे। उन्होंने अपने सारे रिश्तादारों को खबर भेज दी कि हयाबन्द की शादी निश्चित हो गई है।

मगर भाग्य के लिखे को कौन मिटा सकता है। हर खुशी के साथ गम भी होता है, विधाता का विधान ही ऐसा है। जितनी खुशी हयाबन्द के मां बाप और रिश्तेदारों को हुई, उतना ही गम व रशक उसके दो दूध भाइयों को हुआ। वह हयाबन्द की यह खुशी नहीं चाहते थे। लालच और कपट ने उनको घेर लिया। वह तरह २ की चालें सोचने लगे कि किस तरह हयाबन्द इस शादी में असफल हो जाये। आखिर उनको एक चाल सूझी। हयाबन्द की मां ने बेटे और रिश्तेदारों को पिलाने के लिए मीठा पेय बनवाया। हयाबन्द के दूध भाइयों ने एक बोतल में बेहोश हो जाने की दवाई बना दी और यह बोतल अपने साथ रखी। जब सब रिश्तेदार आ गये बरात चलने लगी यह भी बारात के साथ हो लिये। हयाबन्द की मां प्रसन्नचित और गाती झूमती बेटे की बारात के साथ चल रही थी। मीठा पेय साथ था, थोड़ी सी दूर चलकर हयाबन्द को प्यास लगी। और उसने दूध भाइयों से पानी मांगा। यह दोनों बहुत खुश हुए, क्योंकि उनकी चाल कामयाब हो गई, इन्होंने दूध में दवा मिला दी। ज्यों ही हयाबन्द ने यह पानी पिया वह बेहोश हो गया। इन दो के बगैर यह किसी को मालूम न था।

बारात लड़की वालों के घर पहुँच गई। दूल्हा बेहोश था। बारात को देखकर सब लोग खुश हुए। लड़की की मां दूल्हे का मुंह देखने के लिए गई। ज्यों ही उसने देखा दूल्हा बेहोश हो गया है और उसमें बोलने की शक्ति नहीं है तो उसके हाथों के तोते उड़ गये। यह पागल सी हो गई। उसने सोचा कि लड़के को मिरगी आ गई है। यह खबर चारों तरफ आग की तरह फैल गई। और दुल्हन ने भी यह खबर सुनीं। वह बहुत परेशान हो गई। मगर दुल्हन बहुत अकलमन्द थी। वह जान गई कि यह किसी की चाल है। उसने कहा कि पास ही एक चन्दन का बाग है अगर दुल्हे को

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
वहां पहुँचाया जाये और चन्दन का काठ उसके आगे जलाया जाये तो वह होश में आ जायेगा।

ख्वाजा नूर ने जब लड़के का यह हाल देखा तो वह हाथ मलने लगा। उसने कहा मैं अपने बेटे को अपने घर से सही-सलामत लाया था उसको यहां पहुँच कर क्या हुआ।

दुल्हा को चन्दन के बाग में पहुँचाया गया और उसके सामने चन्दन का काठ जलाया गया। उसके जलते ही हयाबन्द को होश आ गई।

दोनों दूध भाइयों की यह चाल विफल हो गई और अब वह दूसरी चाल सोचने लगे। बारातियों ने अच्छी तरह से खाना वगैरा खा लिया और दुल्हा दुल्हन को लेकर अपने शहर की तरफ रवाना हो गया। दुल्हन डोली में बैठ गई। चलते २ उनको एक जगह रात पड़ गई। इन दोनों दूध भाइयों ने हयाबन्द को कहा कि लड़की के मां बाप ने लड़की के बदले डोली में डाइन बिठा दी यह सुनकर हयाबन्द बहुत परेशान हुआ। रात को जब जंगल में खेमा डाला गया और सब सोने लगे तो पहाड़ पर ज्वाहिर चमकता था जो आग का शोला जैसा दिखाई दे रहा था। दूध भाइयों ने यह देखा कि हयाबन्द की बीवी लाल व ज्वाहिरात को पहचानती थी। वह डोली से बाहर निकली और पहाड़ पर जाकर लाल को ले आई। हयाबन्द के भाइयों ने यह देखा और हयाबन्द को कहा देखो यह डाइन है। पहाड़ पर मुरदा जल रहा था और यह उसको खा कर वापस आ गई। हयाबन्द ने भी उसको जाते हुए देखा था। हयाबन्द ने सोचा कि वह दुल्हन को वहीं छोड़े या वापस कर दे मगर ऐसा करना ठीक न समझा, वह उसको घर ले आया।

ज्यों ही बारात वापस घर पहुंचने लगी हयाबन्द के दोनों दूध भाई पहले ही उसकी मां के पास पहुँच गये और उसको भी कहा कि लड़की वालों ने लड़की के बदले डोली में "डाइन" को बिठा दिया है और रास्ते का हाल भी कह सुनाया। हयाबन्द की मां जार २ रोने लगी, उसकी सारी तमन्नाओं और आशाओं पर पानी फिर गया वह बड़े सोच में पड़ गई। इकलौता बेटा था उस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जीवन खराब हो गया। अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों में हंसी हो गई। अन्त में दुल्हन घर पहुँच गई और उस को कमरे में रखा गया।

हयाबन्द की मां सोचने लगी कि मैं बहू का मुंह देखूं तो कैसे अगर मैं उसके कमरे में जाऊं तो वह मुझे खा जायेगी। दूध भाइयों ने उसको कहा तुम चिन्ता मत करो, हम तुम्हारी कमर में रस्सी बांध देते हैं। अगर वह तुमको खाने के लिए आयेगी तो हम रस्सी को खींच लेंगे और तुम को नीचे ले आयेंगे। सास बहू के पास जाती है। जब वह कमरे में घुस जाती है तो बहू सास को सलाम करने के लिए खड़ी हो जाती है। जैसे पहले बताया जा चुका है कि उस का और उसकी कमीज़ का दामन सोने का था और छोटे २ घुंघरुओं की आवाज होती थी। जब वह खड़ी हुई तो दामन की आवाज हुई यह आवाज सुनकर सास चीख पड़ी "हाय डाइन ने खा लिया।" दूध भाइयों ने रस्सी खींच ली और हयाबन्द की मां को नीचे घसीट लिया। सारे महल्ले मैं यह खबर आग की तरह फैल गई कि ख्वाजानूर की बहू डाइन है। कोई उनके मकान की तरफ न चलता था। सब डरते थे।

कुछ समय के बाद जब हयाबन्द तंग हो गया। उसकी हिम्मत बीबी के कमरे में जाने की न पड़ती थी। उसने बाप से कहा कि मुझे कुछ माल दे दो मैं व्यापार के लिए जाऊंगा। बाप ने बेटे को माल दिया और वह व्यापार के लिए चल पड़ा। जब वह धरत पर पहुंचा, वहां पर उससे उन्होंने चीजों की तफसील मांगी। हयाबन्द ने जेब में हाथ डाला वहां पर तफसील न थी। वह तफसील उसके उसी कोट की जेब में थी, जो कोट दुल्हन के कमरे में था। हयाबन्द वापस आ गया और अपनी बीबी का दरवाजा खटखटाया।

दाई दरवाजे पर आकर पूछने लगी तुम कौन हो।

हयाबन्द ने कहा मैं हयाबन्द हूं दरवाजा खोलो।

दाई ने जवाब दिया कि हमारे पास क्या सबूत है कि तुम हयाबन्द हो।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu
हयाबन्द ने वह अंगूठी दी जो उसकी सास ने शादी पर पहनाई थी।

दाई ने अंगूठी पहचानी और दरवाजा खोल दिया। हयाबन्द अन्दर आ गया। उसने अपनी बीबी को देखा और उसे पता लगा कि मेरी बीबी डाइन नहीं इन्सान है। यह बहुत दिन अपनी बीबी के पास रहा आखिर इसे याद आ गया कि मैंने माल रखा है और मुझे व्यापार के लिए जाना है।

इसने देखा कि उसका माल उसके दोनों दूध भाई ले गये हैं। वह ढूंढते २ उसी शहर में पहुँच गया जहां पर वह माल बेचने गये थे। हयाबन्द ने उनको माल बेचते हुए पकड़ लिया। बहुत सख्त झगड़ा हुआ। उन्होंने कहा माल तुम्हारा नहीं हमारा है। इनका आपस में इतना झगड़ा हुआ कि बात वहां के बादशाह तक पहुंच गई। बादशाह ने पूछताछ करने के बिना ही हयाबन्द को कैद कर लिया।

दैववश एक दिन एक पागल चिल्लाता हुआ जा रहा था और कहता जाता था कि जिसका माल है उसको बादशाह ने कैद में बन्द कर रखा है और जिनका माल नहीं है वह माल बेच कर ऐश मना रहे हैं। जब यह आवाज बादशाह ने सुनी तो वह दुविधा में पड़ गया उसने इस मामले की अच्छी तरह से पूछताछ की और सचाई मालूम होने के बाद हयाबन्द को रिहा कर दिया और दूध भाइयों को जेल में डाल दिया।

इधर ख्वाजा नूर और उसकी बीबी आपस में सलाह करते हैं। कि यह डाइन कैसे घर से चली जायेगी। वह अपने भाग्य को कोस रहे थे। दुल्हन कमरे में बन्द थी। और उन्हों ने इसे वापस भेजने की सलाह की।

एक दिन सास ने बहू को आवाज दी कि नीचे उतर आओ, तुम्हारी मां के घर से मेहमान आये हैं।

जब वहू ने सास की आवाज़ सुनी तो वह जान गई वह उसे खतम करना चाहते हैं। उसने दाई से कहा इस वक्त समय है कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मैं इस दुःख से छुटकारा पाऊं पर तुम्हें उस खुदा की कसम है जिस ने तुम को पैदा किया है। मेरे मां बाप को मेरी मुसीबत के बारे में कुछ न बताना। सास की आवाज सुन कर उसने गाते २ उस को जवाब दिया कि अगर मैं नीचे उतरूंगी तो सारी धरती कांप उठेगी। सारा मुहल्ला भाग जायेगा।

हयाबन्द की मां अपनी बहू की मधुर आवज सुनकर आश्चर्य-चकित हो गई। उसका चलना देख कर दंग रह गई और उसकी बातें सुनकर खुश हुई। वह समझ गई कि यह सब झूठ था चाल थी। उसकी बहू डाइन नहीं मनुष्य है। उसने बहू को गले से लगाया, प्यार किया और बार बार चूमने लगी। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह दौड़ती हुई ख्वाजा नूर के पास चली गई और उसे सारा हाल सुनाया। ख्वाजा नूर खुशी से झूम उठा। सारे मुहल्ले को खबर हुई कि ख्वाजा नूर की बहू डाइन नहीं है।

इधर अपना माल लेकर हयाबन्द भी घर पहुँच गया। उसने जब यह सारा हाल सुना तो वह भी बहुत खुश हुआ और ख्वाजा नूर को दूध भाइयों की सारी चालबाजी और धोखेबाजी का पता लगा। इस दिन से वह सारे सुख और शान्ति का जीवन बसर करने लगे।

—जया दर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation